वर्ष 2002 के दौरान भारत के समुद्री मछली अवतरण के प्रमुख घटक:

बेलापत्ती पख्माली अवतरण के घटक

- मसाला 23%
- चीन 15%
- जापान 11%
- अमेरिका 8%
- सामान्य 4%
- अन्य 3%

तलमज़ी पख्माली अवतरण के प्रमुख घटक

- मसाला 17%
- चीन 9%
- जापान 7%
- अमेरिका 6%
- सामान्य 4%
- अन्य 3%

क्रेस्टशियन अवतरण के प्रमुख घटक

- मसाला 49%
- सामान्य 32%
- अमेरिका 11%

मोलस्क अवतरण के प्रमुख घटक

- मसाला 97%
- अन्य 2%
मत्स्यगंधा

2002

केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्
डाक संख्या 1603, टटा पुरम डाक,
कोच्चिन 682 014, भारत
अप्रैल 2003
प्रबंध-संपादक
ढौ मोहन जोसफ रोड्सिल
निदेशक

संपादकीय मंडल
ढौ एम. श्रीनाथ
श्री एम. जाफर खान
ढौ नारायण कुमार
ढौ चन्द्रकॉत गंगल तायड़े
श्री चालसे एम.का
श्री के.के. बालसुब्रमण्यन
श्री शुभ्रामण्य भट
श्रीमती श्रीला पी.जे.

सहयोग
ई.के. उमा
ईं. श्रीशाकला
सी.ए. लीला

मुद्रण: अप्रैल-2003
प्राक्कथन

मार्गवाणधा का यह लीलरा अंक पाठकों के समग्र राखते हुए में अयांत अलमत का अनुभव कर रहा है। मार्गवाणधा साहित्य का हिंदी में मार्गवाणधा का विविधता करने का हमारा विशेष प्रश्न है। यह विविध प्रमाण कामयाब रहे यह मेरी आकांक्षा है। यह अंक में हमारे पक्ष का विषय है खाद तुल्या में मार्गवाणधा।

स्वाभाविकता भारत के तूफान के क्षेत्र में सूर्य और उष्ण तापमान का अनुभव है जिसका नियंत्रण भी हो रहा है। तूफान में खाद का उपयोग कर रहे हैं जिसमें आधुनिक उपकरणों में भी विशाल है। वाणधा पाठ से स्वयं परिवर्तन की ओर का यह प्रयास साफ स्थिर है लेकिन हमारा औसत खाद उपन्यास और दृष्टि व्यविध उपलब्धता में अबाधित है। अतिरिक्त खाद होने पर भी प्रत्येक व्यक्ति की जरूरत और पक्षण सुलझा नहीं आता है। मानव संसार निवास का सब से बड़ा खतरा उपयोग कार्य और उस से परिलक्षित के बुध्धि विकास में होनेवाली कमी मानी गई है। इतनी मार्ग खाद और पक्षण सुलझा पर कितने जानेवाला निवेश प्रत्येक देश का सब से सरलतम निवेश होता है। आज की बात है कि लोगों की जीवन न्यायित निवास और पक्षण सुलझा का साथ साथ अधिकारिक उपयोग को लक्षित करने उत्पन्न करने वाली और वाणधा की ओर गुज़र होता है। इस संसर्ग में अगले सर्वे बंदूक संख्या उपयोग वालों के साथ देश के करोड़ों लोगों को जीवनपूर्वक का मार्ग प्रदान करने के अतिरिक्त, रक्षक फर्जू, कृप्ष उपयोग में मार्गवाणधा की विचारणवाण प्रोचान्ति है।

इस उद्यम के साथ इस में जोड़े गए 16 लोगों में विविध आयामों से भारतीय मार्गवाणधा का प्रतिनिधित्र हुआ है जिसमें से इस क्षेत्र को संक्षीतें और विचारित विद्वानों हुई है। इस अंक का अयांत रोचक बनाने के लिए योगदान हेतु सारे लेखकों के प्रति मेरी हार्दिक कृतज्ञता है।

कोचीन
अप्रैल 2003

(मोहन जोशी, मोहन जोशी)
अनुक्रमणिका

1. महसूलियों - एक समय परिचितत
2. भारतीय मालिकाकेला सुनहरा और जनमुक्ति का आधार
3. महाभारत संचालन - मालिकाकेला के विकास का समन्वय आधार
4. पश्चिमन भागी ललन
5. आनुविक अभिलेखित - मालिकाकेला मे खाद्य सुरक्षा को प्रत्यक्ष
6. भारत की महाचिन्ता मालिकाकेला संस्कृति
7. दसवीं वंच बाबीय सोजना के दौरान भारत में समुद्री मालिकाकेला के विकास के लिे कुछ नीति विकल्प
8. समुद्री मालिकाकेला उत्पादन में अयश्री राज्य मुखरात में मालिकाकेला के विकास के लिे सुझाव
9. प्रदीप साधने में पाई जाने वाली कुछ सामान्य वंशावली तथा उपचार
10. समुद्री रेखाएं - खाद्य सुरक्षा के लिे एक मूल्यवान संबंध
11. मछली मालव स्वास्थ्य के लिे आदर खाद्य
12. पत्रकारी मालिकाकेला संस्कृति अा आदर (गुजरात के प्रशंसा में)
13. हुसैन उद्घाटन और खाद्य सुरक्षा
14. महाशाक्ति जैव संसाधनों का मालव हिम में उपयोग
15. महत्व खाद्यों की सुरक्षा के लिे आदर जीवन जैव
16. महाराज में लघु अर्थात मालिकाकेला
17. मछलियों में पोषण सुरक्षा
भूमिका

जलीय क्षेत्र, जो पृथ्वी का 70% होता है, प्राकृतिक पर्यावरण का भाग है और इसमें होलागत पियाम्भा, संक्रांता और गहनता में जीवन विविधता है। कई जलीय क्षेत्रों में, विविधताएं एवं कस्टमिजेशन को विविधता, उद्यान जैवक्षेत्र को दृष्टि में समुद्र जल क्षेत्र का समानांतर रूप है और फुल्लिया के माध्यमों को सामाजिक-सांस्कृतिक और आर्थिक व्यवस्था को दृष्टि से भी यह क्षेत्र प्रमुख है।

इस क्षेत्र के नियंत्रण प्रभाव के गतिविधियों स्वभाव के बजाए और स्थायित्व जीवनार्थ की दृष्टि से यह एक अविश्वसनीय क्षेत्र है। लेकिन भौतिक/पौराणिक तथा मानसिक कारणों से इस क्षेत्र के विशेष विषय आलोचन अधिकतम संकटों का समाप्त कर सकते हैं। इस क्षेत्र की जीव विविधता अवस्तित मिश्रित और पर्यावरण के चीजें दृष्टि में दिखाई देती है। अंतरमाध्यम (inter tidal) भागों से विविध भागों तक, प्रवासी ताल से पंढर प्रवासी गंगी सागर तक, भूवित्त भाग से उष्णकटिबंधीय भाग तक, परिवर्तन समुद्र से खुले महासागर तक के विशिष्ट पर्यावरणों में पक्ष मछलियों और कच्चे मछलियों को जोड़कर वार्षिक प्रमुख कई मछलियों होता है। खुल्लिया क्षेत्र में जीवन के अनुसार समानांतर कल्पनाशील हैं और कच्चे मछलियों का केंद्रित व्यक्तित्व कई मछलियों मुख्य है। फिन्ल्यान्ड क्षेत्र में जीवन के अनुसार समानांतर कल्पनाशील हैं और कच्चे मछलियों का केंद्रित व्यक्तित्व कई मछलियों मुख्य है।

मानव सम्बन्ध शुरू होते ही प्राकृतिक रीति की मछली पकड़ भी शुरू हुई, पहले, जीवन मामले के लिए यह रीति शुरू हुई और बाद में वासार यथासंगत उद्योग के रूप में दृष्टि हुए हर काल के मानव क्षेत्र में रोजगार के अवसर जताने का सोता बन गया। फिर भी 2000 वर्ष से पहले ही मछली पकड़ एक घरेलू उद्योग बन गया। इस जलीय संपादन का, केवल जलीय एवं भौतिक जीवों का नहीं, बल्कि परिसंपर्कों को कोट और मानव समाज की खाता जुड़ा हुआ है और यह गरीबी हटाने, प्रोटीन कमी पिंडाने तथा कई तटीय देशों की आर्थिकता किरायेदार देशों में प्रमुख भाव निभाता है। प्राकृतिक मछली संपदाओं के लिए बढ़ती हुई मांग की वजह से कई विकसित और विकसितशील देशों में कारोबार और संबंध समूहों आवासों पर निर्भरता असर पड़ जाता है। यह जीवन मछली संपदाओं के लिए एक भाषा भी है क्योंकि इन देशों में प्राकृतिक संपदाओं की निष्पादन कामयाब रहने में आवास - आर्थिकता के बीच का सम्बन्ध विनिमय का विचार बन गया है। समूही जीव विविधता के विवाह आंशिक के परिवर्तक और संबंधों की सुरक्षा पर यान्त्रिक उद्योगों जैसे जलीय क्षेत्रों में सम्बन्ध, समूही संबंध, विविधता और वेतनक्रमों से छोटे देवनाथी विविधता वस्तुओं के प्रतिकृत संपदाओं पर नियंत्रण किए बिना प्रयास करना अनुचित है। समूही ‘मछली’ के अपूर्वतम उल्लंघन को नीतिक, संवैधानिक, प्रत्यय रूप से आर्थिक और परंपरा रूप से आर्थिक रूपों से विकसित किया जा सकता है। अभिसूचक मछलियों मानव आहार बन जाता है और कई अन्य जीवों और पक्षियों की खाता जुड़ा हुआ है, कई मछलियों से पहले तेल, रसायनिक मधुर जैसे पक्षियों बनाये जाते हैं। कुछ पकड़ को मछलियों पालनशील हैं और कुछ केवल मनोरंजन के रूप में जलजीवनशाला में पालन की जातीय
महत्वपूर्ण है। महत्वपूर्ण है, सांकेतिक, पारंपरिक, ऐतिहासिक, क्रियात्मक, संदर्भवात्मक, स्वस्थ्य, पत्रिका, अध्ययन, सामान्य, राजनैतिक और आधिक दृष्टि से महत्वपूर्ण संपादन है।

धार्मिक

भारतीय पुराण में मक्का या ‘मक्का’ (संस्कृत में) प्राचीन विश्व का अवतार माना जाता है। प्राचीन विश्व में, जो एक मक्का लोक का दुर्ग था और जिसमें महाभारत के कई बहुत राजवंशों की स्थानिकता और अपनी संस्कृति के आधारपूर्व बच्चों का संबंध किया है। प्राचीन काल में महत्वपूर्ण मक्का को लक्ष्य करते हुए मुसलमानों की पीढ़ियों को जानती थी। प्राचीन जीवन प्रावस्था ने अपने मक्का देशों में कहा ‘मेकर अनुमान करते हुए तुम्हारे लोगों को माने के महामहोपाध्याय कहा। इसी प्रकार मक्का को कई सामाजिकों के निषादों में और कई राजस्व/विवाहों/राजनीतिक, सांस्कृतिक और धार्मिक संगठनों के भी निषादों में चिह्नित किया गया है।

सांस्कृतिक

आज के शोध के रूप में समूह पर निर्भरता मानव समय के आरंभ से ही शुरु हुई है। और महत्वपूर्ण संस्कृति का मुख्य अंतर है और इसे तत्वों से आगाम से पहले या तत्वों के महत्वपूर्ण है। सांस्कृतिक में महत्वपूर्ण विधानों को लोगों को जीवन रोध और संस्कृति में समुदाय संस्कृति का मुख्य तथ्य है। उनकी संस्कृति, विवाह, तोताचार, विवाह, व्यवहार, स्वभाव और तत्त्व जीवन अर्थव्यवस्था, इन जीवन अर्थव्यवस्था और इन मौलिक उत्पादों के प्रभाव अत्यधिक प्यार करता है, क्योंकि भी उनके विवाहों और संस्कृति में सांस्कृतिक परिवर्तन, धार्मिक एवं समुदाय धार्मिक परिवार हो जाए लेकिन मूल भाव और रोकियों आम मक्का के लोकार्थ पर आधारित होने। तत्त्व समय और सामाजिक अवधारणाओं और मुसलमानों के लोक में अस्तित्व एवं विवरण प्रकार की पुराण कहाँ, कल्याण कहाँ एवं ‘महत्वपूर्ण संस्कृति’ प्रचरित है। अतिरिक्त आर्य, विरूप, रंग और पृथ्वी और भारत रूप में समाज में आगे बढ़ने वाले देशों का उपस्थिति की जिम्मेदारी, उन्हें व्यक्तिगत सुधिकार, मस्तिष्क के स्वरीय से आकर में समाज में व्यक्तिगत पाठ/धार्मिक लिखित लिखि जाता या समाज के प्रतीक में जाते हैं और इस दृष्टिकोण का प्रतीक जाता है और इसे सांस्कृतिकों के प्रतीक ताज्जुब के रूप में भी माना जाता है।

ऐतिहासिक

मलिकों का इतिहास और रहस्यों के समय (384-327 ईस्वी) से हुआ है। उन्होंने मक्का को संस्थान, स्वभाव, व्यवसाय, विवाह, मस्तिष्क आदि पर सुनाम सी, जो बाद में डरकुल सही देखी गई थी; लेकिन महत्वपूर्ण के वां बाद रही सुनिया दोहाओं स्वरूप थी। सोलहवीं सदी के भाषा में केन्द्र, रॉम्ब्रेट, साहित्यात्मक और अनुभव के मालिकों ने मलिकों के लिए उत्तेजक कराए कहाँ को प्रकाशित किया, क्योंकि बाद में इस क्षेत्र में आदेश हुए लजित, रहस्य, एकता, क्षेत्रा, लायकिता, व्यक्ति, संसार, मन और तेजी जैसे महत्व के लिए मलिकों की सहायता में जो अधारभूत योगदान दिया है, उन अपाध्युत मलिकों की विवाहों के कहां लिखा गया और परामर्शवार्तक सूत्र का मक्का विवाह में अनेक नई आदेशों भी जोड़ी गई। भारत में 17-19 वीं सदी के दौरान ब्लॉक, एसेल, इमिटेशन, डे व वेबर व व्यक्तियों द्वारा किए गए कहां से मलिकों का क्षेत्र समृद्ध हो गया।

बीसवीं सदी से लेकर भेंट (1920-50), मिश्र, नायर, सेल्युस, मेंसन, तत्वार्थ और अन्य महत्वों द्वारा समग्र सम्पादन पर मक्का व्यक्तियों द्वारा कई योगदान दिए गए।
अभारविवाहन/जीवविवाहन/स्वभाव

मछली के शरीर का आकार एवं संरचना पानी के नीचे जीने के लिए अनुकूल है। मछली वालस्थिति से सुवाही आकार के शरीर, तकलीफ़ आकार और पानी में घुसने से सहायक कण्ठ के रूप में तैनात करती है। फ़ुलक्त प्रदान करने लायक विस्तृत पुष्च पक्ष बाला एक जीत है। अन्य पक्ष जैसे पृथ्वी पक्ष, मूली पक्ष और युनस पक्ष मछली की गति स्थापना करने में और गति रोकने में सहायक होते हैं। मछली के शरीर के विभिन्न आकार होते हैं जैसे पाषाण भाग वा हुआ, पृथ्वी-प्रदीप भाग जिन में तिलकन कार्य या कंधे जैसे हिलुकाम्य से आता है और पाषाण स्थान में भांड़ाता और बाह्याओं का पता लगाने और तुलना एवं अन्य पक्षों के लिए विभिन्न अंश हैं। प्राणविधु (Olfactory organs) पानी में होने वाले प्राणविधुक पक्ष को झूठा और खाद्य या अन्य मछलियों पर पता लगाने में सहायक होते हैं।

अफ़कान्त मछलियों की पाषाण भाग में सिख्य कलोम को सहायता से सींस लेने वाले क्रुड़ मछली जानियों फ़ेन्ड वो सींस लेने है। मछली के अंदर स्थित विष का वेतन मछली को वांछित गहराई में तैनात होता है। पड़ों तथा शरीर के अन्य भागों में सिख्य कंठ शुभता: अड़कता के लिए है और अभार भाग को आक्रमण रोकने या आक्रमण के रेखाकार के रूप में भी इन कंठों को उपयुक्त किया जाता है। क्रुड़ मछलियों में कंठों के साथ विष ग्यार्ह भी होता है जिससे आक्रमण और भी भांड़ाता होता है।

कंठ विकलन का दौरान होता है लेकिन विष ग्यार्ह अगर हो तो रेखा या बड़े कंठों के संचयन के समान होता है और पार्व में स्थित भी है। विष को तोकता विभिन्न जानियों मछलियों में विभिन्न प्रकार प्राप्त होती है।

क्रुड़ मछलियों में (फ़ैक, पाषाण फिसा और अधिकांश टोड़ फिसा) मंदू के अंदर गृहामृत्युस्मान कैसे विस्थापित आक्रोता होता है। इतरभित्र दे, स्टेन्ट, मूलरियां और हलहिट की जरूरत नहीं इतरभित्र ट्रांज़ॉनचक मछलियों में विभिन्न तोड़ता में विश्वय विभिन्न उपद्धत करने का क्रम है। कई मछलियों में मानव को भी मारने लायक विज्ञान का उपयोग करने का क्रम है। पूर्ण रूप से या अन्य रूप से विकसित ये हलहिट क्रं विभिन्न आकार के होते हैं। बहुकोणियाँ (hexagonal) ट्रांज़ॉनचों या पेटों से बनाए गए इनमें तीव्रता होती है। ये अंग मछली नाली के अनुसार शरीर के विभिन्न भागों में विचित्र हैं। फिर भी साधारणतः ये अंग पुष्च को ब्रांचल पेसी (branchial muscle) या पार्वतीय पेसी (lateral muscle) से खुदा है। ये मछलियों शरू को मारने या आशक करने के लिए इन अंगों को उपयुक्त करती है। कई जाति मछलियों में ट्रांज़ॉन के ग्रंथ या अंग एवं क्रं शरीर के निम्न भाग में विचित्र होते हैं। क्रुड़ ग्रंथ और अंग छाप मछलियों में शरू में विचित्र करने के लिए भी उपयुक्त किया जाता है। कई अभार मछलियों (bony fishes) हाँ के देवे, पाषाण, कंठ, कंठों को आक्रमण करने के लिए भी उपयुक्त किया जाता है।

अभार लेने के स्वभाव के अनुसार मुंह और इसके आसपास के अंगों में भांड़ाता होता है। कई मछलियों कंठ जीव या (gill rakers) की सहायता से पानी की फिल्टरिंग करने पर्यन्त जीवों को झूठा है। लेकिन क्रुड़ चालाक मछलियों (उन्नयन: सुरा) बड़े खुदाये (serrated) शंतों से खाद्य मछली को दुकान देकर के खानी है। इसके अतिरिक्त पानी के उपरी तत्तंतर, निलाच्छेद भाग की मछलियों में खाने की सुविधा के अनुसार मुंह और अन्य आहार-अंग परिवर्तित या विकसित है। ग्रंथ और अंग मछलियों में पक्ष वा शरीर के अंग परिवर्तित होकर खाद्य जीवों को आक्रमित
करने हेतु प्रकाश अंग बन जाते हैं।

अधिकांश समस्ती मछलियों में पुल्साइडन रित्वियों अलग अलग होती हैं; अलग अलग लिंग बाली मछलियों के उपरोक्तियों; एक अंडनाल या एक मौसम में कई बार अंडनाल या पूरा वर्ष में अंडनाल; अंडियों को संख्या शोधी संख्या से दस लाखों तक पदलना; कुछ मछलियों में आत्मचिक
नियोजन होना लेकिन कई मछलियों अंडी और बाली को
बाली और की पानी में ही छोटे देव नहीं नियोजन संख्या होना आदि देशी जाती है। कुछ मछली जातियों में, माता मछली
या पिता मछली द्वारा अंडी/पूयों की परिखा की जाती है
और कुछ अंद मछलियों में निकल माता या पिता मछली एक घाती (pouch) में या मुख कोट (oral pouch) में अंडों/पूयों को संग्रहित करती है (स्लाम/pipe fish);
कुछ मछलियों में (समुद्री स्लामी) दो मधुमेयों तक इस
tरह संग्रहित किया जाता है। अंडों के स्पेक्ट्रम का अवधि
(hatching time) एक से कई दिनों तक बदलती रहती है।
मछलियों का अंडनाल टक्कर किया उचित एवं बिल्गित होता
है; कुछ मछलियों समूह में मौजूद नानी की और लंबा प्रकाश
करती है और कुछ मछली पानी से समुद्र की ओर भी। कई
वेलायती मछलियों बुंदब काम कर सकते हैं या जाति तक आते हैं।
कुछ गाढ़े बहुत मछलियों (लालटें मछली) प्रदका अंग
से प्रकाश तरायक जोड़ी को आकर किया है। प्रवाह
भिन्नों को मछलियों अपने सर्द/पाष के दीर्घ 367 रंग से
साथ को आकर किया है।

कई वेलायती और कुछ तत्त्वर क्षेत्री मछलियों आहार
से प्रकाश के लिए छोटे बुंद से बड़े बड़े बुंद काम कर
एकत्रित करती हैं। पक्षीमणीय तथा नींवा विशाली घाटी के
अनुसार कुछ मछलियों नींवे से ऊपर दिखा तक या
ऊपर से नींवे की ओर प्रकाश करती है बफिक अन्य कुछ
मछलियों पक्षीमणीय और मौसमिक घाटी और नींवा
विशाली आकस्मिक घाटी यूं की पृष्ठ के लिए या पक्षीमणीय घाटी
अवकाशों से बचने के लिए तथा जीवन या विस्तार करते
में रेखाय (horizontal) प्रकाश करती हैं।

क्रियक प्रमुखता
मछलियों को प्रकाश कोटेटा (Plyum chordata)
के अंदर सानु (jawed) जनवी कोटेटा के रूप से
वर्णित किया जाता है। क्रियक पूर्व से ये त्वसीयों का
प्रमुखता (Onathostomata superclass) में केंद्री मछली
के अंदर उप प्रहलाद यूनिटा के अंदर आती है। मछलियों
(grade) की दो उप जनवी (subgrades) और चार जनवी
(class) होते हैं। मछली प्रजाति और क्रम परिवार प्रकाश
अनुवादी (Phyletic) शाखाएं हैं उपसमुद्री
(Elasmobranchi) और टीलोस्टोमी (Teleostomi).
इस क्षेत्र के अधिकांश विषय इस बात पर सहमत है कि
कोटेटा की पूर्व मर्यादा शूलियों (Echinoderms) से
आये हुए हैं। लगभग 400 डूंगल या घायल डॉरोनी
(Devanian) वर्ष में हैगीन (hag fish) और लगी
(lampreys) जैसे, हनुमित मछलियों से मछली जातियों
पूर्व पर है। मछलियों की सभी जीवित जातियों को कुल
445 कुटुंबियों और लगभग 21650 वर्ग में वर्णित किया
जाता है जिनका 61% समुद्र से पशुकं है।

उपश्रेणी (उपश्रेण) इलामोब्रांकियोंके में वर्तमा
व्यक्तिकोडीसीं और वर्तमा कोडिकिस्टी आते हैं; पहले क्रमांके
में, सिर और अंग नेगला (shoulder girdle) में व्यवहार
अस्तित्व परेड (dermal bony plates) चौड़ा है; सिर
कोटेट (head shield) ट्रेकू विशाल के साथ चालामण
कोटेट किया गया है; गलेम काल (gill chamber) आय
भाग की ओर विन्दुक होकर धारांक भाग में प्रकाश
(opercula) से आकर है, पाँच कालेम गलेम (gill arches),
केनेक नाइको (neural) और हृदय कालों के साथ,
पूर्व पाष (anal fin) है, हिसरमाल्टिया (diphycephal)
क्या निम्न (heteroceral) पुंछ है ते। इसकी नींव
आईडिग पहाड़ की गई है और सभी महाकाल क्षेत्र के
अंदर से अंदर तक और विसदिक वर्तमा के अंदर में
ही विश्लेष हो गई है। कोडिकिस्टी वर्तमा (Condichthyes
class) उपश्रेष्ठक कलाते का साथ, संकल्पनात्मक ज्ञातंगलस्मृति (calcified), खींची सीट (sutures) रहता है, इस से दीर्घ निकला गया है; नासिकस अर्थ दोनों भागों में, हवा बेला नहीं; आंत सरलता कापड़ (spiral valve) के साथ; आंतरिक विवेदन, समुद्रद (encapsulated) घूम; रक्त में अधिक मात्रा में यूरीया दिखाया पड़ता है। इस कलाते पुरुषत: पौर्णाम (evolution) की दो शाखाएँ होती हैं और इन्हें होलोसेंकला (Holocephali) और एलास्मोब्राइलो (Elasmobranchi) नामक दो उपकाली (Subclass) में पता लगाया गया है। इन दोनों उपकालियों में 6 कोटियाँ (orders), 25 कुटुंब (families); 151 जनजाति (genera) और 793 गृहजाति (species) उपलब्ध हैं। उपकाली होलोसेंकले में अर्पोथूरा (fossilized) तथा जीवन (जीवनचक्कल के अंत से हाल हो जाकर) मानवीय समर्पित है और इसमें कलों का आवरण और दोनों भागों में कलों द्वारा (होलोसेंकला) होते हैं; स्वास्थ्य (spiracle) नहीं है; अवसर (cloaca) और ऊर्जा (stomach) नहीं है, नाग स्थान; पूर्ण तीन से आदिगमी (angi) (clamping organ) मौजूद है। उपकाल सिम्बोस्ट्रेम के अंतर आते बाले वोटरमान कोट में तीन कुटुंबों के अंतर लगभग 30 जाति के तीन: वंश की बायाँकृत किया गया है। सिम्बोस्ट्रेम, कालावर्गित, सिम्बोस्ट्रेम, और स्क्वालिंड अत्यंत प्रमुख कुटुंब हैं। जूनिया की सबसे बड़ी ब्रह्म तिमि सुर रिकोडोंटन टाइपना, यह उपकाल का सदस्य है और रिकोडोंटन में कुटुंब के अंतर आती है। यह पूर्वक खाने बाली और अंतिक मुख (terminal mouth) बाला मल्ली है। अपाराक के रूप में इस मक्की का वह कलों द्वारा और लघु कलों कर्मिणी भी है। अधाइयात (superorder) का विपिन पठेस्ट्रेमा में रे और स्क्यूट कालाते हैं और 9 कुटुंबों के अंतर 51 जाति और 424 जातियों में वर्गीकृत किया गया है। प्रिस्टिन, रिकोडोंटन, स्क्वालिटिट, डायनाइटिट, मित्रोमोडीटिन्ड और मॉयुटिन्ड सबसे प्रमुख कुटुंब है।

सामग्री: टेलिस्ट्रोम पर कुुम्ब: दो कलाता याने एकनर्द्र: और आकाशम में वर्तमान किया जाता है। एकनर्द्र: कलात अथवा आकाशवास अपयात के समुद्री संस्थानों में पाए जाते हैं और कलामाडियों को एकनर्द्र: को क्लेयुम मात्रा जाता है। आकाशबंधन वालाहक अधिक मान्यता है। त्यूट कलाकार (sutured skull), हड़प्पे में सुपकुल दोनों, दोनों भागों में नासाफार, हवा बेला या फेफड़ा, असाधारण आंत सरलता कापड़; आंतरिक निकलन अभूव, रक्त में निम्न सादृश्य में यूरीया इस मामलों की विशेषताएँ हैं। इस कलात के वन्य उपकालों में विविधता किया जा सकता है। ये है हर्मन्स्टी, करोडसेंटिएज, ब्राकियोटीरिया और एक्स्ट्रोटीरिया। डिडल्पस्ट्री के अंतर अस्ट्रॉलाइन लगिस (कुटुंब : सराटोडोट्रिड), साउथ अमेरिकन लगिस (कुटुंब: लीविया०सिन्डिस) और अफ्रिकन लगिस (कुटुंब: ब्रोटोट्रिड) सम्बन्धित है। उपकलास कारोडोट्रिएज के एक जीवन समूह, जो है वर्ण आंतिक में विशेषता पहने बाला लाटोमरिया कीजुकुरे (1.8 मी लंबाई) को छोड़कर सबसे सदस्यों पर जीवनमयी से जानकारी प्राप्त हुई है। उपकलास कारोडोट्रिएज की एक्स्ट्रोटीरिया कीजुकुरे वर्ण में ही आता है जिस का एक ही कुटुंब याने पालिदोट्रिड होता है और 11 विश्वात्मा मीटा पानी जातियों के अत्यंत अधिकार जानकारी जीवनमयी से प्राप्त हुई है।

सम्मन कारोडोट्रिएज का सबसे प्रमुख और विश्वसंगत कुटुंब पालिदोट्रिस्ट उपकलास एक्स्ट्रोटीरिया के अंतर आता है। पालिदोट्रिस्ट का जाति 35 विश्वात्मा क्रमों और 409 कुटुंबों के अंतर रहता गई है। समुद्र से विशेषत जानवर आस्थित मान्यता की आंतों और पालिदोट्रिस्ट क्रमों, ज्ञानिकों, ज्ञानिकों, एवंजेलिकों, फ्लूजरिकों, साहित्यिकों, पौधों के अंतर आती है। आंतों और पालिदोट्रिस्ट सबसे अधिक विश्वसंगत जाति और सबसे व्यापक आंतर धाका जाता है और इसके अंतर 150 कुटुंब, लघुभाग 1400 वंश और 7800 जातियों होती हैं।

पर्यावरणिक

समुद्री मानवीय समुद्र जल क्षेत्र से संबंधित होने का
वजह से उनके समूह जलने, प्रवाह, समुद्रतट, आहार, अंडनन, बढ़नी, मूलता आदि पर भौतिक और रासायनिक स्थितियों और जीव वैज्ञानिक प्रकारों और आवश्यक/मौसमिक गतिकीय परिवर्तनों का प्रभाव पड़ जाता है और इस कारण से मछलियों की शक्ति और उत्पादन में उत्तर-दक्षिण भी होता है। जननी क्षेत्र की तापमान स्थिति से मछलियों को साधन करता, गति और उपयोगकर्ता प्रक्रियाओं में प्रभाव पड़ जाता है। इसके तापमान से बहुत अधिक तापमान से प्रभावित, अंडनन, उत्पादन, उत्पादन, उत्पादन, (incubation), और/या का बिकास क्या मछली जाति की बढ़तीं में परिवर्तन होता है और इस से उत्पादन, विरोध, खाद्य जीवों की प्रभाव पर भी प्रभाव होता है तापमान खाद के लिए मछलियों मौसमिक उपादन भी करती है। ताप-प्रभाव (thermodine) के परिवर्तन से पानी के नीचे से ऊपर की ओर मछली-प्रभाव होता है जिस के कारण बेलाबार प्राणियों पर अनुकुल प्रभाव हो जाने दस्त तथा संबंधित योग्य मछलियों निकालखान होने की सम्भावना है। पानी के प्रभाव में होने वाले मौसमिक परिवर्तन से अंडनन तथा से मछली के अंड/या/पक्ष/पाना मछली (fry) उपरी सतह के नदी/हाथ के तल में पहुँचते हैं जिस में मछलियों में मछली उत्पादन पर अनुकुल प्रभाव होता है, लेकिन कभी-कभी बढ़तीं के शक्त प्रभाव से मृत्यु तल से उपादित मछलियों निकाल जाने पर उत्पादक पर प्रभाव पड़ जाता है। तापमान में होने वाले परिवर्तन से अंडन की तत्वशालिता और मछली के प्रभाव नियन्त्रण पर प्रभाव पड़ता है गर्मी के मौसम में उच्च तापमान होने पर मछली/डिल, डिल्कों और किस्मों के नीचे से ऊपर की ओर होने वाले प्रभाव पर विकल्प भी करता है। मछलियों गर्मी में रहने वाले छोटे प्रणाम मछली से समान नहीं है और क्योंकी भौगोलिक स्थितियों से बड़ी संख्या है। अवश्य (upwelling) से अवस्थत जल (subsurface water), जो कम अवश्यक और ज्यादा पॉटिकलसे पृथक है, द्वीपमूलक संस्थान (hydrostatic balance) सामान्य संस्थान से बड़ा हो रहने वाले प्रभाव/अपसरी (divergent) तारी द्वारा उपर आता है। उत्पादन की गति और फैलाव मोसमी पटकों तथा अवस्थतीय (hydrodynamics) पर आधारित होगी। प्राकृतिक/विभिन्न उपादकों से समूद्र उत्पादित जल में मछलियों आहार के लिए उपाय होते हैं। अतः उत्सर्जन के क्षेत्र अधिक परिणाम दर्शाते हैं। तट के कई भागों में पंक तट (mud bank) की उपस्थिति (उद्योग/केल/टट) मछली समुद्र घरने हो जाता है।

पानी में प्राकृतिक तथा विषाक्त प्रभाव की प्रभाव और फैलाव अवस्था मछलियों के विज्ञान/समुद्र घरने का घोट बनाता है। बड़े प्रकार के ब्रह्म जीव मछली प्रकार के सूक्ष्म दृष्टिकोण होते हैं जिनका अवर जीव नियन्त्रण संबंध भी दिखाते हैं। नदियाँ से बहकर आनेवाली पोषक वस्तुओं उपयोगालय क्षेत्र (sublittoral region) के उपयोग कारते हैं और यह क्षेत्र कई वाणिज्यिक प्रभाव मछलियों को संबंधित करता है। इस से तटीय प्राणियों को भी अभिवृद्धि होती है। प्रवाल (वनस्पति वा प्राणी) पियलिकाओं की मौसमिक उपस्थिति से विवाह पदार्थों उपादित होते हैं और इससे पानी प्रभृति होता है। मछली साभारतता ऐसे स्वात्तिक कारण भाव जाते हैं। इस कारण से ऐसे स्वात्तिक को मालिकीयों पर प्रभाव प्रभाव पड़ जाता है। इस प्रकार की पियलिकाओं (blooms) के स्वात्तिक से मछलियों की भारी मृत्यु पहुँचते हैं। उपरकटन/नदी मूल्य आवासों के प्रभाव 'तट स्वात्तिक' (hot spots) में रहने वाले मछलियों जीवन चक पूरा करने में अवसर हो जाते है या नहीं जाते हैं।

परिस्थितिक

समुद्री क्षेत्र के विभिन्न आवासों में रहनेवाली मछलियों में गुणात्मक, संरचना व्याप्तिक विवाह को पहनने से दिखाया गया है। प्राकृतिक और जलवायु स्थितियों (environmental conditions), मछली जाति की विशेष परिवर्तन की आवश्यकता, खाद्य की उपलब्धता और अंडनन रीति के आधार पर समुद्री क्षेत्र में इन मछलियों का वितरण हो जाता
है। ये मछलियों अंतरांशकारी क्षेत्र से खुले महासागर और 
सुदूरकांशी उपमूलक से गहरे प्रकाश रहते महासागर तत्व 
तक विस्फोट दाब (pressure) में रहती हैं। ऊपर 
से नीचे के क्रम में इन मछलियों को लेनवाली, मध्य 
देलाँकर, ग्रैंडर देलाँकर (bathy pelagic) और 
तत्तत्त्व के रूप में संचालित किया जाता है। ये मछलियाँ 
रेल, लिवनी, फार्थर और प्रवाल जैसे समुद्री धारतंत्र्य में 
रहती हैं और उनके बाँस व्यवहार और जीवन/जीवनी 
स्थितियों के अनुसार आकार/निर्माण की विशेषताओं में 
परिवर्तनीय/विविधताएं दिखाई पड़ती हैं। उपमूलक 
तत्व और 
ऊपर के प्रकाश भाग में अनुकूल स्थितियों के कारण 
उत्सर्जन और विविध मछली जातियों को प्रभुत्व (समूही 
मछली जातियों का 78%) हो जाता है जबकि दाबदाब तत्व 
और महासागर तत्व के बाँस यह प्रभुत्व घटता जा रहा है। सब 
सागर की स्थान स्थितियों जाति विविधता की प्रत्याशा देती 
है। इस कारण से मछली जातियों का लेवल 13% खुले 
सागर में दिखाया पड़ता है। प्राकृतिक स्थितियों के पास के 
गरम पानी मछली विविधता से संबंध हैं जहां कम से कम 
4000 मछली जातियों निर्माण रूप से रहती हैं।

शास्त्रीय भारतीय अन्य आर्थिक मेखला (EEZ) की समूही 
मछलियों की वर्धन 3.9 मेगानूट टन है जिसे अनुपाती 
(bathy metrically) रूप से 0-50 मी. की गहराई से 
2.28 टन, 50 भी से पंच की गहराई 1.395 मेगानूट टन 
और महासागरीय क्षेत्र में आकृति 0.295 मेगानूट टन 
है। व्यवस्थान स्थितियों में 0-50 मी. की गहराई मेखला में इस 
क्षेत्र से विस्फोट करने लोगों का पानी जा चुकी है।

लगभग 2.66 मेगानूट टन (1998) के कुल व्यवस्था मध्य 
मछली उत्पाद के 80% में तारलय, बंगाल, बंगाल, एक्स, 
सवेट बेक, कर्नाटक, प्रशासनी और जैसे गंभीरपायंतियों को 
विस्फोट जातियों (1.27 मेट्र) और सर्कुल, पैर, सुरा, ए, 
चाट्टी मछली, पामेकेट, पूलिंग, तुम्बिल आदि जैसे तत्तत्त्वीय 
मछलियों (0.70 मेट्र.) उपस्थित थी। समूह से अपनी उत्पादन 
रूप से मत्स्य करने की जगह से कई प्रमुख समूही मछली 
जातियों खाली में पढ़ गये हैं। कई प्रमाणों समूही मछली 
स्थानों का पूर्ण रूप से विस्फोट दुर्गम हो चुका है और यह कारण 
से जाति की आंदोलन हुई है। अध्ययन और जीवनी 
जोंके के मौलिक पानी की मछलियों खाली में पढ़ गई है और 
समूही क्षेत्र में रहने वाली इसी जातियों भी अतिमृत्यु की 
वजह से अपलोकात्मक की संस्थाओं में पढ़ गई है। भारतीय 
समूह में लामुम सुधा (रिकोलोन दवार), सिंगापुर (टर्स्करस 
ढ्रॉनिंग्सन, टी. दी. पुंडन्यो), लूस्फुस (पोलिउप्स एडवार्ड्स) 
तथा जोंड जम्पर (लेफ्टरिक्स लेफ्टरिक्स) जैसे तत्तत्त्वीय 
तत्त्वीयों इन प्रकाश इन मछलियों का विस्फोट करता है। 
यह है कि उत्तर की जीव संस्था काम करने की प्राकृतिक 
क्षति की समस्या हो गई (पुष्टत: मछलियों के दो अवस्थाएं- 
किसी/छोटी अवस्था और अंधकारिक अवस्था)।

आर्थिक/पौधीय प्रदूषण होने वाले उत्तर समूहों के भागों 
में मछली के नारा की रिपोर्ट नहीं हुई है। उदार वातावरण यह 
होगा कि मत्स्य नियाम व विनियमों का एक संयोजन (भारतीय 
वन्यजीव अर्थव्यवस्था 1972, तत्तत्त्वीय विनियम 
मेखला (CRZ) के रूप में पोषित करने अधिवक्ता 1991, 
1994, 1996; और जीव विविधता अर्थव्यवस्था आदि) 
और पौधीय, जाति/आदाय को जाति से विविधत विविध 
पर विस्फोट करते हुए इन सबसे अतिरिक्त तत्तत्त्वीय 
संरचनें व लोगों की आज्ञाकारी।

पोलिटिक

समूही मछलियों आसानी से पतने वाली व आसानी 
से त्योहार योग यह कम खर्च में लोगों को पोलिस्टिक 
प्रदान करती है। मछली के खाद्यावधान भागों का अनुसार : 
नमो-67.90%, प्रोटीन - 10.20%, वसा 0.4-20% और 
मैग्नासीन 0.5-2% है। मछली प्रोटीन में अध्यक्ष भाग में
अभिन्नो आसिद और उच्च पौष्टिक मूल्य भी भेद्ध है।

सामान्यतः मछली लिपिक बहु असंतुत वसा अम्ल (Poly unsaturated fatty acid - PUFA) से समृद्ध है जो सीरा लिदिंड और सीरा कोल्लेष्टरॉल स्वस्त करके स्वस्तीय परिसंचरण (blood circulation) की दर बढ़ाने में सहायक होता है। मछलियों में अध्यक्ष प्राकृतिक और क्रियाशील प्रणाली में अन्य वसा और फिटिंग है। मछली तेल में वसा किन्नी विभाजन ए. और इंग्रिदर माला में उपलब्ध है। मछली मांस में गर्म किन्नी विभाजन भी कोप्लेक्स है। उपर्युक्त सुधारों के अंतरिक्ष मूर्ति (shark) मांस में 25% बुद्धि और वायुमंडल रूप में नायकतिव, अम्लिका और उत्तेजकता; निगर में 30-50% वसा भी होते हैं।

अधिकांश आधिकारिक प्राप्ति मछलियों के मांस में होने वाले रासायनिक मिश्रण और क्षितिजगतुंगा गुणतत्त्व (organoleptic properties) का निरोपण किया गया है और संसाधन एवं खपत के लिए प्रोत्साहित किया गया है। मछली खाने के स्वास्थ्यकार्यों गुणतत्त्वों का प्रभाव करने के फसलक्षण समुद्री देशों में मछली खानेकरों का प्रतिस्थापन गम्भीर रूप से बढ़ गया है।

उपरोक्त स्थिति मुख्य रूप से स्वाथता की दृष्टि से साफ, संसाधन और परिसंचरण मछली पाठ करते हैं। उनकी आवश्यकता की पूर्ति के लिए उपयुक्त, संसाधन, उपाय विकसित, पेंफिंग, भंडारण तथा परिवार की नई प्रोटोकॉलिनियों विकसित की गई है। उनमें कई मछलियों का अधिकांश भाग ताजी स्थिति में खा जाता है फिर भी कुछ भाग नकल इलेक्ट्रिक कोलंबरस के लिए भी उपयुक्त किया जाता है। मछली की पौष्टिक गुणतत्त्व सुरक्षित रखने के लिए सीलीकरण (block & IQF), डिश्वर्फिंग और सुरंग उपस्थित (tunnel drying) के नए तकनीक प्रयोगित हैं। आधिकारिक नियंत्रण के लिए आधुनिक मछली संसाधन उद्योगों में अस्वस्त रूप से होने वाली आवश्यकता वैज्ञानिक हो जाक विकसित सुरक्षित प्रौद्योगिकी निष्कर्ष रीति - हास्य अन्वैज्ञानिक किताबकान केरन्द्र वेबसिट (HACCP) पौष्टिक समूह और मूल विभाजित और अधिक समय उपयुक्त करने वाले (long shelf life) मछली उत्पादों जैसे बाँटेड और ब्रेक्ड मिश्रित, मछली अम्ल, ब्रेक्ड, फ्रेस (10% से कम ब्रेक्ड के साथ स्टेबल इमल्ड), फिश स्ट्रॉक, विज्ञान फिश आदि तैयार करने के लिए कई तकनीकों और रीतियों अप्रभावित नहीं है। ऐसे उत्पाद तैयार करके मछलीनिनीटेड, पादरी (transparent), विनियमित (sterilized) पेकेटों में रख जा सकते हैं।

संदर्भात्मक

समुद्री मछलियों में आकार, संरचना, रंग, भिडियन, गति, स्वभाव, संसाधन की दृष्टि से प्रयोग आवश्यक है मछलियों मानव भोजन और आवश्यक की मछलियों है।

इनमें आकार (मछलीकाल फिश, डायरेक्ट फिश, स्कॉपियोन क्याशिका, केसर फिश, काफिन फिश, क्लासिक फिश, बाट) मछलियों जलजल साधन में माना जाता है। आकार और विश्व भर में रोजगार 0.75 बिलियन अमेरिकी डॉलर का समुद्री सन्ताली मछलियों का विकास होता है। इसका विषय प्रतिवर्ष 25% बिलियन अमेरिकी डॉलर का समुद्री मछलियों का विकास होता है। इसका मछली के लिए प्रतिवर्ष 25% बिलियन अमेरिकी डॉलर का समुद्री मछलियों का विकास होता है। इसका विषय प्रतिवर्ष 25% बिलियन अमेरिकी डॉलर का समुद्री मछलियों का विकास होता है।
भारतीय महासभा के समय पंचायत में समुद्री मछलियों का उत्पादन वर्ष 1950 में 0.6 म. था जो वर्ष 1997 में 2.71 म. तक बढ़ गया और अंत में 2010 में 4.1 तक बढ़ गया। यह समुद्री मछलीयों में से केवल 300 जातियों ऑपोफिक्ल रूप से प्रयुक्त हैं और इन्हें भारत के चारों और के मध्य भाग पृथ्वी और विशेषतः पंजीकरण के लिए पकड़ा जाता है। यह समुद्री मछलियों को सजावटी मछली/जलीयशाला के लिए पकड़ा जाता है। सूरा, बौरजुक, गूंदा, नीलियाँ फिसा, जैसे हर और फिसा में धूप निजातों को आकर्षण कराने का स्थान है।

अधिवक्ता

भारतीय महासभा के समय पंचायत में समुद्री मछलियों का उत्पादन वर्ष 1980-81 में 1.9% था (८. 806 बिलियन्स) जो वर्ष 1993-94 में 3.9% (६. 75 बिलियन्स) बन गया। समुद्री मछलियों का 85% का प्रयोग आधिकारिक बाजारों में किया जाता है जिस से लाभ 8000 करोड़ रुपये का आधिकारिक लाभ होता है। कुछ पकड़ का 15% का निर्यात होता है जिससे भारत के वर्षों में 5000 करोड़ रुपये का लाभ हुआ है। फास्टफास्ट, फास्टफास्ट, सुरवार, बांदा, रोव्ह कोड तथा सेंट जैसे समुद्री मछलियों का अधिकारिक भाग निर्माण किया गया है। वर्ष 1995-96 अधिक के दौरान इनमें से एक लाख टन (मुल्क पकड़ का 4%) मछलियों का निर्यात किया गया और 372 करोड़ रुपये का लाभ भी प्राप्त हुआ। जीवन मछलियों के परिवहन के लिए
भारत विश्व व्यापार गठबंधन का हिस्सा है। भारतीय वैश्विक व्यवसायों के खाली और अधिक दक्षता से विवरण सुरक्षित करने के लिए अधिक विभाग कराने और उत्साह दिखाने के कारणों से विश्वास है।

- अटल विहारी वाजपेयी
भारतीय मालिकी-खाद्य सुरक्षा और जनकल्याण का आधार

एस.एन. हिंदेदी
विज्ञान, भौतिकी सहित विद्युदी कौशल्यों का अध्ययन, भोजन

1. प्रत्ययाण - भारत में ग्रीष्म पानी आवास तंत्र ज्ञातवर

विवरण की कूट मछली पकड़ का 90% समूह मालिकी का प्रयोग है, जिस से भौगोलिक मालिकी आधारण अत्यंत प्रभावी बन गई है। भारत में खाद्य उत्पादन का 90% आयुर्विज्ञानीय क्षेत्र में है जिसका अंतर्गत अनेक निर्यात, लदाओं, जलाशय भूमि, बाघ भूमि, टकरा तथा ग्रामीण ताली पर एक महत्वपूर्ण है। विज्ञान 

2. समय

भारत में ग्रीष्म पानी आवास तंत्र के विवरण के लिए जिन्हें नादेव आवास तंत्र के अंतर्गत प्राप्ति होना चाहिए। नथी विनेस में निर्यात के उन्न भाण, नथी, झील, सरोवर, दूर, सरोवर के मूल भूमि, जलाशय भूमि, बाघ भूमि और ग्रामीण ताली रचित है। ये मालिकी आवास तंत्र के अंतर्गत अवसायक है। बजेज तथा ग्रामीण ताली अलावा आवास 

3. विस्तार

भारत में ग्रीष्म पानी आवास तंत्र का मुख्य उद्देश्य अति घाटी के क्षेत्रों है जिसके तथा भेंडों में खाद्य सुरक्षा प्रदान करना, स्व-रोजगार को बढ़ावा देना, निवृत्तियाँ, अति संसाधनों के परिवर्तण 

4. विभाग

यह उन्नत अर्थव्यवस्था और ग्रामीण कृषि के क्षेत्रों पर आधारित होना चाहिए।

भोपाल में ‘झोंटा तालाब’ अतिपथक युक्त था और इसमें निविदा विस्फोट का नियंत्रण किया और आत्महत्यारों के साथ अभियोजन के बाद इनसे प्रयास प्रदर्शन करके पुनः पानी भरा दिया (संदर्भ मिश्रा और बाजेश्वर, टायमेंट आदि). भोपाल, रेडिज़ और चंद्रकांते, सी आई एफ, गुप्ता). लगभग 200-400 वीं से पहले के अवसर पर सरोवर गांठा बनाया गया था।

इनमें अतिपथक और रोगों का नियंत्रण, पानी की मात्रा बढ़ाने जाने और गृहात्मक मछली कंपनी का उपयोग करने के लिए इनका नियंत्रण कराने के लिए आकर्षण और उत्तराधिकारी समिति में बढ़ती लागत नहीं सकती है। अण्डकार्य की हड़-टेक व्यवस्था में भी कार्यकारी बलों का अवकर्षण तथा रोग एवं द्रुतगति के रूप में अविभाज्य घटनाओं के लिए भी उपयोग अवश्यक है।

5. भारतीय सरोवर अत्यधिक उत्पादन क्षमता बढ़ाने के लिए भी मध्ये गरीब

भारत में लगभग 2 मिलियन हेक्टेयर सरोवर क्षेत्र है और अभिकर्षयन सरोवर विस्फोट उद्योगों जैसे सिंचाई, जल विस्फोट शिक्षा आदि के लिए बनाए गए हैं। यदि 1950 में सरोवरों का औसत मछली उत्पादन 10 किलो./हेक्टर था, तो 1980 में इसमें बढ़ाई गई 200 टन मछली/हेक्टर। उद्योगपती रोजगारी सरोवर अवस्था उपयोगी बनाने के लिए गरीब कोणीतार और दूरदर्शी व्यापारिक सरोवर की कुछ बिक्री 7.0 करोड़ रुपए से ज्यादा यहीं और दूरदर्शी सरोवर की कुल बिक्री 4.0 करोड़ रुपए थी। इसी लिए सरोवर मात्रिका को सुधार कहना जरूरी है। और सरोवर से पकड़ी मछली मछलियों के लिए मधुरुओं को प्रतिरूप रूप में अर्थसंबंधीय अप्रियता के लिए अंतर 6 रुपये दिया जाता है लेकिन कोलकाता बाजार में मछली का भाव प्रतिरूप के लिए 40-80 रुपये हैं। अत: सरोवर मछली का माकेंट
माधवन लगभग 42% है। अधिकांश लाख विवाह में लगे हुए चुंबन गए व्यक्तियों को ही मिला जाता है। मछली मछली पकड़ते हैं और एक वर्ष तक पतल करते हैं; पर एक वर्ष के बाद उन्हें केवल 16 सूचा मिल जाते हैं। लेकिन एक हफ्ते में विवाह कार्य करने वाले व्यवस्थितों को मिलनेवाला माधवन लगभग 42% है। प्रात्मात्मक प्रेमिकों और सामाजिक स्तरियों में मछली का प्रभाव का अनुकूल नहीं है।

हालांकि सरकार ने मछली साधनों को सहायता की तो लेकिन उनका सम्पूर्ण प्रभाव सीमित होने के कारण मछली लोग गरीबों रेखा के आसपास हो गए हुए। इस विवाह के सुधार के लिए उपायों का विकास और स्थानीय विवाह करना पड़ता है।

6. नई आधिक नीति - माधवन प्राधिकूलों श्री वार्येयों ने कहा कि भारत विवाह व्यवस्था संगठन का ऊपरस्थर है। - भारतीय वेतनिकों को खाँच और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए काल्पनिक प्रयास करना पड़ता है। - वेतन में मछली के फार्म कुड़ काउंटरों की जरूरत है।

नई आधिक नीति के अंदर मछली लोगों और उनके समान का अन्य भूमिका कंपनियों भारत के खाँच क्षेत्र में प्रशासन कर सकते हैं, भारत के माधवन प्राधिकूलों श्री वार्येयों ने कहा है कि भारत विवाह व्यवस्था संगठन का ऊपरस्थर है। भारतीय वेतनिक एवं धार्मिक विषयों के लिए विवाह व्यवस्था संगठन का उपयोग करने के कारण प्रयत्न करने की काल्पनिक संगठन की जरूरत है। वेतनिकों के यह मानते हैं कि “जो लगा हुए वह उदय है।” निर्णय लेनेवालों को यह व्यवस्था चाहिए कि उपभोक्ताओं को यथार्थ मूल्य पर मछली की उपलब्धि सुनिश्चित करने के लिए स्थानीय प्राधिकृतों का विकास, स्थानीय जन-सविंद्र की कृतिता का विकास और स्थानीय विवाह प्रसारित किये जाने के लिए कदम उठाने पड़ता है।

इस प्रकार के विवाह कंपनियों अपने उपयोग जो वातावरण में जितना भी कम हो, उच्च मूल्य पर विवाह भर किये करते हैं और उनके विवाह तंत्र में खंड भी अधिक है। इस आधिक वातावरण को कहा से छोटे छोटे उपयोग केंद्रों में इनका प्रभाव आसान नहीं है। भारत के वेतनिकों, प्राधिकृतों तथा प्रत्यक्ष को आधिक पूर्व पर दूरी विवाहों के लोगों किन्ही समूह तट के देशों में रहने वाले अ.ज.अ.ज. जैसे लोगो के साथ है, जो जीवन रूप का उपयोग करता और उपयोग तथा खाँच सुपर सुनिश्चित करने के लिए सरकार तथा उनके प्रमुख भागों का अच्छी तरह से उपयोग करना चाहिए। अतः, भारत में उपायों की कुलस्तरत्व सुनिश्चित करने के लिए उपयोग करने और उपभोक्ताओं की रचनात्मक खाँच के लिए ये सेवाएं उच्च प्रकार सुनिश्चित करने और उपभोक्ताओं की स्थानीय भाषा में व्यवस्थित मूल्य पर ये खरीदने के लिए एक प्रमुख नीति परिषदों अवधारणा अन गाया है। इस अधिकांश में मछली को उपयोग से दूर रखने तक के ‘स्वर तथा लोगों’ की नीति अपनाना चाहिए और पेशेवर तथा विवाह में उन्हें प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, मूल्यांकन मछली का पतल करने, आकृतियों पर परिपक्व एवं संबंधित करने और फार्म फूड काउंटरों से विकसित करें। “हर एक टेक बैंक” होता है” इसे एक साधारण द्वार के रूप में अपना। गांवी सागर, हालांकि, दलित, प्रेम बंध आदि और अन्य सरकारों के उपयोग का अंकिता ऐसे रखने पर इस नाम का प्रभावित हो जाता है। हर एक सरकार को कुठे तक इतनी अधिक है कि इस से व्यवस्थित लोगों को मछली भेजना शायद करने वाले अवस्था वाणिज्यकर्ता प्रभावित हो जाए। मछली को दिखाया, कृतिता व्यवस्थित वाणिज्यकर्ता केंद्रों उसके प्रभावित व्यवस्था करते हुए इस उद्यम से सामाजिक परिवर्तन लाना जा सकता है। जनवरों साबित करना विभिन्न क्रुणिकार प्रारंभिक सुनिश्चित हो जाता है। मछली को दिखाया, कृतिता व्यवस्थित वाणिज्यकर्ता केंद्रों उसके प्रभावित व्यवस्था करते हुए इस उद्यम से सामाजिक परिवर्तन लाना जा सकता है। मछली को दिखाया, कृतिता व्यवस्थित वाणिज्यकर्ता केंद्रों उसके प्रभावित व्यवस्था करते हुए इस उद्यम से सामाजिक परिवर्तन लाना जा सकता है।
प्राकृतिक रूप में पढ़ाई होने वाला अनुमोदित विचार उड़ान के माध्यम से प्रकट किया जाता है। इसके अतिरिक्त यूनाइटेड मेडिकल की व्यवस्था में परिवर्तन लाने से जनन का पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने का जो सक्षम है और महुआ और महल्ला के जीवन रत्न में सुधार लाने में सहायक हो जाएगा।

7. यह-टैक शिग्दी पालन-माहार्षिक शिग्दी "बाई माहूर”

भारत में बाई माहूर का पालन निरोधित है। फिर भी परिचालन बंगाल में 120 एकड़ के 24 परगनाओं में इसका पालन किया जाता है। इसके अतिरिक्त यूनाइटेड मेडिकल और भारत के अन्य कई भागों में इस रूप में पालन किया जाता है।

परिचालन बंगाल के ग्रामीण किसान लोग प्रति वर्ष प्रति हेक्टेडर में 70 टन महुआ का उपयोग करते हैं और स. 30/किलो. की दर में बेच देते हैं। इस तरह शिग्दी का पालन हमारे शिग्दी पालन के लिए एक चुनौती है। भारत को भी एक उच्च स्तरीय शिग्दी पालन व्यवस्था का विकास करना चाहिए। से उठे एक ऐसी स्थिति के दो साल द्वारा वापिस गुणधर्म और उच्च बढ़ती दर और व्यक्तिगत अवस्था नहीं होने वाले संकर वाणी के विकास के लिए कुछ प्रयास किए जा सकते हैं। परिचालन प्रभाग के प्रबंधक किसान शिग्दी पालन का एक सहस्वरूप तरीका विकसित करना एक मुख्य समस्या है और इस के लिए आत्मन ध्यानपूर्वक प्रयास किया जाना आवश्यक भी है।

प्राकृतिक सूची और नौटोरियस नौटोरियस के पालन के लिए भी भाहार प्रमुख है। भारत को 60-90 दिनों में छोटे आकार (200-350 ग्राम आकार) और कम हड़क वाली मछलियों का पालन और मछली की विकास प्रक्रियाओं के लिए अत्यधिक उपयोगी व्यवस्थाएं विकसित करना आवश्यक है। इस से उपभोक्ताओं की आश्वस्त और मांग की पूर्ति हो जाएगी और इस से उच्च और इरादा मुल्य भी कम सकते हैं।

8. “जो तप है वह सुंदर है” योजना आयोग द्वारा लघु मानिक्य द्वारा अपनी आवंटन दिया जाना चाहिए

ग्रामीण क्षेत्रों में उच्च उत्पादकता वाले अंतरराष्ट्रीय आयाम रूप से यथावत है और ग्रामीण लोगों द्वारा ग्रामीण सुविधाओं से इसका प्रवर्तन किया जाना चाहिए। जनवरी से अलावा उपयोगी उपकरणों और ग्राम किसान का मुख्य पुरुषों भी है। मछलियों की अंतरराष्ट्रीय व्यवस्थाओं में विविध प्रकार है, भारत के योजना आयोग द्वारा अंतरराष्ट्रीय मछलियों के लिए आवंटन निधि का आवंटन और अधिनियम सहस्रता और संपन्न प्रदेश किया जाना चाहिए।

पंचायतों में मानव परिसर एवं व्यवसायिक शिक्षा की सुविधाओं होनी चाहिए। मध्य प्रदेश राज्य सरकार जैसे क्रूश राज्य सरकार ने मत्स्य करने का अधिकार ग्राम पंचायतों और जिला परिषद को सौंप दिया है और मछुआरों को मछली एकदिवसीय का प्रस्ताव देते हैं। वे लोग मुल्लभुल और कृषि विकास योजना के लिए मानव परिसर तथा कृषि विकास विभाग और वित्तीय सहायता दी जाने की सहायता, अन्यथा ये मत्स्य पक दूसरों को पूर्ति पर लाया जाना चाहिए या किसी वर्तमान व्यवस्था के रूप में कार के आधार के आधार पर इसका प्रवर्तन किया जाता है। परिश्रमस्थान औरतिय उपयोग 1000 फिट. यह देख देते हैं लेकिन राष्ट्रीय उपयोग लगभग 3 टन/हे., और आयुर्वेद में उपयोग 8-10 टन/हे. होता है।

इस व्यवस्था में परिवर्तन होना चाहिए और ग्रामीण मछली एकदिवसीय द्वारा पार्स्कूड का विकास, निर्माण, संरक्षण और पक्षियों का आयोजन चाहिए। मछलियों की परिवर्तन और विकास सुनिश्चित करने के लिए रोजगारों से प्राप्त आय के 25% को बढ़ाया आकार की जिस मछलियों के संरक्षण के लिए मुनि: निवेश किया जाना है। इस के लिए स्फुटनशाला (हेक्टर) तथा पंत कपाल को सहजता पकड़ा है। मछुआरों को इन कारों में प्रश्न किया जाना और सुनिश्चित करना है कि विकास उन्हें द्वारा किया जाता है या नहीं। जहाँ सुनिश्चित मछुआरा लोग मछली कामों का प्रवर्तन करते हैं वे अब तक संगठन करते हैं, इसका उद्देश्य है विकास मध्य-आरा सहकारी संघ। जब 1950 से तंबाकू अनु
तक वे सब्जियां महुआ सहहारी संग्रह के सदस्यों को अपने नाव, दीवाल पत्थर, बड़े संग्रहों और बख्चे होते हैं। आजकल से लेकर संग्रह के वार्षिक उत्पादन 5.0 करोड़ रुपए है और अभी तक नहीं हुआ है। अभ-आलूक उद्योगियों और दिल्ली सरकार का विकास और विकास से पहले उत्पादन से विस्तार तक के कार्य सुनिश्चित करना उत्पादन बढ़ाने के मुख कदम हैं। केंद्रीय मतलब शिलां संयंत्र के सेवन से लिखित रोड, मुद्रण में विकसित महात्मा विस्तार एकदम से बढ़ी बयान 1978 से लेकर अभी तक हम सहभाग हैं। सभी रजनीख फाल्स पूढ़ स्तरों में खाने के लिए लेख पानी खाने उपस्थित को उपन्यास में मिल जाते हैं और ये रूपोल सब्जियों आंशिक आंशिक के लिए लेख खाने-खाने का पानी रखता है। इसलिए तथा भोजन के उपयुक्त करने के लिए लेख पानी खाने उपस्थित को उपन्यास में मिल जाते हैं और ये रूपोल सब्जियों आंशिक आंशिक के लिए लेख खाने-खाने का पानी रखता है।

9. बनसपनों एवं जीवाणुओं की जीव विविधता का परिभाषण

भौतिक प्रेम दर्शन के कई भागों में मलाईक विविधता एवं जनता जीव वृक्ष को तत्काल संस्कृति और साधारण आरक्ष के बड़े सरोवरों में पात्र के रूप में विभाजित किया गया है। निदार्शन में से किसी प्रतिवेद की बनना मालिक विषय जा सकता है। आवादी में हुई बुद्धि और कई मानकों हस्तक्षेपों के फलस्वरूप पर्यलोपित संस्थाओं से जन संस्थाओं का पुनर्निर्माण कर दिया। उपयोगियों के लिए मलाईक विविधता और गंदा पानी नालियों में छोटे देने की बजह से पानी प्रूफिट बन जाता है जिसके कारण कई गोर भी हो जाते हैं। यह दान के निर्धारण करने के लिए एक भारी वर्धन और आलोचना करने के लिए अगर अपने भागों में फंट जाता है। उपयोगी के लिए झोंक देने वालों विश्वासी आवास तंत्र को खराब कर देते हैं, जीव विविधता कम कर देते हैं और इस से कुछ जाति के जीव गाम बढ़ा हो जाते हैं। अतः मलाईक के परिभाषण के लिए भारत का वनस्पतियों तथा जीव जातियों के परिभाषण पर ध्यान देना चाहिए।

10. हर एक नदी तट का अलग आवास तंत्र के रूप में प्रबंधन

मीठा पानी के प्रकृतिक हाय़ उत्पाद के तंत्र में फाल्को विकास, चिकित्सा, सजीव, वातिल, सरोवर, नलाब, जलक्षेत्र, वाह श्रेय, मालिक इत्यादि और ज्ञानवर्धन संगठित है। इन स्थानों के आवास तंत्र संचार में से किसी और साथ जल क्षेत्रों में फंटे हुए हैं। इसे वह संकेत मिलता है कि हर एक नदी और इसके गह संगम के स्थान के आवास तंत्र को ऐसे हो प्रबंधन करना आवश्यक है। आवास तंत्र के सभी संपत्तियों के बीच वायु शंकु संचार है और तट को उपादन विभिन्न संपदा के योगदान पर आवश्यक है। अतः सरोवर मालिक और नलाब में लगातार विकास के के लिए उपयोगी के आवास तंत्र का प्रबंधन करना आवश्यक है। इस से मलाईक का व्यापक प्रबंधन और परिवर्तन सुनिश्चित हो नागरिक और इस जनकारी से उपयोग भी उत्पत्ति हो नागरिक। कभी नोट, सरोवरों के प्रबंधन से आत्म आवास तंत्र के प्रबंधन की और ध्यान देना चाहिए।

11. प्रवासी मलाई और प्राकृतिक जालियों के लिए बांधों के पास किसी तैयार

सिखाई और बिनापी उपयोग के लिए निदार्शन से बांधों का निर्माण करने पर मलाईक के प्रबंधन में बाढ़ उत्पन्न हो जाए। इसी प्रकार प्रबंधन एवं विस्तार के लिए
मछियों का सुर स्थानों तक जाने में भी प्रतिकूल हो जाता है। आवाज के साथ सोलहों के पास कई फिला स्थान बनाए गए दे लेकिन इसमें अधिकांश संचयनक होने से सर्वसाधारण नहीं हुए। सफेद फिलाकूर के महसूर और मीठा पानी श्रीलिंग में हुई टिप्पणी इसका उदाहरण है। गंडारी नदी के घोलेक्स के पास मकानाधिकार जाति की भी भारी कमी है। ये फिलाकूर अलग में ही बसते हैं मकानाधिकार को फिला स्थान बनाए। इस के फसलग्राम नदी के उपरी भाग में दो जाति श्रीलिंग की क्षमता है।

12. परिपरागत जनजाति, जागरूकता की कमी और अधिकारित हित के लिए विभिन्न नदी जलवायुओं से महत्त्वपूर्ण पकड़

पारम्परिक रूप से नदी के आराम घर या औरंगी भाग में अनुसूचित जाति/जनजाति के विभिन्न गोमों के लोग बसते हैं और वे डिममिट विस्मोटन से या पेंडो के पत्ता या घने में विशेष ताक़ करके पकड़ते हैं। पिछले सदियों के दौरान डिममिट विस्मोट और कृप्त पौधे नाश्चित की प्रभाव से मछली मानने से सर्वत्र जाति के उपयोगन में अच्छी नास्ता हो गया है। यह ताल, नानी पालन, मस्तन और विश्वास के बारे में अधिकों की कमी के कारण होता है। लेकिन जनजाति के लोग तालमेर से लेकर जीवनका चलाने के लिए प्रात: और अन्य प्राकृतिक संसाधनों का सहायता लेते हैं। उन लोगों से हुई बातचीत से यह स्पष्ट मिल गया कि “मछलियों का प्राकृतिक संरक्षण प्राप्ति की है और जीविता चलाने के लिए इन को पकडकर का अधिकार है।” अधिकार का लोग अनावर और जागरूक वक्त की ज़रूरतों के बारे में आवाज नहीं होने के कारण डिममिट विस्मोटन से मछलीयों को मारते हैं और आवाज तंत्र खुलते हैं। इसलिए उन लोगों की कृप्तसंस्कृत का विचार गई करने और अविश्वास जमानों के लिए अविश्वास कार्यक्रम आयोजित करने और डिममिट विस्मोटन के अन्तर्गत मछली पकड़ने के लिए अविश्वास के तरीकों से परिवर्तित कराना अविश्वास है। जनजाति लोग आवाज तंत्र के उपयोग करने के नाते संसाधनों के उपयोग के विषय में विचार करने के लिए उन लोगों को जागरूक बनाना चाहिए। यह ग्रामीण विकास का एक प्रमुख प्रयास है और ब्राह्मण विकास विभाग, व्यक्तिवालीकरण, मालिक विभाग, संस्थाओं, तकनीकी निकाय विभाग और डीएस ती, डी जो जेस नाव शामिल प्रशिक्षण विभाग और आप्रवार्त भंडारण परिषद और परिषद के लिए एककृति उपक्रम विकास करना सही तरीका है। अतः इस कार्यक्रम का उद्देश्य प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग के लिए प्रशिक्षण विभाग से जनजाति विकास के लिए प्रारंभिक संस्थाओं की अनुमोदन उपयोगी और परिषद के लिए अधिकृत क्षेत्रीय विकास करना सही संस्थान है।
सरोवरों से उत्पादन बढ़ते जाने का परिवेश अन्य जीवाणुसार अन्य उत्पादन वर्गीकृत है। नवी आवास टन्क और नवी टन्क के विकास के लिए नीतियाँ में परिवर्तन लाना आवश्यक है। जेव्हा विस्तार का पून: पक्ष की, उत्पादन खेतियों में जरूर और विश्वासियों का हास-टेक उत्पादन, मोटी उत्पादन और एंज्वर पालन द्वारा जलनीव कृषि को तलु पेमने उधोग को अर्थ ब्यौरा दिया जा सकता है तद्दर्श पोषण, प्राप्त और अधिक धूप से कमजोर तरीकों को खाद्य सुरक्षा भी सुनिश्चित की जा सकती है और वहीं बढ़ी स्थायीता को उच्च मूल्य वाले जलनीव उत्पादों के निर्माण के लिए प्रोत्साहन दिया जा सकता है।

इन बातों के बारे में राष्ट्रीय अन्वेषण जानने और जलनीव संदर्भों के परिणाम से विकास के लिए एकीकृत और भुज संस्थानीय प्रयास अन्वेषण कल तीव्र पास से हो रहा है। इस से उत्पादों का विकास, पैकेज, घोषणापत्र खाद्यों का विपणन और क्रियार्थ पर आधिक पृष्ठ से कमजोर तरीकों को खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित हो जाने के साथ-जोड़का पालने के लिए राज्यांक के अवसर भी प्राप्त हो जायेगा।

श्रृंगारी मछली

कॉन्वेन में जनवरी 2003 को केंद्र सरकार द्वारा भारत सरकार के कृषि मंत्रालय के सहयोग से चलाया अच्छा शो ने पानी को पहिरने के परिवर्तनयों से नगर में काफ़ी होड़ घाटी। इन श्रृंगारी मछलियों को देखने और खिदाने के लिए लंबे जंटों तक कभी पूह में लोग खड़े रहे जो कि एक उपयोग है। योग उधोग का सुचार है।

- हिन्दी से साहार
मत्स्य बीज संचयन - जलाशय मातिर्थ्यकी के विकास का सशक्त आयार

श्री. श्री. सुपुण्
केंद्रीय अत्यन्तलीग मात्स्यकी अनुसंधान संस्थान, बेंगलुरु

पृष्चभूमि

भारत में छोटे जलाशयों का अनुमानित क्षेत्रफल 14 लाख 80 हज़ार हेक्टेयर है जो कुल जलाशय संस्थान (30 लाख हेक्टेयर) का लगभग आधा है। देश में छोटे जलाशयों का दृष्टिकोण मुख्यतः सिंचाई सुविधा के विस्तार देने के लिए हेटु किया गया है एवं वे मात्स्य ग्राम विस्तार काल में बने तो सूची जाते हैं अर्थात इनका गत तर दस्ता कम हो जाता है कि इनमें फ्रन्यवक मातिर्थ्यकी द्वारा प्रकृतिक मात्स्य बीज संचयन की समाधान नहीं के बजार की है। अतः इन जलाशयों में मातिर्थ्यकी प्रवन्धन हेटु बाहर से मात्स्य अंगुलिकाओं को संचयन अनुभव करेंगे जो तकिः मात्स्य उपचार दर में बढ़ती है तो संतान का हो सकता है। 

छोटे जलाशयों की प्रतिशत की भार्यक बनने हेतु संचय किए जाने वाले मात्स्य प्रजातियों के चयन में सजीवसंग्रह वर्तन की आवश्यकता होती है। केवल उन मात्स्य प्रजातियों को अंगुलिकाओं का हो संचयन करना चाहिए जिनकी बढ़ती अक्सर भी साथ हेटु हेक्टेयर के विशिष्ट स्तर में उनस्त उन्नयन के स्तरक आयार का विषयों पर उपचार हो सके एवं अधिक से अधिक उपचार मिल सके। विश्व स्तर पर इस पद्धति द्वारा जलाशय मातिर्थ्यकी प्रवन्धन को मानना प्राप्त है क्योंकि छोटे जलाशयों के प्रावन्धन में मात्स्य अंगुलिकाओं का संचय प्रभावात्मक मातिर्थ्यकी प्रवन्धन से इसकी उपचार क्षमता का बढ़ने में काफी सहायक मिलती है। लेकिन मात्स्य अंगुलिकाओं का संचयन इतना सरल भी नहीं है क्योंकि इसके लिए अनेक प्राचार्यों का आकान आवश्यक है। यथा, पारिस्थितिक विशेष की जियत क्षमता, आवश्यक मात्स्य प्रजातियों का बढ़ती हो एवं जल विशेष में भले से की अस्पताल तथा अन्य विकार के दस्तानों के उपरेय में मात्स्य उपचार में आवश्यक बनता।

संचयन के मुख्य उद्देश्य

जलाशयों में मात्स्य अंगुलिकाओं के संचयन की पृष्चभूमि में मुख्यतः यह उद्देश्य होते हैं। यथा:

मात्स्य प्रजाति अचानक सुमान्य की संस्थापित हेतु संचय

विभिन्न कारणों से जलाशयों में हुए मात्स्य संज्ञन क्षति का पूर्ण करने के लिए उपयुक्त मात्स्य अंगुलिकाओं का संचय किया जाता है। यह प्रकार का संचय अक्सर जलाशय के कितनी भागों में नहीं को और किया जाता है। अनेक देशों में इस प्रकार का संचय आवश्यक है, विविध प्रकार उन परिस्थितियों में जब किसी नहीं पर बाहर के नीतियों से प्रजाति विशेष को क्षति पहुँची हो आवश्यक परिवर्तन किया जाता है।

मात्स्य उपचार करने हेतु संचय

मात्स्य उपचार करने हेतु किया जाने वाले संचय को समस्त अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि इसका सीधा सम्बन्ध सामाजिक एवं अधिक उपचार से होता है। इस प्रकार के संचय का प्रमुख उद्देश्य होता है प्रकृतिक रूप से प्राण मात्स्य उपचार से अधिक उपचार लेना। इस प्रकार
गतिविधियों का संचय को तब किया जाना लाभदायक है जब उस जल क्षेत्र पर आपातित मस्त्य जीवी यह अनुभव करते हैं कि मात्रिकी की गुणवत्ता तथा उपलब्धता में उल्लेखनीय गिफ्ट आ गई है। वैसे भी, अधिकतर जलाशयों में मध्यमों के लिए उपलब्ध प्राकृतिक भोजन का तो विलक्कुल ही उपयोग नहीं हो पाता है अतः उसका आधिक उपयोग ही हो पाता है। अतः इस अवस्था में ये जलाशय बृहत मस्त्य समुद्रताप के भार वहन कर सकते हैं जो वर्तमान में नहीं हो रहा है।

मस्त्य पालन आधारित मात्रिकी प्रबन्ध हेतु संचय

मस्त्य पालन आधारित मात्रिकी विकास का प्रमुख उद्देश्य है ‘संचय’ तथा ‘पुनःप्राप्ति’। वास्तव में मस्त्य प्रजातियों को अगुणियांकों को संचय कर प्राकृतिक रुप से उपलब्ध आहार का समुचित उपयोग के माध्यम से संभालने में कामयाबी होगी। मस्त्य पालन-सह-मस्त्य प्राप्ति की सार्वजनिक इस बात पर निर्भर करेगी कि कम से कम समय में अधिक से अधिक मध्यमों का पुनःप्राप्त किया जा सके।

नई मात्रिकी के सिक्के हेतु संचय

इस प्रकार के संचय में प्रमुखतः मस्त्य प्रजातियों के प्रकार में बदलाव की जाती है ताकि पारस्परिक संबंध का समुचित उपयोग किया जा सके। विवेकानन्द मूल की मस्त्य प्रजातियों का संचय इसी सिक्के को ध्यान में रख कर किया जाता है।

चित्र-1 तथा 2 में सार्वजनिक संचय के प्रारूप दिए गए हैं।

संचय के विवरण

संचय करने के पूर्व जाल विभेद की पारिस्थितिकों का समुचित अध्ययन करना आवश्यक है ताकि संचय का समुचित लाभ मिल सके। इस दिशा में उपयोग कीमत का आकलन, संचय से होने वाले सम्प्रभुत श्रेणी का आकलन, पारिस्थितिक संबंध के विभेद पहलुओं की पुर्ण जानकारी, परिस्थितिक प्रजातियों के बीच खाद्य-तान को सम्पादित करने की मस्त्य बीज की सम्पूर्ण उपलब्धता आदि पर ठीक अध्ययन करने की आवश्यकता है।

संचय हेतु मस्त्य प्रजातियों का चयन

संचय हेतु मस्त्य प्रजातियों के चयन में निम्न बातों का ध्यान में रखना आवश्यक है:

संचयित प्रजाति पारिस्थितिक स्वभाव के अनुसार हो ताकि इसके रख-रखाव, प्रजनन और विकास में कठिनाई नहीं हो।

संचयित प्रजाति देशी से चढ़ने वाली हो एवं प्राकृतिक रूप से उपलब्ध आहार का अधिक से अधिक संचय कर सके।

संचय हेतु बनाया पत्तक भी जीव मस्त्य प्रजातियों अधिक उपयोगी पायी गयी है, क्योंकि इसकी खाद्य-शिक्षा अंशात्मकता छोटी होती है।

उपयुक्त मस्त्य प्रजातियों को उल्लगा ही संचय में संचयित की जानी चाहिए जितने के लिए संसाधन विशेष में उपलब्ध प्राकृतिक आहार पूर्ण रुप से उपलब्ध हो सके।

मस्त्य उत्पादन के तहत ध्यान में रख कर संचय किये जाने वाले अंग्रेजी के आकार को निर्धारित किया जाना आवश्यक है।

संचय के लिए आवश्यक मस्त्य बीज की सम्पूर्ण उपलब्धता सुनिश्चित होनी चाहिए एवं इसमें लागत भी अधिक नहीं होनी चाहिए।

मस्त्य बीज संचय एवं प्रस्तावन में आने वाले लागत मस्त्य उत्पादन से प्राप्त आयामों की आधि या उससे कम होनी चाहिए।

70 के दशक से पूर्व जब कांड मस्त्य बीज उत्पादन साधनीय तकनीकों का विकास नहीं हुआ था तो नयियों में
उपलब्ध प्राकृतिक मस्त के जलाशयों में संचालित किए जाते थे। इस संदर्भ में दक्षिण के जलाशयों में पुनर्युग्म नालियों, लेखायों, नस्लें, मोरे, आदि इसके अन्य नालियों, इंटरफेस साइनेजन्स तथा संयुक्त नालियों, साइनेजन्स के बीच के नालियों तथा ज्यादातर मूलभूत संसार के मर्म्य जलवायु जाती थी। गंगा तथा ब्रह्मू के जलाशयों में चुंबकीय जलसंचय नियंत्रण तथा ज्यादातम मूलभूत मूलभूत मात्रें की जाती थी। कारक या मस्त बीच उपयोग के विकास से यह कार्य अनुभव हो गया है और जलवायु में भारी हो और अनेक विषयों में मात्राओं का मस्त नालियों का प्रमाण संचालित किया जा सकता है एवं सारी जल बीच प्रभाव किये जा सकते हैं।

भारह जलाशयों में नालियों तथा कौन स्थल नालियों का मस्त नालियों की भी अवधि में गया है। परंतु निरंतर ही वातावरण और इसलिए इन दोनों नालियों का संचालन लगभग ध्वनि दिया गया है। भारतीय कार्य इस विदेश में संचालित पदार्थी गर्भी हैं, क्योंकि एक तो ये रूप के बढ़ते हैं साथ ही उत्तेजना वातावरण के समय भी करती हैं।

छोटे जलाशयों में मस्त धारण पर आधारित पालिकाओं का प्रबंध के अनेक पहल हैं। जैसे, बड़ी तरीके, प्राकृतिक मूलभूत वातावरण और विज्ञान नालियों। अतः इस प्रकार का प्रबंध को संक्षेप के वातावरण नालियों, संयुक्त नालियों, जलवायु आदि के समय दिया है। जल नालियों के वातावरण नालियों और विज्ञान नालियों पर निर्भर करता है। आम तौर पर यह व्यावहारिक ध्वनि नैसर्गिक जल वायु है।

उपर्युक्त तथा लाभार्थी मस्तिष्की प्रबंध का प्रभाव उद्धृत्त होता है जलाशय निवेश में उपलब्ध प्राकृतिक आहारों का संचालन उपयोग कर मस्त मूलभूत पर निर्भरता है। अतः आवश्यक है कि जलाशयों में मस्त अंगुलिकरणों का समुचित संचालित हो ताकि उत्पादन दर में आशानुकूल वृद्धि हो जा सके।

संचालन दर

संचालन दर का निर्धारण जल विशेष जलवायु के आधार पर किया जाना चाहिए। हालांकि कुछ बातें प्रयोक्त जलवायु के लिए समान रूप से लागू होती हैं जैसे बीच का आकार, जलवायु में प्राकृतिक रूप से उपलब्ध मस्त संयुक्त, जलवायु में भारी प्राकृतिक की अवधि, विशेष रूप से प्राकृतिक, वातावरण द्वारा प्रभाव प्राप्त, जलवायु प्रभाव करते हैं, साथ ही आकार, आदि। निम्न उद्धृत पालिका के माध्यम से संचालन दर निर्धारित किया जा सकता है:

\[ \mathbf{K} = \mathbf{A} \times \mathbf{B} \]  जहां \( \mathbf{A} = (\text{टेरा}-\text{टी}) \) और \( \mathbf{B} = \text{संचालन के लिए आवश्यक संपदा} \) ।

\[ \mathbf{A} = \text{जलवायु को वातावरण संपदा} \] ।

\[ \mathbf{B} = \text{प्रभावित विशेष से प्रभाव होने वाला समझौता उपयोग} \] ।

\[ \mathbf{C} = \text{प्रभाव के समय मस्तिष्कों को औसत वजन} \] ।

\[ \mathbf{D} = \text{संचालन के समय मस्तिष्कों की उप} \] ।

भारत के कुछ छोटे जलाशयों में संचालन आधारित पालिकाओं के अन्य परिसरों में किये गए हैं। कार्यान्वयन में स्थित मार्कचालन में उच्चतम संचालन अंक जलवायु की उपलब्धता में 61.8% बढ़ा रही है। यह हो जलवायु उपयोग में 63 किलोमीटर/हों। की वृद्धि हुई है। इसी प्रकार, केल्टिक नीतिक के उल्लंघन जलवायु के उपयोगकर्ता 9.96 किलोमीटर/हों। तथा 107 किलोमीटर/हों से ज्यादा 32.3 किलोमीटर/हों हो गई है। उच्चतम मस्त बीच जलवायु के परिसर में उत्तर चेतन के बाहर, बायला तथा गुणुिस्त्र जलाशयों के मस्त उपयोग में भी अलंबकीय वृद्धि देखी जा रही है, जो संजीवन प्रबंधपृष्ठ का समुचित मस्त बीच संचालन का 80% परिमाण है (सारणियों)।
सरणी-1 छोटे जलाशयों के मस्त क्षेत्र में बहोतरी

<table>
<thead>
<tr>
<th>जलाशय</th>
<th>राज्य</th>
<th>संचय दर (संचय/हेक्टेयर)</th>
<th>उपयोग दर (किलो/हेक्टेयर)</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>अल्हादर</td>
<td>अल्हादर</td>
<td>35</td>
<td>19.4</td>
</tr>
<tr>
<td>हिमपुरी</td>
<td>हिमपुरी</td>
<td>435</td>
<td>182</td>
</tr>
<tr>
<td>मीनाकाया</td>
<td>मीनाकाया</td>
<td>1226</td>
<td>107</td>
</tr>
<tr>
<td>पुलिलार</td>
<td>पुलिलार</td>
<td>937</td>
<td>316</td>
</tr>
<tr>
<td>मार्कोहाला</td>
<td>मार्कोहाला</td>
<td>922</td>
<td>63</td>
</tr>
<tr>
<td>गुलिया</td>
<td>उत्तर प्रदेश</td>
<td>517</td>
<td>150</td>
</tr>
<tr>
<td>बिहार</td>
<td>उत्तर प्रदेश</td>
<td>763</td>
<td>140</td>
</tr>
<tr>
<td>बंगाल</td>
<td>उत्तर प्रदेश</td>
<td>-</td>
<td>102</td>
</tr>
<tr>
<td>बंग-बंगाल</td>
<td>राजस्थान</td>
<td>164</td>
<td>94</td>
</tr>
</tbody>
</table>

आन्ध्र प्रदेश के 40 जलाशयों में विशेष गति अध्ययन में मस्त क्षेत्र उपयोग तथा मस्त क्षेत्र संचय के बीच संबंध सम्बन्ध देखने का मिला है। ऐसा भी देखने का मिला है कि जलाशयों में संचय दर जलकंपसंगत या उपयोग दर भी अधिक मिला।

संचयित मस्त समुदाय की रक्षा

भारतीय पूर्व की कार्य मछलियों में अक्सर जलाशय के जल निकास के चौंक जामा हो जाने की प्रवृति पायी जाती है और इस प्रकार अनेक प्रजातियों मछलियों जलाशय से बाहर दूरी जाते हैं, जो जलाशय मार्फत प्रवर्तन में एक गंभीर समस्या है। इससे भी अधिक गंभीर समस्या है मस्त अंग्रेज की बढ़ी मछलियों को जल के माध्यम से बाहर निकलना। अतः इस प्रकार के प्रजातियों के जल निकास के माध्यम से बाहर निकलने के लिए किशी बाहर संचयित मस्त क्षेत्र में बाहर दूरी जाने की आवश्यकता हो जाती है।

सरणी-1 में साक्षात्कार मस्त समुदाय को बढ़ाने हेतु सबसे कारगर उपाय है सिंहम्बर-अक्टूबर महीनों में मस्त अंग्रेजी का संचय एवं जून आठ-आठं उनका आधिक से अधिक प्रयास। यदै यह उपाय तभी कारगर हो सकती जब 8-10 महीनों में संचयित मस्त अंग्रेजों की सम्पूर्ण बहोतरी हो जाय ताकि उनको बाहर में बेचा जा सके।

मस्त प्रजातियों के प्रकार में बहोतरी

नवादियों पर बीच के निमंजों का सींह प्रभाव अधिक प्रजातियों पर पड़ता है एवं जलाशयों में अक्सर इनकी विपरीतों का हो जाता है। ऐसी स्थिति में तंत्र बाहर लाने एवं पारितिथिक विपरीतों में उपस्थित हरण श्रेणी के प्रादर्श मस्त प्रजातियों को बाहर से संचय आवश्यक हो जाता है। इस प्रकार की मस्त प्रजातियों के प्रकार में बहोतरी कहा जाता है। छोटे जलाशयों में इस प्रकार द्वारा मस्त उपयोग में वृद्धि एक आवश्यक है विशेष ध्यान के बाहर। लेकिन चिकित्सा छोटे जलाशयों में संचयित अधिकार मछलियों के प्राप्ति करना जरूरी है। अतः यदै जलाशयों में इस प्रकार के प्रबंधन का अधिक आवश्यकता है ताकि त्योहार प्रबंधन को प्राप्ति करना प्रारूपित मस्त संचय की दिशा में कदम बढ़ाया जा सके।

मस्त प्रलय आधारित मस्तिक द्वारा "मॉडलिंग" की सार्थकता

हल के वर्षों में छोटे जलाशयों में मार्फत की विकास
चित्र 1 - संचयन के सिद्धांत

मालिकी की संचयन हेतु लक्ष्य का निर्धारण

जलाशय में प्रयुक्त प्राकृतिक
मत्स्य समुदाय का आकलन

पारिस्थितिकी का स्वेदण

क्या जलाशय अपनी उपयोग
क्षमता को प्राप्त कर सका है?

नहीं

नहीं

नहीं

नहीं

कारणों का पता लगाना आवश्यक

क्या मत्स्य उद्योग से संबंधित
बाधाएं मालूम हैं?

हाँ

मालिकी की विकास हेतु संचयन
की आवश्यकता पर विचार।

क्या संचयन आवश्यक अथवा उद्यम है?

क्या कारणों का निर्धारण
संभव है?

हाँ

मत्स्य प्रजातियों अथवा समुदाय
को व्याप्त के लिए संचय

नई मालिकी के विकास में
नए प्रजातियों का संचय

पारिस्थितिकी का पुनर्वार
अवश्य बदलाव का निर्धारण

मत्स्य समुदाय के निर्णयार्थ के लिए संचय

संचयन की संभावना पर विचार

संचयन का कार्यक्रम को लागू करें

लागत - आमदनी की समभूत

विकास हेतु विकास प्राप्ति
पर विचार करने अथवा कुछ न करने

संचयन का व्यवस्थापन को संभालने

आवश्यकता है

आवश्यकता है

संचयन के बाद की समवेत

अवधारण नहीं
विषय 2 - संग्रहण में आने वाली संसाधन संबंधी समस्याएँ

- जलवायु की बदलती क्षमता का आंकन
- मस्तिष्क रोगों की ध्यान में रखते हुए खर्चात्मक मात्रिक का आंकन

निर्धारित प्रजातियों के संग्रहण हेतु कुल ध्यान का आंकन

संग्रहण वाले प्रजातियों की उप/अंकार का निर्धारण

संग्रहण के लिए मस्तिष्क रोग का लोट एवं उपर्युंग होने वाले बिमारियों की आंकन

बालार - मृदु के अनुसार संग्रहण की प्रमाणित

संग्रहण बाल के अनुसार क्या माफिकी उपलब्ध है?

हां

- क्या बिमारियों के कारण कोई समस्या उत्पन्न हो सकती है?

नहीं

- क्या माफिकी को दुरुस्त करने की आवश्यकता है?

हां

- अपेक्षित अनुकूलता

नहीं

पर्यावरणीय / जैविक / अनुवादिकी संबंधी समस्याओं का आंकन
हेतु मालिकी परिवार का सबंध भूमिका देखने को मिलता है। इस प्रकार के मॉडल में संरचित मल्टी बीज संचयन पर विशेष जोर दिया जाता है क्योंकि आत्म संचयन से उत्पादन बढ़ने के बजाय घटना है। यह तो सबंध विचार है कि अगर चौड़ी जगह में आवश्यकता से खप्पा महज़ालों के जमाव से उनकी खप्लोरी बाधित हो जाती है। साथ ही मल्टी दर में भी तीव्रता आ जाती है।

इस मॉडल से यह स्पष्ट है कि उत्पादन का सीधा साबित मल्टी दर एवं मल्टी बीज संचयन के प्लान से होता है। यानी पतन आधारित खप्लोरी, आकार आधारित मल्टी एवं पार-सार-लंबाई इस मॉडल के प्रमुख आधार है। साथ ही यह भी स्पष्ट है कि सबसे अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए बाजार में बिकने लागू करने के काम लंबाई की गहरी वैद्य ने न कि बहुत बड़े आकार की महज़ालों के उत्पादन हेतु जलाशय में उपलब्ध प्राकृतिक ऊर्जा को अनावश्यक रूप से नष्ट किया जाता।

चौंटे जलाशय में मस्तिष्की विकास की अवधिक सम्भावनाएं है एवं इस प्रकार की मस्तिष्की विकास से 100 करोड़ रुपये से भी अधिक की आमदनी देश को मिल सकती है। साथ ही लाखों लोगों को रोजगार भी मिलेगा कराया जा सकता है। मस्तिष्क पालन की तुलना में इसमें लागत भी कम आता है एवं मुनाफ़ा भी कई गुणा अधिक होता है।

जलाशय संरचनाओं के मल्टीको संचयन के उत्पादन पर बढ़ने के लाभ मात्र कुछ लोगों तक हो सकता नहीं रहता अपनी इसका लाभ हमेशा के एक बड़े समुदाय तक पहुँचता है। जलाशय मस्तिष्की विकास में तेजी इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि समय के साथ मस्तिष्क पालन में हो रहे लागत में मिलता बढ़ोतरी हो रही है जो गरीब तथा सहृदय कृषक के हक में नहीं है। पुन: स्वस्थ मस्तिष्क पालन से पर्यावरण को भी खतरा है जो जलाशय मस्तिष्कियों में मिलकर हो नहीं है।

**जैव चिकित्सा**

पिल्लि मस्तिष्क योजना में जलकृषि के क्षेत्र में अभूपूर्ण हुई है। भोजन पानी मिलती और जीवों के अभिनव समूह महज़ालों, पिल्लि और काव्य महज़ालों का पालन अभूपूर्ण है। हाल में सब से अधिक पालन होनेवाली संपत्तियाँ है पेषनआइड जीवों जिसका पालन ६० से ऊपर देशों में हो रहा है। पर्यावरण पिल्लि पालन के कारण जलकृषि यथा एवं तीनों से होनेवाले रोग हमारी जिह्वा का दिव्य बन गया है। जलकृषि में जैव चिकित्सा सफल देखा गया है। जैव प्रोटोपिलोकों में यह शामल व्यवस्थापित नाम से जाना जाता है जिस ना तथा विस्फोटक अंगुलामों का प्रयोग होता है।

- रोजगार संभावन से साक्षात
पश्चजल मछली पालन

एल. कृष्णन
केन्द्रीय समूही मछिलियों की अनुसंधान संस्थान, कोचीन

भारतीय समुद्र का मछली उत्पादन अब ऐसी अवस्था तक पहुँच गया है कि इसको बढ़ाना नहीं किया जा सकता। भारत का चालीक मछली उत्पादन लागतम 2.7 दवा लाख टन है जिसका 25% केंद्र के ने तो से मिला है। कई प्रकार की रोगाण्व और अध्ययनों से हमें यह स्पष्ट मिलती है कि भविष्य में मछली उत्पादन की दर में किसी भी प्रकार की प्रवृत्ति नहीं को जा सकती है। इस परिस्थिति में मछली मछिलियों में उत्पादन बढ़ाने हेतु अन्य तरीकों इंतजार आवश्यक भी नहीं होता है। इस संदर्भ में पश्चजल मछली पालन की ओर ध्यान आकर्षित हो गया।

मूल्य रीतियों में मछली और मछिलियों का पालन उपयोगी बन जाता है:

1) तटीय गिरों के लाभ पैमाने में मछुआरों को आय बढ़ाने का मार्ग

2) गरीव लोगों के बीच दिखाई पड़ने वाली योजना की कमी का कम लागत में विनियम

3) रेल की विकेटी हिला वाले में उल्लेखनीय बढ़ती केंद्र में समायोजित और अन्य प्रकार के कोड - मछली पालन किये जाते हैं। ये सबसे पालन हमारे तटीय लोगों के पर्याप्त होकर, निम्न भार्यान्तर और अन्य दुतावेशी होने किये जाते हैं। केन्द्र के भूमिका पर्याप्त प्रस्तावण थियों के लाभ के लोगों, निम्न भार्यान्तर और अन्य कृतियों होने के किये जाते हैं। केन्द्र के भूमिका पर्याप्त प्रस्तावण थियों के लाभ के लोगों, निम्न भार्यान्तर और अन्य कृतियों होने के किये जाते हैं।
आजकल पालन के लिए छोटी मछलियों की प्राकृतिक रूप से संग्रहण करने की अवसर है क्योंकि समूही - पसंदक मछलियों के उपयोग के लिए औपचारिक तौर पर कोई भी स्कुट-शाला (हेवरी) स्थापित नहीं हुई है।

केवल कृषि विभागवालों के अधीन कार्यालय पुलिंक (स्वामी का नाम) मात्रविक्री स्टेशन में साथ साथ पर भिड़ने वाली पालन योग्य छोटी मछलियों का संग्रहण करके सरकार को दर पर बिक्री किया जाता है जो एक सराहनीय काम है। इससे तरह प्राकृतिक रूप से छोटी मछलियों को संग्रहित करके भेजने वाला मजा लोग भी इन स्वामियों में ज्यादा है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अंदर सीएम, सी आई सब्जे और सभी संबंधित स्थानों के लिए अनुयोजन पर्चम-समूह मछलियों के उपयोग पर अनुसंधान करते हैं। मूर्ति संस्कृति, पैंड, मलत, गुरू, एउटोलस आदि मछलियों के उपयोग पर लिखे गए पर्चम सकल भी हो गए हैं।

झागा पालन के आगे का विकास अब संकट की स्थिति पर है। ऐसी स्थिति में लाभदायक, सरल और शारीरिक अलग से करने योग्य परवर्तन मछली पालन की प्रणालियों के बारे में जानकारी प्राप्त होना आवश्यक है। इस के अतिरिक्त मछली की प्रणाली की गुणवत्ता पर अधिक ध्यान नहीं किया जाता है।

परम्परागत मछली पालन कई प्रकार किया जा सकता है। कई जातियों की मछलियों की एक साथ पालन करने की मिश्रित पालन रीति इसका एक उदाहरण है। इस तरह के पालन के लिए ऐसी मछलियों को चुनना चाहिए कि वे आवास, भोजन एवं प्रजनन के लिए आवश्यक नहीं करते हैं। मिश्रित पालन से कम अनुपात में अधिक उपयद मिलता है। एक ही मछली जाति को निरंतर अवधि तक पालन करने की 'एकल संवर्धन' (Monoculture) प्रणाली मूलतः संसार जैसी पूर्व जल मछलियों के लिए अनुप्रयोग है। कुछ विशेष जाति मछलियों जैसे कल्याण, गुरू, रंग आदि को अलग अलग पंजीयों में अलग अलग पालन करने की रीति को 'पंजीय संवर्धन' (Cage Culture) कहा जाता है। बिस्तूर और कांटहाई के तटों के क्षेत्रों में करने योग्य पालन रीति है 'पेन कल्चर'। इस की विशेषता यह है कि भूमि एवं बैस या तमावूस की तक्तियों के लिए ज्यादा अधिक पालन कार्य हो रही है। इस के अभिनव प्रकार का पालन बाल भरा है और इस स्वामियों में छोटी मछलियों को संग्रहित करके पालन किया जा सकता है। भारत के कुछ प्रान्तों में मछली पालन का काम 'कृपया जल' कहा जाता है। यहां अधिक उपयद मिलने वाली और एक पालन रीति है जिसमें मछली पालन की पूर्व जल और प्रजनन के लिए संचालन किया जाता है। फिर से अनुपात जल मछली पालन का जल मछली पालन का अभिनव कार्य हो जाता है जिसमें अधिक लाभ भी मिलता है।

उपर बताई गई पालन प्रणालियों से 2000-3000 कि. ग्र. तक का संवर्धन मिल सकता है। इस स्वामित्व के अतिरिक्त समूह से संवर्धन कम होने और मछली लोगों के योग्य विकास और काम का अवसर कम नहीं होने की आशा की परिस्थिति में, झागा उद्योग वर्तमान में सयाना करने वाले प्रतिवेदनों के समाधान के लिए और पर्यावरण मछली लोगों, मछली महत्त्वाकांक्षीं और पारंपरिक के सदस्यों को रोजगार का अवसर प्रदान करने और तदार्था आय बढ़ाने के लिए परम्परागत मछली पालन एक अवधार उपयद है, इसमें संरेखा नहीं है।
आनुवंशिक अभियांत्रिकी - मात्स्यकी में खाद्य सुरक्षा की प्रत्याशा

पी. जयसंकर
वंदेर महुंती मात्स्यकी अनुसंधान संस्थान, कोलकाता

भौगोलिक आवारों की बढ़ती नीति के साथ साथ प्रोटीन के लिए सरल किया स्तर, विशेषकर नली संयंत्रों को मांग भी बढ़ती जा रही है। अतिमध्ययन, आंकड़ों और विश्लोषण की वस्तु से प्राप्त मात्स्यकी से मछली उत्पादन वस्त्र एवं मतलब है यह गठन और नक्सल की बोधनीय परिस्थितियों के अनुसार मछली उत्पादन में आगे की वृद्धि का आंशिक नहीं होगा जा सकता है। जलनिवेश काम से उत्पादन बढ़ाना ही इस समस्या का सुलझाव है और इस के लिए और भी समानांतर उत्पादन व्यवस्था विकसित की जानी है।

लगभग 2000 वर्षों पहले चीन और रोम के लोग पालतू मछलियों विशेषकर कार्प मछली को जीन आवृत्ति जैसे विशेषताओं तथा गुणताओं का चयन करके उनका प्रजनन करते थे। तब से बंद कर जलनिवेश कृप्ति के उत्पादन को गुप्तता बढ़ाकर चलाने में आनुवंशिक (genetics) का महत्वपूर्ण भूमिका व्यक्त हो गई। 1900 के दशक में प्रजनन एवं वंशावली (inheritance) की वृद्धि जानकारी के साथ मत्स्य आनुवंशिक के कार्यक्रम और भी प्रचलित होने लगे। 1960 के दशक में आनुवंशिक कार्यक्रमों में बढ़ता होने लगा और 1980 के दशक में आंशिक जानकारियों के उद्देश्य से इन कार्यक्रमों में और भी संबंध होने लगा। हाल ही में आनुवंशिक अभियांत्रिकी (genetic engineering), जिसमें पाए और दूरस्थ जीन का मछली की जीवन में प्रयोग किया जाता है (इसे ट्रांसजेनिक्स कहा जाता है), द्वारा आनुवंशिक प्रणालियों का उपयोग के लिए प्रयास किये जा रहे हैं। इसके फलस्वरूप मछली को बढ़ती में तुलना और प्रकट बढ़ती तथा शास्त्रीय आनुवंशिक विकासों में अनुपल्ल में विश्लेषकों (traits) (अर्थात प्राकृतिक परिवर्तन न होने वाली विश्लेषकों) का परिवर्तन संभव होता है। आनुवंशिक अभियांत्रिकी द्वारा परिवर्तन के लिए विद्याप्रारंभिक विशेषताओं में बृद्धि, पोषण आदि, रोग प्रतिरोधता, चर्म रोगों को सहायता और सुरक्षा सम्बन्ध में है।

मत्स्य आनुवंशिक अभियांत्रिकी का प्रकाश

पालिमेट और उनके सहकर्मियों ने वर्ष 1982 में यह निर्देशन किया कि आनुवंशिक अभियांत्रिकी के फलस्वरूप कर्मचारियों की निलंब दर में प्रकट मात्रा में बढ़ती हुई और इस के उपरांत मत्स्य आनुवंशिक अभियांत्रिकी लोकप्रि
होने लगी। बाद में गुणवालों वाले प्रजातियों (strains) के विकास के लिए, चुने गए पारंपरिक प्रजनन प्रक्रियाओं की कठिनाइयों के एक विकल्प के रूप में इस तकनीक का प्रस्ताव किया गया। 1990 के अंतिम दशक में जीनोमिक हल्के जीन पिच्वर्ग (gene mapping) का अनुसंधान विस्तार हुआ। कई मछली जीनों और नियामक अनुवर्गों (regulatory sequences) का प्रयोग और बिल्कुल किया गया और आध म मध्य जीनोम और भी विस्तार 2002 तक हो गया।

जीन स्थानांतरण का सबसे पहला सफल तरीका "अनुवर्गिक अभियांत्रिकी" का नियमण वर्ष 1985 में चीन में शुरू और इसके बाद कई अन्य देशों में भी इस तरीके का सफलतापूर्वक प्रयोग किया गया। अधिकांश कार्य वृद्धि (आकार व तरंग) के होमोजी के विकास के केन्द्रैत करके किया गया। इसलिए एक घरेलू जैविक परिक्षण के आधार पर ट्रांसजेक्टीन मछलियों में (अंतर्जातिक सालमन) वृद्धि को बढ़ाया देने के लिए सात जीन और मछली वृद्धि के कारण चीनों का प्राप्ति अंतर्जातिक सालमन का बीत जल में दोनों वाले गायब रास (temperature range) बढ़ाने के लिए इस में विंडर फॉर्ट मछली की एंडोजीज़ प्रोटोट जीन का प्रयोग किया गया था। रासिलों को अपेक्षा मछलियों में ट्रांसजेक्टीन का आसान से प्रयोग किया जा सकता है क्योंकि मछली अंडां का बाहरी निर्माण, अंडां (ova) के संग्रहण के उपयोग की कठिनाइयों के निकाय, उनका निर्माण और अंडां (embryo) को धारण गाया (foster mother) में रासिलों में स्थानीय से ही आसान से प्रयोग किया जा सकता है। ट्रांसजेक्टीन प्राप्ति की आवश्यकता एक फॉर्ट्से के समय देखा गया है बल्कि मछलियों में 10-70% सफलता की रिपोर्ट की गई है।

ट्रांसजेक्टीन प्राप्ति के लिए जालियों का प्रयोग

अध्ययन का स्वरूप और सुविधाओं की उपलब्धता के आधार पर अनुवर्गिक मछली जालियों का चयन किया जाना चाहिए जानकार सुविधा एक प्रमुख संस्थान है और ट्रांसजेक्टीन प्राप्ति के लिए मुख्य भारतीय कार्य, कोचम कार्य, वाइरस कार्य, चेनल केटफिस, सालमन, ट्राउट और तिलैयाज़ जैसे खाद्य होय मछलियों को क्षेत्रिकता मछली के रूप में चुन लिया जाना है। कई सूचनाएं प्राप्त हुई है कि वर्ष 1980 के अंतिम वर्षों से लेकर अंतर्जातिक सालमन, ट्राउट, कोचम, गोद्द पिया, भेड़ा, जीव फिश और लोंग मछलियों जैसे ट्रांसजेक्टीन मछलियों के स्वाभाविक प्रयास हुए थे। समृद्ध खाद्य मछलियों जैसे टूना, फॉन, समृद्ध बैल, समृद्ध बीयर, पोम्स और ड्राइड बैये
में ब्रह्म होमन के जोन अनुकम का कारण निकाय गया है।

जीन स्थायानार्तम का नीति तथा अभिलक्षण

विशिष्ट होनेवाले भूमिका के सभी केरे में द्रूणकी स्थायी रूप से एकमात्र रहने के लिए बढ़ते जीनों में जीन दोहर का प्रयोग किया जाना चाहिए। जीन को मछली भूमि में स्थायानार्तम करने के लिए वह तरीके जैसे मासोगोनेस्कस, इलेक्ट्रोपेमेश्वर, रिट्रोप्लाजस के अंतर्गत, प्रतिबंधित प्रकाश, प्रतिबंधित प्रकोष्ठ संबंध उत्पादन है। जीन स्थायानार्तम के सभी तरीके प्रथमचर्चा न होने को वजह से सफलतापूर्वक द्रूणकी मछलियों के पांचक के लिए इसे संस्थापन करते अंतर्गत उच्च तरंग विकार किया जाना चाहिए। द्रूणकी का अनुकूल सुनिश्चित करने के लिए दोट, स्कोट विस्कोयस, स्कोट विस्कोयस और यसी आर (पोलिमर चेन रिचार्ज) कुछ उचित तकनीक हैं।

द्रूणकी मछली की शक्य आपसीयति

डी एन ए के इंसेंट या द्रूणकी के संदर्भ में हो एक एक का लोक मुक्त पदक नहीं है क्योंकि खास के रूप में उपभोक्ता डी एन ए का पात्र के दौरान न्यूक्लियाइड से घर उपयोग (hydrolysis) से जाता है। लेकिन आप द्रूणकी संसाधन तो संभवतः बन जाएगा। अन्य द्रूणकी की पुनरुत्थान होने पर प्रतीयो जीव या प्रभावित जीव पर हानिकारक प्रभाव पर जाएगा। इस के लिए एक सुझाव यह है कि द्रूणकीय खास यथा मछलियों के उपयोग के लिए जोन-पिंसियन (मछली से कुचल होना स्वभाव के वैवध या मैटलियोमियन वर्गों का उपयोग होना चाहिए जाना है।

आप एक नया प्रोटोटिप पत्रक सीधे जारी या मछली के विविध प्रोटोटिप का सार कहाँ जाता या ती उपयोग तारी की एलेंगिनिंग का समस्या बन जाएगी। आप द्रूणकी का वासिक खाना को दीसे तक जीव नहीं को तो इस से और भी समस्याएं उत्पन्न हो जाएगी। कवच मछली का प्रोटोटिप टोपिकल रूप से उपयोग करना नहीं किया जा सकता क्योंकि कवच मछली के प्रति विमुक्तता (allergy) होने वाला को इस से स्वास्थ्य में हानि होने की गुंजाइश है।

द्रूणकी मछली के चार्ज पर धारण रखना अनुसरण प्रमुखता का बात है। आप किसी भी प्रकार से द्रूणकीय जीव व्यस्त नहीं है तो खाद्य सुसंग के लिए यह आश्चर्यजनक हो जाएगा। यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि जीन उपयोग से अलग मछली के जीवन चक्र के दौरान उपयोगी या शरीरार्क्तयास्पद प्रक्रियाओं में प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ जाते हैं।

यह भी चिंता का विषय है कि सामान्य तौर पर सुरक्षित मछली गतिविधि में शांत जीवन जीन प्रस्तर (quiet-toxicogen) होने की संभावना है। इस से द्रूणकी मछली विकुलता जीन, जो आम तौर पर प्रक्ष नहीं होता, के प्रति प्रभावित होने की साधनता है। जो भी हो, सामान्य खाद्य स्वास्थ्य मछलियों में जीवन बहुसात्त्व (exogenous) होता है और मछली जीन द्वारा उत्पन्न नहीं है।

द्रूणकी मछलियों को पूरे सार में प्रवर्धन करने पर होने वाले प्रतिक्रियाओं पर वांछित पर अभी तक कोई परिक्षण नहीं किया गया है। इस बाबत से बलतम ज्ञानकारी के अनुसार आलम में उनके दौरे प्रस्तर के अलग-अलग प्रतिक्रियाओं पर प्रभाव का मुख्य है। फिर भी, दृष्टि से यह सुझाव है कि प्रकृतिक संसाधनों के साथ द्रूणकीय मछलियों का प्रश्न करने पर उनके साथ निर्धारित होने की संभावना होती है। चारण द्रूणकीय मछलियों का अन्य रूप से प्रश्न करना अनुमोद्य है।

निर्देश

जीवनी की क़ृषि के विकास के प्रसंग में आन्तरिक अभिलक्षण का अन्य का विकास मुक्त दो विधानों अथवा निर्धारित (क) प्रोटोटिप की गतिविधि और (ब) खाद्य सुसंग, व्यवस्था में इस लक्षण के बायनीक्षण के मार्ग पर मछली स्वास्थ्य का रहस्य, जीन अभिलक्षण का सारण तस्वीरी तकनीकी संपर्क करें। खाद्य सुसंग के दृष्टि से, आप द्रूणकी जीवन में अन्तर्में (infectious) होती है, अगर मछली स्वयं हो और आप द्रूणकी उपयोग सुसंग होते हों तो द्रूणकी मछली पैतृक मछली (parental fish) के समान ही सुसंग है, इस में संदेह नहीं है।
भारत की महाविद्यालय मात्रियोंकी संपदाएँ

इ.जी. राणाकुमार और मेरी के. मानिशकोरी
केंद्रीय समुद्री मात्रियोंकी अनुसंधान संस्थान, कोलकाता

आमच्छ
मुख्यभावना और कौन्ते समुद्री खाद्यों मे महाविद्यालयों हि साधनामत: खाद्य महाविद्यालयों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। ये एक प्रमुख निर्यात माल है और हमारे देश मे जीवंत अर्थव्यवस्था मे भी इसका नियात किया जाता है। अंतर्राष्ट्रीय बाजार मे इसकी उच्च मांग और आकर्षक दाम आकर्षक इसका विद्युत बढाने का कारण बन गया है। इस बहुव्यतीत और बहु संभार मात्रियों मे दोनों, पंक्तिकरण और चंद्रमुक्त सेक्टरों का समिक्षण इसके प्रभावी प्रचार मे समस्ता के ख़िवरी करती है।

उपाध्याय
भारत के वर्ष 1991-2001 अवस्था के महाविद्यालयों का कुल वार्षिक अवतारण चित्र - 1 मे प्रस्तुत किया है। इसकी मात्रियों वर्ष 1965 के 347 टन से 1975 मे 2991 टन और 1985 मे 4083 टन तक बढ़ गयी और इसके बाद अब तक का वार्षिक उत्पादन 2400 टन के आसपास उत्तराधिकार रहता है।

भारत मे महाविद्यालयों के अवतारण का गणनीय भाग उत्तर पश्चिम, दक्षिण पश्चिम और दक्षिणपूर्व दीर्घ है। वर्ष 1996-2000 के दौरान गुजरात, और महाराष्ट्र समाविष्ट उत्तरपश्चिम सेक्टर ने कुल अवतारण का 69% चित्र - 2 गुजरात मे 1996-2000 महाविद्यालय अवतारण (2)

चित्र - 3 महाराष्ट्र मे (1996-2000) महाविद्यालय अवतारण (2)
भारत की महाचिंडंग मात्रिकी संपदाएं

इ.व. रायाकृष्णन और मेरी के. मानिशकसी
केंद्रीय समूद्री मात्रिकी अनुसंधान संस्थान, कोलकाता

आयुष्मन

भूमिका और कौन्सल समूह के खाली में महाचिंडंगों
विशेषत: शूली महाचिंडंगों का महत्वपूर्ण स्थान है। ये एक
प्रमुख निर्माण माल है और हमारे देश में जीवन अर्थक्षेत्र में
भी इसका निर्देशक रоль निभाता है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में
इसके उत्पाद मांग और आयामिक समय आजकल इसका
विस्तार होने का कारण बन गया है। इस व्युत्क्रम के ऊपर
वर्तमान मात्रिकी में दोनों, परिपक्वता और अधिकृत
शेड्यूल का सम्बन्ध इसके प्रभावी प्रभाव में समयांतर
ढी करती है।

उपयोग

भारत के वर्ष 1991-2001 अवधि के महाचिंडंगों
का कुल वाणिज्यिक अवकाश चित्र - 1 में प्रस्तुत किया है।
इसकी मात्रिकी वर्ष 1965 के 347 टन से 1975 में
2991 टन और 1985 में 4083 टन तक बढ़ गईं और

चित्र - 1 भारत में 1991-2001 के दौरान कुल
महाचिंडंग अवकाश (ट)

इसके बाद अब तक का वाणिज्यिक उपयोग 2400 टन के
अस्तित्व उल्लूरु तरी है।

भारत में महाचिंडंगों के अवकाश का गणनीय भाग
उत्तर पश्चिम, दक्षिण पश्चिम और दक्षिणपूर्व तरी है।
वर्ष 1996-2000 के दौरान गुजरात, और महाराष्ट्र
समस्तिक उत्तरपश्चिम शेड्यूल ने कुल अवकाश का 69%
चित्र - 2 गुजरात में 1996-2000 महाचिंडंग अवकाश
(ट)

चित्र - 3 महाराष्ट्र में (1996-2000) महाचिंडंग
अवकाश (ट)
योगदान प्रदान किया। इस अवधि के दौरान गुजरात से ओसल वारिक पकड़ 1110 टन (चित्र-2) थी और महाराष्ट्र ने 659 टन (चित्र - 3) का अवतरण किया। वर्ष 1996-98 के दौरान केंद्र में महाराष्ट्र अवतरण 147 टन था।

चित्र - 4 केंद्र में (1996-2000) महाराष्ट्र अवतरण (ट)

चित्र - 5 तामिलनाडू में (1996-2000) महाराष्ट्र अवतरण (ट)

चित्र - 6 2001 दौरान के महाराष्ट्र का राज्यवार योगदान (कुल पकड़ : 1389 ट)

वर्ष

300 400 500 600 700 800 900 1000 1100 1200 1300 1400 1500 1600 1700 1800 1900 2000

2001

2000

1999

1998

1997

1996

वर्ष

केंद्र 19%
महाराष्ट्र 36%
गुजरात 29%
अन्य 4%
त. ना. 12%

महाराष्ट्र के एक अवधि के दौरान अवतरण, 1999-2000 के दौरान ग्रीष्म सागर महाराष्ट्र के अवतरण के फलस्वरूप पकड़ 524 टन में बढ़ गयी (चित्र-4). इस पंच वर्ष के अवधि में तामिलनाडू का ओसल वारिक अवतरण 404 टन था (चित्र-5). कर्त 2001 के दौरान के महाराष्ट्र का राज्यवार अवतरण चित्र-6 में प्रस्तुत किया गया है। कुल अवतरण का 65% महाराष्ट्र और गुजरात का योगदान है।

जैविकों और मालिकों

भारतीय तट पर महाराष्ट्र की 14 वेलोकली (टटीपेप) और 6 ग्रीष्मसागर जलाली होने पर भी वालीनियल मालिकों में केवल चार तटीय और एक ग्रीष्म सागर रूप ही मिलती है। उत्तरपश्चिम तट की मालिकों में शूली महाराष्ट्र गुजरात सिंहली (फंक गुजरात महाराष्ट्र) और तिमाख महाराष्ट्र थंसर ओरियन्टलिस्ट्रिक्स प्रमुख हैं जो 20-50 मी की गहराई में बसते हैं। दक्षिण पश्चिम तट पर 1-10 मी के गहराई रेंज में रुहेंसियन (णो) गोमरार प्रमुख जलाल है जबकि दक्षिणपश्चिम तट की मालिकों में गोमरार ओरियन्टलिस्ट्रिक्स, ओरियन्टलिस्ट्रिक्स, गोमरार ओर गोमरार का काल्पनिक होता है। गोमरार के अर्धधर्मिक भी अन्तर्गत में तिमाख-गुजरातिय और चेड़ियां तट पर खालीज जाता है। मालिकों की दृष्टि में गोमरार अन्य जलाली चैलेंट (गुजरात), पेनसिल्वानियन, ओरियन्टलिस्ट्रिक्स और लोरियन। प्राट्रल स्तर प्राट्रल प्राट्रल ओरियन्टलिस्ट्रिक्स 40-50 मी के गहरे तटों में उबरी है जबकि विकासी और उप ग्रीष्म जलाली की उपत्यका के बीच में रेंज नहीं जाती है। शूली महाराष्ट्र पूर्वलोकनर्शिक्स गोमरार सिंहली और गुजरातपूर्व तटों में 175-200 मी गहराई के बीच उपर ग्रीष्मियों की घराल (उपरी अंतर्गत) (अंतरराष्ट्रीय नदी) में रहती है जो से उनको ग्रीष्म सागर फ़ानी के साथ आत्मा या अन्य फ़ानी का और एक जलाल है जिसका साथ ही साथ ओरियन्टलिस्ट्रिक्स और निरोगित वायाबार में गोमरार 'डलार' नाम से और अन्य जलाली 'यूने' नाम से जाने जाते है। महाराष्ट्र पकड़ का 75% पिक्टॉल केलिंग प्रचलित करने वाले आयामों में प्राव
आंद्रेस पिप्पो (pleopods) के अंत: पायल्स से लगे रहते हैं और 20-25 दिनों के उपवर्त्क तक सबसे अधिक वालों से बाहर आते हैं। फिलिस्टोमा डिम्बक तंत्र में पाखड़ अंश वाले क्षेत्रों में आ जाते हैं। अधिक आंद्रेस में फिलिस्टोमा डिम्बक पर्यावरण प्राप्त करते हैं और उद्धारी क्षेत्रों में जा कर बसते हैं। हॉमेगास के बिल्डर समुद्र के लंबे क्षेत्रों में रहते हैं और ओरस, गाय के क्षेत्रों में जा कर मास्टिकों में अभिव्यक्त हो जाते हैं। डो. ओरियन्टालिस 124 मिः. मी. की कुल लंबाई पर प्राप्त होता।

इसके पुनर्नाल के जीविका पर मुंबई में बाधित गर्व अभिव्यक्ति से आगे तक तक विस्तृत अंदाजन काल व्यक्त करता है। नवंबर से जनवरी तक की अवधि में आंद्रेस और अंडिटिक अवशेष की अवधि की अभिव्यक्ति भी सूचित करता है। डो. ओरियन्टालिस को जनमान्य किया गया बल्कि डिम्बक का छोटा (45-50 दिनों) होता है। अधिक कार्यार्थ के बाद पर्यावरण अभिव्यक्ति क्षेत्रों में रहने लगते हैं।

उल्लंघन प्रांत में चिड़ियों के लिए प्रभावित आबादी जालों में माहिंगाइट आकस्मिकायण पड़ते जाते हैं। ऐसे प्राप्त पक्ष में 45% डो. गोलिफ़ार्स और दो化疗 डो. ओरियन्टालिस होता है। मुंबई में 1978-85 अवधि में
रामेश्वरम से पोटर कलिमार के छोटाकुल दक्षिणपूर्वी तट शहय भारतिय रस्ता के मालिक या अधिकारी निवास के रूप में द्वारा जाते हैं। यहाँ द्वारा जलों से अपनाये महाविद्यालय में फा. औरनाटक प्रमुख है। यहा द्वारा जलाल और दूसरे मार्गों के जीएस महाविद्यालय का अभ्यर्थक किया जाता है। 1973-85 के दौरान अपने वाणिज्यिक पकड़ 11 घंटे। वर्ष 1994-95 में छह आवार्डों में 124 हजार महाविद्यालय का अभ्यर्थक किया जिसमें 94% ती. अभियोजन के और 64% दूसरे मार्गों के जीएस महाविद्यालय की पृष्ठभूमि में लंबाई 21-100 मि. मा. के रेखा में वो जिसमें लंबाई 50% 35-45 मि. मा. के आवार्ड को वो मिलाया गया गिर्ने का श्रेणी बनाए।

वाणिज्यिक मार्गों में नवीनता एकाधिक प्रकार जाता है या सिवाली। इसकी ओस्ट वाणिज्यिक पकड़ 1998-2000 के दौरान 524 घंटा मी. जिसका अभ्यर्थक कोशिश और शाक्ताकारण में उछा या अभियोजन वहीं की अभ्यर्थक परियोजना 8000 घंटा और पूर्वाञ्चल परियोजना 1200 घंटा अभ्यर्थक की थी। वो पाकते वो आकर्षी नीमसाधारण लंबाई है। वर्ष 1999-2000 में या. सिवाली की जीवनियों पर अपननी चलाये थे। इसका आवार्ड नर जीवनों में 76-80 मि. मा. 176-180 मि. मा. के रेखा में और मार्गों का मालिक 81-85 मि. मा. से 176-180 मि. मा. के रेखा में देखा गया। मार्गों में 26% पूर्व श्रेणाओं अंतरिक्ष युक्त अवतार में थी। वर्ष 1999-2000 के दौरान मौजूद में रामबार सागर महाविद्यालय, सिवाली और नेष्टोलिस्टों शिक्षाओं के अभ्यर्थक हुए थे। वर्ष 1993-94 के दौरान रुकावटित से या. सिवाली की पकड़ प्रति चाल 15 मि. या. की पकड़ दर में 90 घंटे थी। वर्ष 1997-98 के दौरान पकड़ 56 घंटा होँगी कम हो गयी।

प्रभाव निर्भर

उपरोक्त मार्ग में वो महाविद्यालयों का अभ्यर्थक अभ्यर्थक या. पोटर कलिमार की प्रभाविता के साथ उत्तर परियोजना तदे
रिपोर्ट के जाती हैं। प्र. पोलिटिक्स पर भाग हो में मुंबई में चलाये गये एक अभ्यास में आयुर और बढ़ती का निर्धारण संबंधी आँकलें के आधार पर किया था। मादा एवं पति दोनों में प्रमुख तीन सालों में बढ़ती एक समान देखी गयी थीं। जैसे प्रथम साल में 85 फी. मी., दूसरे साल में 145 फी. मी. और तीसरे साल में 205 फी. मी.। इसके बाद मादाओं की तुलना में नर तेज़ बढ़ते है और पोलिटिक्स के अंत तक 265 फी. मी., पांचवें साल में 315 फी. मी. और छठे साल में 355 फी. मी. तक बढ़ते हैं। लेकिन मादाओं के 4 से 8 तक के सालों में रक्त 255 फी. मी. 290 फी. मी. 320 फी. मी. 345 फी. मी. 365 फी. मी. की लंबाई प्राप्त हो। हिस्सा उतारने का प्रक्रिया का बाहरी अधिक दृष्टि आय बढ़ते पर खिलक उतारने का अवधि लंबी हो जाती है तथापि हिस्सा उतारने का प्रक्रिया कम हो जाती है।

किसिमें जोड़े में अवधि छोटे आकार के किफ़ासों की मालिकाओं में प्रोत्साहित करने का श्रृंखला होता है। कुल आकलित प्रभाव 453 टन, खरी क्रेडिट 271 टन और अधिकांश बहनोप प्रकार 168 टन आकलित की जाती है।

चर्चा

आज भारत में महाविद्यालयों के मत्स्य में निर्धारण लाने के लिए कोई प्रचारकों की विनियमन लागू किया गया है। निर्धारण आकार के महाविद्यालयों की प्रकार, संस्थाओं और पति भौगोलिक में प्रकार आदि के लिए कोई प्रतिबंध या रोक नहीं है। सीतासौं और उपमान दोस्तों की एकाल-जातीय मालिकाओं के विपरीत भारत में महाविद्यालय मालिकाओं की व्यावहारिक संरचना और प्रपात में व्यापक भौगोलिक संबंध स्थिरित प्रकार के संबंधों से कुल होता है। महाविद्यालयों के उच्च स्तर से प्रस्तुत होकर मूल प्रकार का सीमांकन किया जाता है। इससे कुछ और प्रकाशीय कार्यान्वयन सौंपी है, सामाजिक और आर्थिक पहुँचों पर अविचारणीय विवाद करना है।

उल्लंघन वैज्ञानिक सूचना यह व्यक्त करता है कि उत्तर पश्चिम तट पर शूली महाविद्यालय थी। पोलिटिक्स और सितारा महाविद्यालय डी. आर्कन्ट्रालिस का अविचारित किया जाता है। भारत की वर्तमान महाविद्यालय प्रकार कम न्यूज़ी ने फर्कने सहित 1985 के प्रकार का केवल 58% है। मुंबई में 1996-2000 के दौरान जोखिम अवलंबन 1986-90 के व्यापार के तुलना में परमाणु यंत्रों से समान नहीं है। दृढ़कार्यों में महाविद्यालय अवलंबन का 43% आया होता है और यह भी उत्तर पश्चिम की जैसा स्थिति मौजूद है। आया एवं एक उप-प्रकार के रूप में महाविद्यालय प्रदान हो जाते हैं और विधान यह है कि केवल इस संस्कृति के मत्स्य में रोक नहीं लागू हो जा सकता। लेकिन भील जाता, ठोक जाते, ठेक जाते और ध्वनि कार्यों (काफेज जाते) से तदनुचित नतीजों में निर्यात किया जा सकता। इस ध्वनि प्रमाण के शुरुआत में अज्ञात दोषियों का भारी विधान मालिकाओं में प्रविष्ट प्रवाह आता है।

दीपवालि की वजह है कि अधिकांश के में उच्च प्रमाण कारण और मत्स्य का श्रृंखला एक ही होता है। उपरोक्त समुद्रों की एकजुटी मालिकाओं में प्रवाह काल में भौगोलिक प्रकार रोध का सकल कार्यान्वयन किया गया है। 

प्रश्नान्वयन और उपरोक्तता के अनुसार भारत में महाविद्यालय के प्रकार, संस्थाओं और क्षेत्रों की विनियमन लागू होता है। भारत में महाविद्यालयों के लिए उच्च मौजूद है। इसके अलावा महाविद्यालयों का प्रकार भी विवाद करता है जबकि उपरोक्त दोस्तों में उन व्यक्तियों के मत्स्य एवं निर्यात के मामले में कटा निर्धारण लागू किया गया है। भारत की ऐसी स्थिति महाविद्यालय संस्कृति में पूरा प्रभाव आती है। इसके दौरान महाविद्यालयों की निर्माण के साथ उपलब्ध के लिए नियमान्वयन 2002
मछली की झिल्ली से कृत्रिम त्वचा विकसित

कोश्ची के वैज्ञानिकों ने मछली की झिल्ली से कृत्रिम त्वचा विकसित करने का दर्शन कराने हेतु कहा है कि इसका उपयोग जलीय शरीरों के प्राचीन को ठहराने के लिए दक्ष-धार वोल्पा के रोगों के इलाज में भी लिया जा सकता। केंद्रीय खुल्दी की वैज्ञानिक संस्थान (सीआईसी) जो खिलाफ उनके अनुसार मछली के एक श्रेणी के कालालकिन और दूरी के जलों के बाहर की झिल्ली से इस कृत्रिम त्वचा को तैयार किया है। पृथ्वी देखते ही जलों के झिल्ली के रोगों के मार्ग से इस कृत्रिम त्वचा को घात नहीं देने जा सकता। केंद्रीय खुल्दी की वैज्ञानिक संस्थान के अनुसार, एक साथी जलों के झिल्ली की उपस्थिति को लेने करने में मदद करती है।
समुद्री मालिकियों के दौरान भारत में समुद्री मालिकियों के विकास के लिए कुछ नीति विकल्प

अर. सत्यदास और आर. नारायणकुमार
केंद्रीय समुद्री मालिकियों की अनुसंधान संस्थान

समुद्री मालिकी के अर्थ व्यक्ति का एक मालयुग़ों भाग है। भारत की अन्य आर्थिक में 2.02 मिलियन वर्ग वर्ता स्थान, जो देश के भूमि क्षेत्र के दो-तिहाई भाग होता है, तक विस्तृत है। शाखा उत्पादन में बढ़ते हुए द्वारा के साथ साथ भारत जैसे प्रवासीरीति देशों में भविष्य में मालिकी के खाद की पूर्ति होनी चाहिए। पोषण पुष्टि खाद के विषय के अन्तर्गत यह तन्त्रीय नेत्रवर्त जैसे प्रवासीरीति में बसने वाले लागभाग 75-78 मिलियन लोगों और सम्प्रदायकता सेक्टर में कार्यरत इसी संख्या के लोगों की जीवन की सुकृति सुनिश्चित करता है। निर्माण क्षेत्र में समुद्री उद्योगों के निर्माण में सूचना वित्तीय मुद्रा 6,000 लाखों रूपये (2000-01) आकलित किया गया है। यह सेंटर पिछले पांच दशकों के दौरान जीवन-निवास के लिए मालिकी की अवधारणा से उभय के रूप तक बढ़ गया। यह विकास क्रान्ति-पीड़ा मिश्रण निम्न विशेषज्ञता तथा मोटरीकरण सम्बंधित है, विशेषतः तीव्र मस्तिष्क तंत्रों के और मालिकी संबंधों के विकास से संबंध हुआ। मालिकी क्षेत्र जी दी-पी के 3.1 त्रिपटोम योगदान करने पर भी योगदान का अवबृत्त बहुत रहा था, जो भी नवी वर्षीय योजना तक कुल लागत का 0.3 प्रतिशत था। वातावरण में इस समुद्री सेक्टर के विकास के लिए निष्ठा का पर्याप्त आवंत किया जाना चाहिए।

समुद्री मछली उत्पादन वर्ष 1950 के 0.5 मिलियन टन से वर्ष 2000 में 2.70 मिलियन टन तक बढ़ गया है फिर भी सभी प्रकार के मस्तिष्क एक का प्रतिशत उत्पादन वर्ष-वर्ष घट गया।

यद्यपि इस कारण से हुआ है कि हर मछली आसा और मस्तिष्क लागत के बीजगा का आय मिले तक लागतार मस्तिष्क करा रहा है। अतः 50 वीं गायक के अंदर मस्तिष्क बेंझा द्वारा किए गए वातावरण मस्तिष्क पर रोक लागा जाना है।

इसके अन्तर्गत, मस्तिष्क सेंटर के अंदर प्रति सीवी मछली आसा प्रतिवर्ष औसत उत्पादन में अपवीत्र क्रांति तथा परिवर्तन परिवर्तन से 332 किलो. और तंत्रीय योगदानों के परिवर्तन से 9,870 वर्ष. आकलित किया गया। दोनों के बीच का यह अंतर जीवन-निवास के लिए मालिकी की अवधारणा से उभय के रूप तक बढ़ गया। यह विकास क्रांति-पीड़ा तथा मोटरीकरण का संबंध है, विशेषतः पूर्ण मस्तिष्क तंत्रों और मालिकी संबंधों के विकास से संबंध हुआ। मालिकी क्षेत्र जी दी-पी के 1.3 प्रतिशत योगदान करने पर भी योगदान का आवंत बहुत रहा था, जो भी नवी वर्षीय योजना तक कुल लागत का 0.3 प्रतिशत था। वातावरण में इस समुद्री सेंटर के विकास के लिए निष्ठा का पर्याप्त अवबृत्त किया जाना चाहिए।

वातावरण में, समुद्री मालिकी क्षेत्र लागत 10.25 लाख मछलीयों को सीवी मस्तिष्क में रोजगार प्रदान करता है जिसमें 80% मछली लोग परम्परागत क्षेत्र में कार्यरत हैं। फिर भी वहाँ ही अन्तर्निहित रूप से रखता है वर्तमान मस्तिष्क क्षेत्र में वेबस्ट तीव्रता को समस्तता तौर पर मौजूद है। मोटरीकरण के अतिरिक्त, उत्तराखंड मालिकी के प्रयोग के न्याय के अंदर भविष्य की योजना में इन लोगों का प्रवासीरान कारण और
पून्यार की कारणांतर्गत वर्तमान कृप्ति आवास तंत्र के अंतर हो की जानी चाहिए।

लघु पृष्ठांक के बाहरीकृत संकेत में उपलब्ध में अवरूप प्रतिबंधित किए जाने वाले बड़े आकार के बंदीकृत पात्रों में कृप्ति पारिवार के अपलब्ध क्षेत्रों में परिचय दिए उपलब्धता करते उपलब्ध में भविष्य का अनुसरण किया जा सकता है। पार्थर ही यह आकलन किया जाता है कि देश के बंदीकृत संकेत में 56 प्रतिशत आवश्यक क्षेत्रों में आवासित व्यक्तियों ने किन्तु उपलब्ध उपकरण के लिए किया जा सकता है।

माल्यीकृत संकेतों के लेख विवाद की बजाय से कृप्ति मालिक जातियों किमुक्त हो गई है। अतः मालिक में पून्विभाग के लिए व्यवस्थित उपयोग देखना और अमल में लाना आवश्यक है। हमारे तरीके सामुद्र में उद्ध यूरुप वाली मल्ली जातियों का समुद्र रैली करने से अगली योजना के दौरान मल्ली राजनीति की वृद्धि और बेहतर उपयोगकर्ता हो जाने की प्रायोजना है।

अन्तर्देशीय कृप्ति अनुमोदन पर पत्रांकर बुध (CIARI) की रिपोर्ट के अनुसार यह आकलन किया गया है कि समुद्र जोम कृप्ति मानव आहार के लिए आवश्यक सभी मालिक का 40 प्रतिशत और और्जीकृत मल्ली एक्स के मुख्य के आधा बाल्य और अधिक प्रदान करेगी। अतः दसमी योजना में पालन के लिए अनुमान मल्ली जातियों को पहोचनार नए मल्ली कृप्ति के लिए इन जातियों के पालन की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त शासन उपाय के तरीय समुद्र में खाना, मोटी, बादल शुष्कतर्कों और अन्य पताकोय वाली जातियों के युग सार्थक संज्ञान के लिए भी दसली योजना में आवश्यक थी जो भारत में ही ही निर्माण संचालन से उपयोग बढ़ाना जा सकता है और इसके अतिरिक्त मल्ली के लिए राजनीति और और्जीकृत मल्ली की पूर्णता ही हो जाएगी।

मल्ली उपयोग के लिए खुले मार्ग में कृप्ति भिन्नतियाँ की व्यापक अरूप सामग्री और अनुयोग्य देखा गया है। पर्यावरण नीतियों के सहारे से इसकी स्थापना को पूर्वानुपालित किया जाना चाहिए। हाल ही में तिब्बताकृत और कन्फ्राौकारी तटों में 31 कृप्ति भिन्नतियों का भांत है और इससे मल्ली व्यस्त भी अलग तरह होती है। उत्तरायण ञाश्य मालिकी से उपयोग और उपयोक्ता बढाने के लिए यह सहायक निकलेगा। इसी योजना में इन प्रयोगों को पूर्वानुपालित दिया जाना चाहिए।

हमारे तरीय समुद्र के प्रमुख स्थानों में क्षेत्राधिकारियों और किस्मतियों की प्रमुख जातियों के पंजार पालन के लिए आवश्यक प्रभावित काम उल्लिख है। तरीय पंजार पालन कार्यक्रमों के लिए पर्यावरण विविध सृष्टि और नीति सहायता आवश्यक है।

भारत की अनुमान आवश्यक में सामाजिक 9.32 फिलिपिन टन के अंतर्गत मालिकको संसाधनों में से उपयोग के लिए 2.2 फिलिपिन टन संसाधनों का पूरा तत्त्व अर्थ चुका है और एक अपात तत्त्व गार सार्थक की मानव से अंतर विवाह की प्रायोजना है। इसकी 1.72 फिलिपिन टन मल्लीयों को काम में लाने के लिए ग्रामीण सार्थक स्थान (DSP) की नीति आवश्यक अमल में लाना आवश्यक है। अतः ग्रामीण सार्थक मालिकी नीति का अभाव समुद्री मालिकी की वृद्धि के लिए हानिकारक है और इसी विवाह के द्वारा एक स्पष्ट नीति का कार्यान्वयन किया जाना चाहिए।

भारत जीव विविधता से समुद्र देश है। भारत के मानव खोदी, पक्ष उपासक, कृषि की खानी, आकाश और निकोदेम उष्मा और लघु मार्ग सामुद्र में मैन्यू तथा व्यवस्थापन भिन्नतियों को स्वस्थ में आयोजित है। अधिकारियों शासन और विवाह योजना के विवाह पूर्ति से इस भुगौर आवस्था व्यवस्था की सही हो जाती हैं। पर्यावरण विविधताओं से समुद्र सेवाओं का आलापन करके संस्करण कायरों की घोषणा, समुद्री पतंगों की स्थापना, जीववंत रक्षक स्थान और राज्यी सुरक्षा योजना को स्थापना करना आवश्यक है।

समुद्री मालिकी संकेत से वर्ष 2000 के दौरान
मस्तन आंगारों पर 4200 करोड रुपए का निजी निवेश आरक्षित किया गया है और अवकाश केंद्रों में 10486 करोड रुपए की मछली पकड़ने जाती है। इस आकलन से 2.5 का बाहित रुपये उत्पादन अनुपात (ICOR) स्पष्ट हो जाता है। इस से, आगामी वर्षों में समूद्री मछलियों और तटीय मछलियों का एक और राज्य सरकारों के स्वायत्त निवेश के बाहर साधनों का संकेत मिलता है।

कुल मछली पकड़ से, मछलियों का आयात बढ़ता जा रहा है। भौगोलिक रूप से यह आकलन किया जाता है कि लगभग 25 प्रतिशत पकड़ को बेचने के रूप में व्यापस छोड़ दिया जाता है। इस संदर्भ में एक उदाहरण है। भारत में हो गई है। वर्षों में शुरू हुए बखूँ-विस्तारी मछली पकड़ के परिणाम से ले कर छोड़ देने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। समूद्री मछलियों के लक्षात्मक विकास में इसका अंतर पड़ जाएगा।

अंतर मछलियों के संक्षेप संगठन और इस संगठन में पररेड और अंतिक नियंत्रण काम करने और संगठन की सीमित निरंतरता के लिए छोड़ देनेवाली मछलियों के अवक्षण बीत तथा पारंपरिक खराब और मछलियों संक्षेप परिवर्तन के बारे में मछली समुद्रों के बीच विस्तार अभावों के आयोजनों से उनमें पर्याप्त जागरूकता जगाना आवश्यक है।

समूद्री मछली विज्ञान में, भारतीय टेट के 8129 जी में सितिस 2244 से उत्पाद अवक्षण के द्वारा प्रामाण्य विज्ञान केंद्रों की भूमिका निभाते हैं। प्रामाण्य रूप से पररेड मछली पकड़ की प्रमुख बुद्धि निर्माताओं की भूमिका निभाते हैं। प्रामाण्य रूप से पररेड मछली पकड़ की प्रमुख बुद्धि संगठन के लिए मछली पकड़ में हुए परिवर्तन और इस क्षेत्र में उत्सर्जन वेतनाल की वजह से साथ ही गया। इसके फलस्वरूप ग्रामीण वातावरण की प्रमुखता कम हो गई और ग्रामीण उपभोक्ता को अधिक भूमि के कारण अपनी अभिविलय की मछलियों की उपेक्षा करनी पड़ी। इसलिए गरीब ग्रामीण मछली वातावरण के विकास और गाँव के अंतर के भागों तक बाजार में पहुँचने की ओर प्रायोजित की जानी चाहिए। बाजार केंद्रों में शौकिकरण/ बहस प्लांटों और कॉल्ड टाइमिंग को स्थापना से मछली बढ़ता के बजाय अभिविलय पड़ने वाली मछलियों का संभरण करके बाजार में बेचने में सहायक बन जाएगा।

समूद्री मछलियों के संक्षेप संगठन में, दोनों पररेड एवं नियंत्रण वातावरणों में लगभग 12 लाख लोग कार्यरत हैं। इनमें से लगभग 5 लाख मछली मछलियों हैं, जो मछली खुदका, शीर्षों का छिलका उठाना और मछली खिल्ली में लगी हुई है। अग्र तो ये वेतन को भित्ति, नारी होने के नतीजे अनुमति व्यक्तित्व तथा बोधन जैसी सामग्री का समाप्त कराना रहता है। उन्हें सुयुक्तीत वातावरण में लगे हुए लोगों के बाजार मानना चाहिए और उनके कामों के लिए आवश्यक कदम उठाया जाना भी आवश्यक है।

नियंत्रण वातावरण पर ज्ञान निर्भर करने मछलियों के लक्षात्मक विकास के लिए अनुमोदन नहीं हो जाएगा। नियंत्रण वातावरण में किसी भी समय किसी भी वयस्क को अनमोल हो जाए तो मछली उद्योग में भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ जाएगा।

इसलिए नियंत्रण वातावरण के संक्षेप और आंतरिक वातावरणों की विपणन व्यवस्था के विकास की भी पूर्णता प्राप्त करने हेतु जानी चाहिए।

हमारे समूद्रीवातावरण में पूर्णता: हिमवतित कष्टी सामूहिक (लगभग 9%), समाधित सह-समर्थन इसमें पर्यावरण साधन का समय आ गया है। उन्दर विविधता और भारतीय समूद्री वातावरण में गुप्ता वेतन में और भी खुदका लाना आवश्यक है। अंतर हमारे नियंत्रण अधिक करने के लिए मछली उद्योगों का तथा उद्योगों में गुप्ता वेतन और गुप्ता का समय भेदात्मक करने के प्रयास को प्रायोजित दिया जाना चाहिए।

विदेशी वातावरण में विपणन हेतु नियंत्रकों द्वारा गुप्ता वेतन करने के साथ साथ तादु लेने के उद्देश्यों में भी गुप्ता वेतन पर तोर दिया जाना है। उर्दारूढ़वाय मछली उद्योगों में ही मछली अचार, वेजल, शुद्ध मछली, मायावी
और अन्य प्रकार के खाने के लिए तेलारी चीजे कूटी उद्योग
की तरह बनबाने का प्रोसेस दिया जाना चाहिए। इस से
पालंड्रोम बालरों में मछली एवं मछली उद्योग की उपयोगिता
बदल जाएगी और तदारा मछूआ कुट्टियों में रोजगार का
अवसर भी मिल जाएगा।

मालिकों उद्योग कई तरह के उत्पादों का निर्माण
करता है। झंगा उद्योग के उत्पादन के रूप में बनाए वाले
बेटेन तथा बेटेस्क ने प्रतिवर्ष 50,000 टन रूपये की
बिक्री होती है। मालिकों से उत्पादन किया जाने वाले सभी
उत्पादों को बिकिनक्षम, ओषधीय तथा सौंदर्य वर्धन उत्पादों
में प्रभावित ढंग से उपयुक्त किया जाना चाहिए। कुछ समूहों
मछली जानवरों जैसे तुल, समूही मशीन और संघ उद्योग
ओषधीय गृहपालिका है। इस आदा या इस शासन प्रणाली के
अनुसार इन संस्थाओं को नाम सुपा तेलारी बनाए और इन
संस्थाओं से उत्पादन किया जानेवाले ओषधीय प्रमुख उत्पादों
का पसंदीदा तेलारी करने के लिए आवश्यक नीति उपयोग इंडु
हितास जाना चाहिए।

देश में भारतीय मालिकों की गणना सन 1980 के
वर्षों में नहीं की गई है। मालिकों के विकास की शोकानों
के रूपान्तरण के लिए गणना आवश्यक महत्वपूर्ण सुझाव है। इस
लिए योग यथा के उत्तराधिकारी में एक केन्द्रीय मालिकों
अनुसंधान संस्थान द्वारा भारतीय मालिकों संघ की
आवश्यक गणना की जानी चाहिए। विभिन्न क्षेत्रों के विभिन्न
मालिक एकांकों के आवश्यक निर्धारण का बड़े पैमाने में
लगातार अनुबंधी, बाज़ार संबंधों का आधार, समूही
मालिकों का वातावरण स्तर का अनुसंधान और मछूआ
समूहों की समाज-आर्थिक विभिन्नताओं का आवश्यक आधार
भी जाना आवश्यक है। इस तरह के क्रियायुक्त अभियान
नीतिकांशों को भारतीय मालिकों की एक विस्तृत नीति के
रूपान्तरण में सहायक निकल जाएगे।

![Image](image_url)
समुद्री मातृकी की उत्पादन में अग्रणी राज्य गुजरात में मातृकी के विकास के लिए सुझाव

के.जी. सोमशोभन नायर और जॉ.के. किज़ौड़ा
सी एम एफ आर आई का वर्तमान श्रीमान केंद्र, वेशंभाल

भारत के समुद्री राज्यों में सब से लंबा समुद्री टट (1600 कि.मी.), सब से बड़ा समुद्री शीघ्र (1.6 लाख वर्ग कि.मी.) और सब से विस्तृत अन्य अभियान भूमि शीर्ष (EBZ) गुजरात में है। इस में सब से अधिक मछली को स्फोट करनी होती है। सात के दस घंटे में यह से कारकर 70,000 टन मछली प्राप्त होती है। यहीं इसके विवरण में इसका उद्देश्य संवरण करण, रक्षा तकनीकी, आत्मविश्वास और संतोष गुणों का मोटरीकरण आदि मल्प्रभु तकनीकी भूमि मुनाफा है। जो भी हो ये सब होने हुए भी नब्बे के दस घंटे में मछली पकड़ में उल्लेखनीय बदल नहीं हुई है। यह ही नहीं पकड़ की साधनिक, सिफारिश भी दी जाती है।

सी एम एफ आर आई का वर्तमान संस्था निष्ठुरण अभद्वन्य व्यापक है कि भारत के सत्ता परिवर्तन तरीके से सिलसिला रही रही मछली संपत्तियों का अनिवार्य हो चुका है। इसलिए मल्प्रभु मल्प्रभु व्यवस्था पर भी पकड़ की मात्रा बढ़ती आस नहीं है। गुजरात का मुख्य मल्प्रभु संपत्तियों जैसे बाल्कियों, फौजियों, सीनियों, सूर्य पक्ष और पैंटिङ्ड दुनिया भी इस में आते हैं। हाल के समय में गुजरात राज्य की समुद्री मातृकी को निन्दित किए गए जब तक है:

- तीव्र अति मल्प्रभु
- संपत्तियों में घटना
- पकड़ दर में घटना
- भारी में घटना

अनुमोदन निष्ठुरण रीति
आवास और संपत्तियों का अधिकार

मातृकी, संपत्तियों की शक्ति पकड़ के समाध्य में संस्थान द्वारा अब तक किया गया अक्कलन पकड़ी गई मछलियों की मात्रा और पकड़ पर आवास रीति है। इस रीति में उच्चतम वहाँ नियम (MSY) का आकलन पकड़ी गई, जानी मालि मछलियों और उसके परिप्रेक्ष्य मल्प्रभु घरानों की गणना करते हुए किया गया है। अभी के दस्तावेज में गुजरात की शक्ति पकड़ 3.3 लाख टन आकलन किया गया था, अब में इसका पुनरीक्षण करते हुए नब्बे के दस्तावेज की शक्ति पकड़ 7.7 लाख टन बनाया गया था।

स्वीकृति निष्ठुरण के लिए वित्त, विशेष दर और मातृकी के डाटा पर की गई आकलन रीति या मोडलिंग में उपयोगिताविश्व संपत्तियों के अभिव्यक्त जैसे निर्देशित फूटन, जैसे-जैसे में होनेवाली नियमकान्ता, चार-प्रत्यक्ष मल्प्रभु आदि को नकारा गया था। इसके अनुसार प्रक्रिया-पारिवर्तन तरीके आवास तंत्र पर किया गया मोडलिंग से अब यह व्यक्त हुआ है कि प्रथम आवास तंत्र से कितनी मात्रा का जेव संपत्ति का संस्थान कर सकते हैं। संपत्तियों के संरक्षण और विदेश पर प्रवर्धन रीतियों का दर में यह मोडलिंग उचित लगता है। इसलिए संपत्ति निष्ठुरण के लिए अधिक अनुमोदन रीतियों (मोडलिंग) का रूपांतर किया जाना गुजरात की समुद्री मातृकी के निर्देश विकास के लिए आवश्यक है। निर्माण परामर्श तंत्र में आवास और बहुत मल्प्रभु यंत्रों के अनिवार्य प्रवाह का संस्थान धर्माय लगता है। अब वर्तमान/ खराब से पीड़ित मालिम जातियों के लिए जीतें जो तिमिर सुरू.
मस्तांगां - 2002

समूही श्रैणि घरेलू उपचार के संबंध में

समूही श्रैणि घरेलू उपचार के संबंध में, व्यायाम की जरूरत और शरीयों के मामलों का उपयोग किया जाना चाहिए। कार्यक्रम के विभिन्न भागों में सहायता प्राप्त होने से सुनिश्चित किया जाया। जिसमें उपचार वास्तव में किया जाता है।

समूही श्रैणि घरेलू उपचार

यह उपचार का मामला इस तरह है कि धारणा, समूही क्रूरता, तालिका, परोस्नेस, ट्राफिक, संयुक्त रूप से, एक समूही घरेलू उपचार का संस्थान की आवश्यकता है। अनुप्रयोग और स्थिति के अनुसार जिसका कारण किया जाना जाता है।

समूही श्रैणि घरेलू उपचार

यह उपचार का मामला इस तरह है कि धारणा, समूही क्रूरता, तालिका, परोस्नेस, ट्राफिक, संयुक्त रूप से, एक समूही घरेलू उपचार का संस्थान की आवश्यकता है। अनुप्रयोग और स्थिति के अनुसार जिसका कारण किया जाना जाता है।

समूही श्रैणि घरेलू उपचार

यह उपचार का मामला इस तरह है कि धारणा, समूही क्रूरता, तालिका, परोस्नेस, ट्राफिक, संयुक्त रूप से, एक समूही घरेलू उपचार का संस्थान की आवश्यकता है। अनुप्रयोग और स्थिति के अनुसार जिसका कारण किया जाना जाता है।

समूही श्रैणि घरेलू उपचार

यह उपचार का मामला इस तरह है कि धारणा, समूही क्रूरता, तालिका, परोस्नेस, ट्राफिक, संयुक्त रूप से, एक समूही घरेलू उपचार का संस्थान की आवश्यकता है। अनुप्रयोग और स्थिति के अनुसार जिसका कारण किया जाना जाता है।
बहुदरा - पोचबंदर
कवि - भोगट
द्वारका - आइशा
ओजा - शिकार

भाषा में एयर-एयर और आलीशान के उपयोग करके वे कई फालों यात्रा आते हैं। अगर कवि वे के मध्य में वे सीखते होते तो भी उलझन के तेहि से होते हैं, इसलिए कितने अक्षर चलने का क्रिया अनुसार ओद तक नहीं गया है। जो थी सो, इसलिए जूंडे हुए तक केवल कोंकण तरी का स्त्रीत रहते हुए आन चल रहते हैं। गुजरात तट में से इस 
प्रौढ़ों में के कल्पना-अस्थायी साधनों पर अध्ययन 
चलाना अवश्य आवश्यक है।

सजावटी या अलंकारी मछली पालन

सी ही एक आदर आया गुजरात में चलने यात्राओं 
ने व्यक्त किया है कि वह तट समुद्री सजावटी मछलियों के 
वैविष्क्षण लंबाईयाँ से अनुमानित है। संसार में सजावटी 
मछलियों जैसे आमसेल फिस और फलाउन। फिस को 
मुटनाराणी प्रौढ़ों में इन प्रौढ़ों का प्रयोग और परिचय नहीं करने के 
समय में अध्ययन चलाना बहुत ज़री है जिस से यहाँ के 
उपभोक्ता लाभ उठाया जा सके।

समुद्री प्रौढ़

समुद्र समुद्रबंध निष्कासन के प्रदूषण के दूर करने के रज्जुलेन 
जलाशयी जल निष्कासन से पीड़ा है। गुजरात में केवल समुद्री 
बहुत है जिन में उद्वेक, टेकेंडॉन, फाई, फेस, कीटनाशी, 
फेसन, सोडा, फेसन, तेत आदि से जुड़े रासायनिक कार्यों 
हो रहे हैं। ये रासायनिक पदार्थों में प्रयोग का परेशान कर से 
भिन जाते हैं। पानी प्रौढ़ों के निष्कासन के लिए निगरानी 
और समझौता अवश्य आवश्यक है क्योंकि इस दृष्टि 
अभी नीचे नीचे बांधके हैं।
मछली तालाबों में पाई जाने वाली कुछ सामान्य बीमारियाँ तथा उपचार

आर.के. पृथ्वी, एन.के. यादव, के.एम. जैन एवं घ.एस. शर्मा
जीव विज्ञान एवं जल कृषि विधापन च. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिस्सार

भारत में मई-जून के महीने बहुत ही गर्म होते हैं और इसी महीनों में धनुरी जाने वाली मछलियाँ की सबसे अधिक संख्या होती है। इसके दो कारण हैं, पहला जो यह खुश दिखा जाता है कि इन दिनों तालाबों में पानी को मात्रा की तरह होती है जिसकी बढ़ते हुए तालाबों का तापमान कम होता है। अगर यह पानी धनुरी जाने वाली मछलियों के लापता होता है तो यह कहा जाता है कि उसकी वजह में मछलियों का उत्पादन समय लेते हैं। काफी कठिनाई होती है तथा कभी-कभी पानी में वातावरण को काफी कम से मछलियों को भी स्वस्थ रखना होता है।

इसी कारण यदि टालाबों के खाद्य-व्यवस्था में अनियमितता बाधा जाने जो मछलियों में होने वाले रोगों की सामान्यता और भी बढ़ जाती है। यह भी पाया गया है कि आत्मसात जल की अपेक्षा मौसम की मछलियों का विविध रोग अधिक लगते हैं। इन तालाबों में भी मछली रोग अधिक पाए गए हैं।

1. डोपसी (जलमें पानी भरना)

<table>
<thead>
<tr>
<th>कारण</th>
<th>लक्षण</th>
<th>उपचार</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>यह रोग एरोमोनास पेंडेंट नामक जीवाणु के कारण होता है।</td>
<td>1. देह गुल्ला में पानी जैसा तरल द्रव भर जाता है।</td>
<td>1. पोटेशियम परमेनेट का घोल (1 पी.पी.एम.) तालाब में डाल देना चाहिए।</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>2. जब शरीक पुल में भी पानी भर जाता है तब मछली की पूरी पृष्ठ हुई लगती है।</td>
<td>2. रोगपूर मछली का 10 पी. पी.एम. पोटेशियम परमेनेट के चोल में 1 मिनट के लिए स्नान कराये।</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>3. आखों पर सोनिजा आ जाती है तथा बाहर की तरफ निकल आती है।</td>
<td>3. अधिक रोगपूर मछली को तालाब से निकाल कर जमीन में दब दें।</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>4. स्केंडर चमड़े के कुपर उठ जाता है तथा उसकी</td>
<td>4. 300 पी.पी.एम. चूर्ण का चोल तालाब के पानी में</td>
</tr>
</tbody>
</table>
स्थायित्व - 2002

5. मछली का बिंगर ठीक प्रकार से कार्य नहीं करता है तथा पाथन लक्षित कमजोर हो जाती है।

7. उपचार के समय बाहरी खुराक बद कर दें।

2. पख (फिन) तथा पुंर रोग से पाल्लगानीया का संदर्भ

<table>
<thead>
<tr>
<th>कारण</th>
<th>लक्षण</th>
<th>उपचार</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>जीवाणु (बेक्ट्रीया) से फैलता है।</td>
<td>1. शूरू में सफेद धारियां पर तथा पुंछ के आबार पर दिखाई है।</td>
<td>1. एक बड़े बहान में (एडवर्डिया) सल्लस पहले मछली को 3 प्रतिशत नमक के घोल में स्नान कराएं। जो 3-4 मिनट तक बाले।</td>
</tr>
<tr>
<td>2. शीर-शीरे पर तथा पुंछ पर सफेद धव्वे फिराई देते हैं जो बाद में पूरी पुंछ तथा पख पर फेल जाते हैं।</td>
<td>2. रोगाणु मछलियों को नौका योगा (1:2000) के घोल बनाकर अथवा पश्चिमीय परमेंट का घोल (1:1008) बनाकर 5-10 मिनट तक स्नान कराएं। यह कम 5-6 दिन तक खड़रहिया जाना चाहिए।</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>3. कुछ समय बाद पर बिन्कूल समाप्त हो जाते हैं।</td>
<td>3. फिनाइल में पुंछ के प्रभावित भाग को काट कर डुबाने से पूरी मछलियाँ को लाभ होता है।</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>4. कभी-कभी इसमें भवाद पड़ जाता है। भवाद के कारण इनमें जीवाणुओं की संक्रामकता बढ़ जाती है।</td>
<td>4. मछली को पालिराइल भर्तियूरिक एसिड पी.पी.एम. 1:500,000 के घोल में 1 प्रति तक रखने से बेक्ट्रीया मर जाते हैं।</td>
<td></td>
</tr>
</tbody>
</table>
3. आँख का रोग (मछली का अंधापन)

<table>
<thead>
<tr>
<th>कारण</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>यह रोग ऐंग्रोमोनास में लोकोपिक्सिएंस नामक जीवाणु से होता है।</td>
</tr>
</tbody>
</table>

<table>
<thead>
<tr>
<th>लक्षण</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1. आम्लालऊर पर मछली के कोटे बच्चों में अधिक पाना जाता है कभी कभी बड़ी मछलियां भी इसका विषाक्षर बनती है।</td>
</tr>
<tr>
<td>2. आँख की पूलती अपारदस्ती हो जाती है।</td>
</tr>
<tr>
<td>3. नेन्टिका (आटिक नर्व) धीरे-धीरे सड़ने लगती है।</td>
</tr>
<tr>
<td>4. मस्तिक्क पर इसका प्रभाव पड़ता है तथा यह भी नष्ट हो जाता है।</td>
</tr>
<tr>
<td>5. रोग के ज्वाला बढ़ने पर मछली की पूलत हो जाती है।</td>
</tr>
</tbody>
</table>

<table>
<thead>
<tr>
<th>उपचार</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1. रोग की शुरूआत में ही तालाब में 1 पी.पी.एम. पोटेशियम-परमेगनेट का पोल खालें।</td>
</tr>
<tr>
<td>2. रोगाणु मछली को बताये माइनर (8-10 मिलिग्राम प्रति लीटर) के पोल में कम से कम एक घजने के लिए रोज़ स्नान करावे, जब तक मछली रोग से नुकसान न हो जाए।</td>
</tr>
</tbody>
</table>

4. गलफड़ों की बीमारी - गिलोट (गलफड़ों का गलना)

<table>
<thead>
<tr>
<th>कारण</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>यह बीमारी एक फूलुट (फ्रैक्सियोमैडिस) के आक्रामण के कारण होती है।</td>
</tr>
</tbody>
</table>

<table>
<thead>
<tr>
<th>लक्षण</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1. गलफड़ों के पंख जैसे पतले भाग (फिल्मलेंट) विशेष रूप से उपरी भाग आकर लाल रंग का और निचना भाग सफेद हो जाता है।</td>
</tr>
<tr>
<td>2. यह बीमारी प्रारंभ में भन्यक रूप से फैलती है और बहुत सी मछलियां मरने लगती है। लगभग आठ हिंद में आक्रामण का अंतर कम हो जाता है।</td>
</tr>
</tbody>
</table>

<table>
<thead>
<tr>
<th>उपचार</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1. तालाब में यदि किसी भी प्रकार की गन्दी विखंड दे तो तुरंत निकाल दें।</td>
</tr>
<tr>
<td>2. मछलियों को घोड़न देना बड़ कर दें।</td>
</tr>
<tr>
<td>3. पानी अधिक से अधिक बदलना या पुराना बदल कर नया पानी डालना सबसे अच्छा रहता है।</td>
</tr>
<tr>
<td>4. तालाब में 51-102 किलो ग्रैमेट्रिएंग्रू मिल्क दिखाके तथा 2 पी.पी.एम. पोटेशियम परमेगनेट खालें।</td>
</tr>
<tr>
<td>5. एक प्रतिशत पिनोक्सियोल का पोल बनाकर 10-20</td>
</tr>
</tbody>
</table>
### अन्य बीमारियाँ

<table>
<thead>
<tr>
<th>कारण</th>
<th>लक्षण</th>
<th>उपचार</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>यह सामान्य बीमारी है जो किसी परजीवी के कारण नहीं होती। यदि कृतिम भोजन में वसा (फ़ेट) और अपचारी पदार्थ बहुत होते हैं तो यह बीमारी हो जाती है।</td>
<td>1. गूढ़ पर ताल रंगत और फ्यूक्स जैसा पदार्थ बहता है।</td>
<td>1. कृतिम आहार देना बनाय देना चाहिए।</td>
</tr>
</tbody>
</table>

<table>
<thead>
<tr>
<th>कारण</th>
<th>लक्षण</th>
<th>उपचार</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>विभिन्न बेरोजगारी</td>
<td>1. मछली के मूर्ति पर फोड़े दिखाई देते हैं।</td>
<td>मछली के घाँसों पर जूनिया (CuSO₄) का लेप लगाएं और जूनिया के 1:2000 घोल में तीन घर दिन, रोज दो मिनट तक रखें।</td>
</tr>
<tr>
<td>2. कुछ समय बाद यह मछली के पायथ के रूप में दिखाई देते हैं जो मांसपेशियों को भाड़ते हुए गहराई में चलने जाते हैं।</td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
</tbody>
</table>

### इलाजीवंतित्वसिस

<table>
<thead>
<tr>
<th>कारण</th>
<th>लक्षण</th>
<th>उपचार</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>मछली की त्वचा, गलछों अवधार पेंजों द्वारा छोटे-छोटे सफेद धब्बे दिखाई देते हैं।</td>
<td>मछली को 1:5000 के फार्मेलिन के घोल में साल से दस दिन के लिए एक-एक घोल के लिए रखें।</td>
<td>2. प्रतिदिन दस का घोल बनाकर उसमें मछली को साल दिन तक भी रैं।</td>
</tr>
<tr>
<td>1:20,000 का कुरुनिया का घोल बनाकर मछली को पांच मिनट तक भी रैं।</td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
</tbody>
</table>

सी.एस. घोल बनाकर 1 लीटर पानी में मिलाये लें इस घोल में रोगी मछलियों को 10 मिनट तक रखें।
<table>
<thead>
<tr>
<th>कारण</th>
<th>लक्षण</th>
<th>उपचार</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>4. कालित्तिक सिस्टेम</td>
<td>1. रोगी मछली को 3 प्रतिशत नफ़क के घोल में 10 मिनट तक घोंसले।</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>2. 1:2500 पारमेलिन का घोल बनाएं और उसमें रोगी मछली को 5-8 मिनट तक घोंसले।</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>3. 1:5000 ग्लुटामेन एंडिट्रिक एसिड के घोल में दी तीन मिनट के लिए मछली को रखें।</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>4. यदि रोग आत्मीक हो तो संम्मोहितजिन्न, संज्ञाप्रभूत मछली को दें।</td>
<td></td>
</tr>
</tbody>
</table>

5. संप्रेशनिया फ़ाइट का आक्रामण

<table>
<thead>
<tr>
<th>कारण</th>
<th>लक्षण</th>
<th>उपचार</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1. जिन मछलियों का सारीर किसी कारण के कारण ठोंगे खा जाता है तो घाव पर यह फ़ाइट आक्रामण कर देता है।</td>
<td>1. फ़ाइटवाय होटों बच्चों पर आक्रामण करती है जिससे मछलियों के बच्चे इकट्ठे मरने लगते हैं।</td>
<td>1. मछलियों को 5-10 मिनट तक 3 प्रतिशत नफ़क के घोल अथवा 1:2000 भाग नफ़क घोल का घोल अथवा 1:1000 भाग पाईथिलम परमेलिन के घोल में स्नान करवाना चाहिए।</td>
</tr>
</tbody>
</table>
समुद्री शैवाल - खाद्य सुरक्षा के लिए एक मूल्यवान संपदा
रीता जनकशर
केंद्रीय समुद्री मालिकायों अनुसंधान संस्थान, कोलकाता

एशिया-पश्चिमी क्षेत्र के तटीय भागों में रहने वाले लोगों के लिए मालिकायों का एक बहुमुखी खाद्य सुरक्षा है। वर्ष 1994-96 के दौरान दर्शन पूर्व एशिया में प्रौढ़ शीघ्र खपान, जो 20.8 किए/वर्ष के अनुमान पर है, विश्व का तुलना में (15.2 किए/वर्ष के अनुमान पर) काफी संभव है। पूरे विश्व का 85% निर्यात मूल्य एशिया - पश्चिमी मालिकायों तथा मलदिया उत्पादों से किया गया है और यह मूल्य वर्ष 1996 के दौरान 1800 करोड़ अमेरिकी डॉलर से भी सस्ता है। समुद्री शैवाल मालिकायों को एक प्रमुख प्राकृतिक संपदा माना जाता है जो एशिया पश्चिमी क्षेत्रों के अधिकांश भागों में सतत एवं भोजन मुद्यों खाद्य सुरक्षा प्रदान करता है।

विकसित देशों में बढ़ती हुई मांग तथा विकसित होने वाली आबादी की वजह से वर्ष 1960 से लंबे प्रारंभ मालिकाय का धूप विकास हुआ है और विस्तार के दशकों में जलनीव शैवाल का भी शीघ्र विकास हुआ है।

वर्ष 1997 में जलनीव शैवाल के उत्पादन में तिरंगी वृत्त (लगभग 1986 में 10.5 मेगाटन से 1997 में 32.8 मेगाटन) हुई, जो पूरे विश्व के जलनीव क्रूष का 91% आकस्मिक किया गया है। चीन जलनीव क्रूष का प्रमुख उत्पादक देश है, जहाँ से विखय मर के उत्पादन का 67% योगदान होता है। इस देश की जलनीव क्रूष के समस्त प्रमुख उत्पादक देशों में से भारी उत्पादक शैवाल का 5.5 टन उत्पादन होता है। समुद्री शैवाल के अन्तर्गत विश्व में लेजे से बननेवाले एक खाद्य उत्पादन क्षेत्र है सुमध्य शैवाल (microalgae)। चिड़ंगा का कम आंशिक उत्पादन 50% से ज्यादा होते हैं। जलनीव क्रूष उत्पादन से खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के साथ-साथ तटीय में बसनेवालों की गर्दनी निम्न भोजन का उपयोग भी लिया जाता है। जलनीव क्रूष उत्पादन से खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के साथ-साथ तटीय में बसनेवालों की गर्दनी निम्नानंतर का उपयोग भी लिया जाता है। जलनीव क्रूष अपरिशोधित विश्व में अपना उत्पादन क्षेत्र बन गया है। वह आकस्मिक किया जाता है कि वर्ष 2032 तक मानव आबादी 9-10 बिलियन तक बढ़ जाएगी। वर्ष 1997 तक मानव खाद्य के 97% का उत्पादन भू-भाषा, जो शीघ्र का एक तिहाई होता है, में किया जाता था। लेकिन आगामी वर्षों में पूरी जनता के खपत के लिए भूमि के साथ साथ पानी से भी प्रोटीन संपदाएं नियंत्रण आवश्यक बन गए हैं।

समुद्री शैवाल को आनंदमय (untapped) समुद्री संपत्ति माना जाता है और इसकी विशेष पोषेंटियल की दृष्टि से भारत सहित कई देशों में भविष्य के लिए एक अच्छे खाद्य के रूप में उपयुक्त किया जा सकता है। समुद्री शैवाल खाद्य, उबसक, औषधि के उपयोग और प्रोटीन, विटामिन, खनिज, अमीड, श्वेत, फैली आमिया और प्राकृतिक वर्मक (pigment) के त्वारियार के लिए जलनीव क्रूष उत्पाद का एक भाग माना जाता है। इसके विपरीत के लिए अंतरसंग्रहीकरण तोर पर बढ़ती हुई मांग के कारण चीन, जापान, कोरिया, मिलिनीम जैसे देशों तथा कुछ इस तरह से भारत में भी समुद्री शैवाल का वाणिज्यिक रूप से प्राप्त किया जा रहा है। चीन में वर्ष 1997 के दौरान कुल समुद्री शैवाल उत्पादन का 87% उपयोग किया, जो 6.8 बिलियन मेगाटन टन आकस्मिक किया गया। चीन से कोरिया रिप्लिकेट और जापान को खाद्य के रूप में समुद्री शैवाल का निर्माण किया जाता है। कोरिया रिप्लिकेट से कम भाग में पोशाक और
ताम्री खाद जंगी
हवाय में इसे अवधारित मूल्यक्रम सम्पन्न के रूप में माना जाता है। पिछली तथा अन्य पशुपति दीवारों में इसे समुद्री खाद जंगी के रूप में उपयुक्त किया जाता है। पशुपालिका दीवारों में एंगार के लिए किरण में और बाइन (भारती) तथा कोली के उपयोग में (सुझीकरण के कारक के रूप में) उपयुक्त किया जाता है।

एलिमन समुद्री शीतल का और एक कोशिका प्रदर्शन पोलिसाकराइडस जैसे एंगार-एंगार, एलिमन और केरामीन भी प्रमुख है। लाल शीतल से एंगार का सार निकाला जाता है। औलिया उहारों के अतिरिक्त खाद उद्योग में भी इसका उपयोग किया जाता है। उहारी बीजों की हैलिया, त्रिक्लोराइद और जेलीक्लोरिया जैसे शीतलों से बेहतर एंगार का उत्पादन किया जाता है। विश्व भर में उपयोग 16,000 टन एंगार का वाणिज्यिक उत्पादन किया जाता है। कुल एंगार का 50% से त्रयों भाग खाद योग्य एंगार प्रोपतेरिया में उत्पादन होता तथा कोली के उपयोग में (सुझीकरण के कारक के रूप में) उपयुक्त किया जाता है।

कुछ लाल शीतलों से केरामीन का उत्पादन किया जाता है और डी-ब्राउनकोडिमोस को बनाये से यह एंगार से विशेष महत्व रह जाता है। इसे अर्हिड मोर (मेल्टिंग किस्म), बुलाह, निग्रिटेमा और इटिनिया जैसे शीतलों से निकाल किया जाता है। केरामीन को मुख्यतः खाद उद्योग में उपयुक्त किया जाता है।

समुद्री शीतलों में 60 से अधिक सूक्ष्म भारी क्षैर (trace elements) भूमध्य हैं जिनकी साझा शरीर के रूप में भूमध्य नहीं है। भूमध्य शीतल लाम्बिनिया रेडियोगेमा में 11.550 पी थी बुध की भारी भार के अभाव पाया जाता है। केरामीन्स तथा भारत में पैदा जाने वाले सरासर, लाम्बिनिया और एनियोपियस भूसहस्तीय धारकोडिमोस के रूपों में भी भारी भार में अभाव पाया जाता है। एलिमन के कुछ दीवारों में गोठर रोग नहीं दिखाई पड़ता है क्योंकि यह त्रांग अधार में समुद्री शीतलों का व्यवहार उपयोग करते हैं और इस बज़ा में स्वास्थ्य के लिए आमतौर प्रमुख अभाव पाया जाता है। भारत और अन्य
कई देशों में अपोडिंड की कमी के कारण गोटर जैसे शीमारी स्वायत्त की गंभीर समस्या कर गई है। यह जानना हुआ था कि समुद्री शैवाल सतता और नृत्यवाण खाद्य फूड्स हैं, जो अपोडिंड की कमी को दूर कर सकता है, लेकिन इसके आहार के मूलभूत भूमिकाएं में तेज़ नहीं होते हैं। भारतीय जनता के आहार में समुद्री शैवालों को भी मिलते हैं प्रोटीन, आवश्यक अमीनो अमिड, विटामिन, खाँचन और अपोडिंड की प्रतिष्ठा रख जाएगी।

विश्व के पूरे महाद्वीपों और समुद्रों में लाल शैवाल की 6000, खूरे शैवाल की 2000 और हरे शैवाल की 1200 जातियों पायी जाती हैं जिनमें कुछ भी विवादित नहीं है और इन्हें व्यापक खाद्य के रूप में माना जाता है। लंबे अरसे से लेकर शैवाल चीन और जापान के लोगों के आहार का मुख्य हिस्सा है। 600 वर्ष पहले की दिनु ने दोनों खाद्य मान्यता में लिखा है “कुछ शैवाल ऐसे हैं जो आहारविशेष सम्प्रभु आमिडियों और रसों को व्यापक भोजन के रूप में दिया जाता है।” इक्सीस शैवाल जातियों को जापान के दैनिक पकवान में सम्मिलित किया जाता है और इन्हें से छ. जातियों को 8 बी सदी से लेकर आहार के रूप में उपयुक्त किया गया है। जापान में वर्ष 1973 के दौरान लोगों के आहार का 10% समुद्री शैवाल था जो वर्ष 1983 में 10% तक बढ़ गया। इनमें प्रमुख शैवाल हैं तोरी (पोर्फियरा जाति), कोप्प़ (लामिनेटिया जाति) और वांकिया (अन्देक्टा जाति), नोरी के सुखे भार का 25-35% प्रोटीन, विटामिन तथा खाँचन हैं। नोरी में विटामिन - D की मात्रा सन्तरा की 1.5 गुना अधिक है। शैवालों के 75% प्रोटीन तथा काबोहैड्रेट मात्रा के लिए पाचन भोग है। अपवल्ड और स्टोनल्ड में क्षेत्रों से मधुर खाने के लिए उपयुक्त किये जाने वाला लाल समुद्री शैवाल है फलमारिया फलमाटा, चीन, जापान और कोरिया में समुद्री शैवालों का परिपूर्वात है उपयोग किया जाता है और पशुपती और चार थाना से इन देशों की बुरी तरह रुपरेखा अभी तक बदलती नहीं है। पशुपती देशों में समुद्री शैवालों को स्वस्थ खाद्य - के रूप में माना जाता है। अधूरक नागार्क्तल के प्रभाव से स्वरूप, आयुष्मान और अमीरा के लोगों के खाद्य के स्वाभाविक में काफी बदलाव हो चुका है। समुद्री शैवालों में युगल वाले भी और रंगों में विविधता पिकड़ाने की क्षमता होने पर भी इसे अपने खाद्य के रूप में उपयोग करने के लिए वे तैयार नहीं थे।

आईएएस शासन काल 1845-1849 के दौरान यूरोप में निन्हिलित करारों से शैवालों का सवाल प्रमुख खाद्य के रूप में माना गया था।

जनसंख्या में 5.4 मिलियन से 8.2 मिलियन तक की कहानी।

आयु में फाष्टीलो रोग का प्रभाव।

आईएएस की भूमिका और गौरव के बारे में अपना खाद्य न करने और हॉलेंड को प्रभावित करने के लिए विदेशों में प्रभाव।

इस परिस्थिति में लगभग 5,00,000 लोग भूखे पर और आईएएस जनता ने खाद्य के लिए स्वाइल मोक्स (कोप्प़ क्र्प्सस) नामक स्वूट शैवाल (मेक्रो अल्जे) की खाँचन की। वर्ष 1960 के दौरान विकसित देशों में मानव खाद्य में शैवाल को भी सम्मिलित करने लगा लेकिन चीन और जापान के आंतरिक अन्य देशों में शैवाल जैसे पौधो का
भारत में 800 से ज्यादा जानिमों के शैवाल पाए जाते हैं जिनमें 60 वाणिज्यिक प्रमुख भी हैं। ये भारत के दक्षिण, पूर्व और पश्चिम तटों में पाये गए हैं। भारतीय शैवाल आहार की दृष्टि से प्रमुख हैं। अल्ला, वेरोमिडा, एकादेसिफेरा, ग्रेगोरियस, जैसे शैवालों में सूखे भार में ही 16-30% प्रोटीन होता है। इनमें मांस आहार के लिए आवश्यक मेम्ब्रैनिन, ट्रिप्टाइन जैसे अमिनोआसिस्ट, जो संबंधित में नहीं पाए जाते हैं, निहित हैं। खाद्य सुरक्षा और पोषण गुणात्मका की दृष्टि से एन्टिलोपी लिह्ज्जा, इ. लिह्ज्जा, अन्य फॉलिक्स, कोस्पोर टाइम्सक्विला और सर्कुसम जोनस्टनी का मूल्यांकन किया गया था।

पोषण गुणात्मका के बावजूद समुद्री शैवालों के अत्यधिक गुण भी उल्लेखनीय हैं। समुद्री शैवाल में हेमारिन की जैसी प्रतिस्थानक (anticoagulant) विशेषता है। यह हेमारिन शैवाल हैलिमेंडा डिस्कोडस्मस में दिखाया गया है और प्रारंभिक के फाइब्रिन में संकेतित करने की प्रक्रिया में सहायता करती है। समुद्री शैवाल समुद्री ओरिगों और स्वस्थवाली खाद्य के उत्पादन की दृष्टि से प्रमुख है।

अत: नई आयुर्विज्य संस्था और मानव के स्वास्थ्य के लिए अच्छे खाद्य के रूप में समुद्री शैवालों का स्वादत्त्व उपयोग किया जा सकता है।
मछली मांस स्वास्थ्य के लिए आदर्श खाद्य

आर. पौन राज और इमेला जोसफ
केंद्रीय समूह मालिकाकी अनुसंधान संस्थान, कोलकाता

मछली मांस के प्रोटीन और उस में संगणना अभिमान आसानी से समुद्र मछली मांस एक पौष्टिक आहार है। मछली मांस के सुबंध भार में उच्च प्रोटीन व अन्य प्रोटीन के लिए संगणना है।

मछली मांस के संगणना अभिमान अर्थ जैसे तेलीन, मेथियोनिन, अरिगोन, ट्रिटोफाइन, त्रियोन आदि मछली प्रोटीन में निहित है। पालक उपयोग में ये अभिमान अद्यतन कम मौजूद है।

अन्य जन्तु मांसों की स्वतारा में मछली प्रोटीन और तेलीन अधिक होता है। मछली प्रोटीन का कम कलोरी (Calorie) की जगह से संबंधित और खाद्य प्रदान संपूर्ण खाद्य के रूप में इसका इस्तेमाल किया जाता है। इसके निहित में कानूनी दियों भी कम है जो कि पौष्टिकता और रक्त में घटी चीज मानी जाती है।

लिपिद्वं में कई पौष्टिक गुण है जो कि प्रोटीन में नहीं है। ये उदाहरणों के साथ ही साथ वसा बिल्लिन बेलामियाँ (A, D, E और K) प्रदान करते हैं। मछली में अन्य जन्तु मांसों (मूँगी, मटन, पोक्क) को तुलना में वसा कम है। कम कोलस्ट्रॉल और अधिक मांस में बहु असंतुलन वसा अलग (Poly unsaturated fatty acid) के कारण यह अनुप्रयोग आहार है।

लिपिद्वं में निहित वसा अम्ल जैसे लिनोलीनिक (linoleic) और लिनोलीनिक (linolenic) अम्लों का संग्रहण (synthesis) मांस अर्थ में होता नहीं है। फिर भी कोशिकाओं में रोग निरोधक के रूप में इसका उपयोग है। इसके संयुक्त रूप से खून का नम जाना (blood clotting) आश्रम (asthma), प्रगन रोग आदि को चिकित्सा साथ है।

अध्ययनों ने व्यक्त किया है कि वज़ु असंतुलन वसा अल्फा रक्तातप और कोलस्ट्रॉल को कम करना और दूध से दूध रक्तातप या उससे कोलस्ट्रॉल को कम करना यह अनुप्रयोग है। इसके पिस्ता नेत्र (retina) और हस्तिक के लिए आवश्यक पत्ता लिपिद्वं में व्यक्त किया गया है। इसके वज़ु रक्त से रूख आहार ब्लड शूगर (blood sugar) कम करने में अनुप्रयोग देख पाया है।

मछली मांस विद्यमान में जैसे A, B, C, D, E और K का अभाव है। अन्य जन्तु मांस के स्वास्थ्य और रोग निरोधक अवकाश पक्षपात और अम्लें जैसे मिनेटल भी इस मांस में है।

अत: अन्य जन्तु मांसों (मूँगी, मटन, पोक्क) की तुलना में स्वास्थ्य की दृष्टि से यह आदर्श खाद्य है।
परुषकवी भावित्वक-खाल पूर्ति का औजार
(गुरुराच के प्रसंग में)

जो के, किकूकून और श्रीमान, तुम्हारे
सौ एक आर आँग का नैरान्त्र त्रैग्रिंद, नैरान्त्र

गुरुराच के समूह तटों में की दक्षिण-पून्तत वाले का बलबंध की मानकीयता नहीं है। इसके लिए इसका विलोकन करने वालों की कारण हो रहे हैं। भारत की ध्वनि भी इस से अलग नहीं है यहाँ टूलन ने के जरिए इनकी खोजका पाक्षिक हो रही है। मंगो के अनुसार इनकी बढ़ती अक्ष में हो रही है जिस से इन संस्कृतों को उपलब्धि में विकसित या विरामी भी दिखाई पड़ती है।

गुरुराच का गुर्जर के समूह तटों में 50 के विकल्प परुषकवी संस्कृतों हैं जो कि इनके विचार विविधता के उत्तर दावत हैं। राष्ट्र के भावित्वक उपवन में ये संस्कृतों सत्तृत योगदान दे रहे हैं। इस में ऐसे अनेक नितांत और आनुष्ठानिक (त्यंकारियों का छोड़कर) संस्कृतों भी हैं जिनका विवेक अपने तक नहीं है।

गुरुराच की परुषकवी भावित्वकीय

गुरुराच का समूह में विचार पर विचार परुषकवी संस्कृतों की परमेश्वरी तत्त्वक 1 में दिखाई गई है। संस्कृतों का वेतवस्थांक और स्वयं नाम इस में दिखाई गए हैं। इन संस्कृतों को प्यार विविध संस्कृत विभिन्नता के यथायोग्य और पररमात्मा गजियों के जरिए होता है। संस्कृत का मंगो के अनुसार उपलब्ध क्षेत्रों में मात्रवण कार्य होता है।

परुषरसात क्षेत्र

परुषरसात संकर का मतलब तत्त्व समुद्र और तट के आगे पसे फैले हुए अनेक व्यक्तित्वविश्लेषियों और नमकीन संकरी खाड़ियों से हैं।

संकरी खाड़ी मालिकी

लिटिंग रान आँग कच वनस, सरस्वती और महु नदियों के कच खाड़ी का सांग स्थापन है। मनसुन काल में यह खिंगडियों का असलागाह हो जाता है। यह वाद महलों के विद्वान उपलब्धि से होता है। इन्हें खाले खाल तक परुषकवी विधि है। मेटागिनिस्स कवितासिद्ध को जानिए गए हैं। मनसुन के दौरान के वायुविवरण पर निर्भर रहने के कारण यह मौसमिक है। कटर नामक विशेष प्रकार के फेस नेंट से इनका प्रकाश नहीं है।

सोरत्स की संकरी खाड़ियां की खिंगड मालिकी

सोरत्स - न्यूनकेर शिल, पोरस्त्राह, कोयला, मोलबारा, मीमूर की संकरी खाड़ियों में मनसुन के मौसम में खिंगड कालसिस पेड़ा होता है। पुराने धृरंग, पंजाब मनसुन के जून-जुलाई के दौरान उपलब्ध होते हैं। वहाँ जानेवाला गंगोधार अंतर्द्वार ने रूप में बनाया। जानकीर की संकरी खाड़ियों से भी इस दौरान मोनोस्कीरोस धृरंग की अच्छी खिंगड प्राप्त होती है। इन खिंगडों से खिंगडों को पकड़ने के लिए होटी जालाश्या रणनीति, V शाखा का देन नें, बूँढ़ नें और कार्ट नें का परिवर्तन होता है। स्वयं नाम जब्ती जानें, तो अथवा दुर्गासंग तथा रूपाला - वंकमर के उपवन पानी से इंक्लास्स, मेटागिनिस्स, मोनोस्कोरोज, ब्रॉकनिस्स कवितासिद्धियों के दर्शनों को पकड़ा जाता है। 1.5 मी गहराई में 2-4 मी बिस्तर में जल बास के खंभों के जरिए भिड़ी कर इनका पकड़ा जाता है।

[3]
पद्मा मार्शिकी

मोले लंबी छोटी जलासिलावलेह (15 - 20 मिन.)
गिल जालो दे जरिए जमगान, भवनगर और गोपाल ज्यादा से ज्यादा
के समय के पानी बहाव से चिनालाए लगता है।
मोनोसिक, कंपनोसिक, बोक्रोबीनिक दोंगर और जीवा
जार्मोनिका इसकी मुख्य पकड़ है।

केकड़ा मार्शिकी

कच्चे पौधे, कंकाल, हिला, पटल, नवाबदार और
mिलानी को संकरी खादियों के प्रवालिये और कवचली प्रदेश
केकड़ो का आवास क्षेत्र है। पेल्हार्डिस, सानगुनोलेटा
और सिल्वा संराता केकड़ो के में पकड़ते है। मस्तन
अनामला नेट ट्राप के जरिए होता है। कच्चे में छोटे
जालालशावले गिल ल ट्राप जाने का प्रयोग करते हुए पेल्हार्डिस
केकड़ो को पकड़ता है। पटल में लंबी जलासिलावले गिल
जाला (120-140 मिन.) के जरिए पेल्हार्डिस केकड़ो
को पकड़ता है। नवाबदार को संकरी खादियों से तलासिदा
किनेस, काकोव अनुलेटा, मिएटा पास्ट्रीय, एम. संराता,
प्र. पेल्हार्डिस और प्र. सानगुनोलेटा आदि केकड़े भी
मिलते है।

भवनगर और माहूआ तटों में केकड़ा पालिका उपलब्ध
होता है। निना ज्या के समय जब जल में चलता आसान
होता है तब छोटे और विविधाओं से इन्हें पकड़ते हैं।

तटीय मार्शिकी

ोल्या मार्शिकी

लंबे बाग जालों की क्रेम जो कि खुदों के जरिए
निहाल किया गया है, का स्थानीय नाम है भोलमा। भवनगर,
गोपा, माहूआ, सतनामा और अलाम की तटरेखा में
वोल्या के परिवर्तन से अस्तित्व, सालगुनोलेटा मिलाइनी
और बुक्रोबीनिक, कंपनोसिक विभागों या पकड़ता है।
कच्चे पौधों के में भी चिनाली को पकड़ने के लिए योग्य
का प्रयोग करते हैं।

पिक्सल मार्शिकी

2-5 पेंटम में 40-80 मिन में जलासिलावले फिल्मेंटों
गिल जालों का प्रचालन होता है तकि स्वीड मेंगुनोलेटा,
मोनोसिक, कंपनोसिक पकड़ा जा सके। छोटी महार्षिया
पानगुनोलेटा जालिकांगा प्र. होमरा, प्र. बीनिकोर्निक दोंगर
को पकड़ने के लिए गिल जालों के ट्राप के रूप में
लागू किया जाता है।

बाहरी इंजनों से जलनवाला ट्राप

वनकमारा के तटीय समूह के रौते संशोधन से सीधे
जैसे मेंगुनोलेटा, इडिका, मोनोसिक, कंपनोसिक, बुक्रोबीनिक,
स्कलामिटिस को पकड़ने के लिए छोटे और बड़े ट्राप का
प्रयोग होता है।

यंग्रीकृत संकेत

जभुर देश के 20-100 मी. गहराई के तटों में यंग्रीकृत
मस्तन रिश्तों भी चलती है।

बॉल नेट मार्शिकी

जब हुए बाग नेटों को "बॉल नेट" कहते है। विशेषता
के समय ये पानी के प्रति बिखारे होंगे। इसके जरिए नौन-पानी"एड पर्व", पानी-एड पर्व, नौन-एड पर्व, पानी-एड पर्व, नौन-एड पर्व,
रिकोर्डा, सोलनोर्सोरा चोपी, एम. प्राप्तोसिक, प्र. स्कलामिटिस
चिप्ट कंपनोसिक और केकड़े भी.

ड्राइंग नेट मार्शिकी

दक्षिण और सोलाई के अन्दर तल विख्यात या देखने-पाने
पर्वत पात्री और क्वरमहल्लियों को पकड़े जाते महसूल
हुए हैं। मस्तन 1-3 दिशायों की छोटी और 5-8 दिशायों का
बड़ी अधिको की होती है। छोटी अधिको के मस्तन में टटीय
दिशायों को कई जातियों भिन्न करती है। मस्तन सतनामा में
भी पानी-एड और नौन-एड पर्व को कई जातियों भी
पाए सिकायत होती है। पंक मास भी आक्शन थे. प्राप्तोसिक, रेंड
महार्षिया पानी-एड ऑर्डिनोटा भी धम्म भ्राम में प्राप्त
होती है। उपर और कम दाम के कई केकड़ा जातियों भी
ट्राप विशेषता में प्राप्त होती है।
1971-2000 के दौरान गुजरात में फिल्टर बुल महत्व एकड़ का 17% कमजोरीणांक का था। इनकी चूज भी हासिल थी जाने कि 1971 में 7.4% रहा इसकी एकड़ 2000 को 23.4% हो गया। पहले यही पेनिनड्रा झीलों के प्रभुता था पर बाद में यह घटने लगी। बैंड महासागरों की एकड़ से भी घटती दिखाई पड़ती है। लीजेंड के कांडों की एकड़ में क्ष 1985 तक बढ़ती दिखाई न पर बाद में घटती की प्रभुता ही दिखाई पड़ती है।

मल्टिसेक्टर की चार जान कह जाएँ तो एकड़ का 95% बंदीकृत सेंटर का योगदान है जबकि 5% परिष्कार सेंटर का भी। बंदीकृत सेंटर में 80% दुनिया और 15% दूर राष्ट्रों का योगदान है। क्वार्टर फ़ॉक्सों की एकड़ में 90 के संके में हुई बढ़ती गौं पेनिनड्रा झीला अस्तित्व ज्ञातों के योगदान के कारण है।

परिष्कार मल्टिसेक्टर का योगदान कम होते हुए भी इसकी महत्व को नकारा नहीं जा सकता। तटियाँ समुद्र के प्रदूषण से चिपड़ी और शून्य महासागरों की एकड़ में कम हुई है। फिर भी भवनार तट की खानदान के केंद्र मल्टिसेक्टर में पिताभ व चयनान्तरक मल्टिसेक्टर रीति के कारण कमी नहीं हुए है।

कुलमिलाकर कह जाएँ तो गुजरात के तट में कई गांगों झीलों, बिछों और के कांडों की उपस्थिति में कमी दिखाई पड़ती है। इसका कारण अति विवाहित जेठ या एक्सामीनेशन, समाधान के पुदु निकालना अनिवार्य है। लागू हो सांच संख्या के अवधि के लिए अनुशोधित उपयोग जैसे इनकी पालन और समुद्र रेखाओं भी रीतियों का विकास करता है। पिताभ निष्क्रिय समस्या समस्या का निष्क्रिय इस संख्या के पिताभ क्रम के और संख्या के मामले में संगत है। आशा है सुझाए गए मार्गों के कार्यान्वयन पर अति विश्वस्त समुद्री कांड संभोग संयोग हमारे खानदान पोषण को पुलिंग के आवाज बनकर रहेंगे।
<table>
<thead>
<tr>
<th>तालिका 1: गुजरात की पर्षकबाजी मासिकी संपदा</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>वैश्विक नाम</td>
</tr>
<tr>
<td>----------------</td>
</tr>
<tr>
<td>Metapenaeus affinis</td>
</tr>
<tr>
<td>M. brevicornis</td>
</tr>
<tr>
<td>M. kutchensis</td>
</tr>
<tr>
<td>M. monoceros</td>
</tr>
<tr>
<td>Metapenaeopsis stridulans</td>
</tr>
<tr>
<td>Parapenaeus longipes</td>
</tr>
<tr>
<td>Parapenaeopsis hardwickii</td>
</tr>
<tr>
<td>P. sculptilis</td>
</tr>
<tr>
<td>P. stylifera</td>
</tr>
<tr>
<td>P. merguiensis</td>
</tr>
<tr>
<td>P. penicillatus</td>
</tr>
<tr>
<td>P. latissulcatus</td>
</tr>
<tr>
<td>P. japonicus</td>
</tr>
<tr>
<td>P. monodon</td>
</tr>
<tr>
<td>P. semisulcatus</td>
</tr>
<tr>
<td>Trachypanaeus curvirostris</td>
</tr>
<tr>
<td>Solenocera choprai</td>
</tr>
<tr>
<td>S. crassicornis</td>
</tr>
<tr>
<td>मीन पैनीआड्ड़ कोल्मी</td>
</tr>
<tr>
<td>Acetes indicus</td>
</tr>
<tr>
<td>A johni</td>
</tr>
</tbody>
</table>
झंगा उत्पादन और खाद्य सुरक्षा

विनियम खंड
सी एम एफ़ आर आई का विशाखापट्टनाम श्रीनाथ केंद्र, विशाखापट्टनाम

1996 में हुए विश्व भोजन शिखर सम्मेलन में खाद्य सुरक्षा को रखना अंतरराष्ट्रीय समय का काय बन गया था। "... हर व्यक्ति को, हर समय, आयुर्वेद, तंत्रिक और पोषक भोजन सही और आर्थिक तौर पर उनके भौगोलिक आयुर्वेदिक और तंत्रिक क्रियाओं के लिए उपलब्ध हो।" भारत की वर्तमान स्थिति इस आदेश से बहुत दूर है। हमारी जनसंख्या का एक अधिक विभाग दर्द रखा के नीचे है। भारत के अनुमानित 90 लाख मिलियन में अधिकांश लोग, इस विभाग में सामान, है, खासकर लघु पैमाने के मस्तन में लगे हुए पारंपरिक महानगरीय।

पोषण के तौर पर, झंगा, प्रोटीन का एक मुख्ययुक्त कोष है। लेकिन, बहुत अस्तुणून वास (Polyunsaturated fats) भी दृष्टि जरूरत सम्मान में उपलब्ध है। इसे जानकारी प्रदान करने के लिए आर्थिक तौर पर गरीब लोगों के हाथ से बाएं हो गया है। अपने झंगा, परिशिष्ट में एक प्रशंसक मार्ग से सरकारी मार्ग को गया। 1970 और 80 के दशकों के पूर्व जब झंगा मस्तन और कृषि दोनों इनमें की उसी क्रीड़ा नहीं हुई थी तब झंगा दर्द में अवरोधी के पोषण का एक पदक था जो मस्तन के समान दृष्टि में खाद्य जाता था। अब झंगा एक उच्च श्रेणी का विशेष युक्त महानगर बना, तबसे हर एक आयुष्य परिवार झंगा दर्द कर गया।

अतः झंगा के बदले जो, अन्तर्राष्ट्रीय मार्ग में उपलब्ध कोशी के विकास के साथ हमारी समृद्ध मस्तन झंगा मस्तन की तरफ स्वास्थ्य मुक्त विश्वजीवन दिवस परवर्ती है तबताप के क्षेत्र का एक छोटा भाग ही स्वास्थ्य व्यवहार में आता है। झंगा कृषि से उत्पाद शेवावर का भी सही हाल है।

फलस्वरूप, झंगा मस्तन और कृषि का खाद्य सुरक्षा से प्रत्यक्ष लाभ होता है। झंगा, तक्कालीन समय मस्तन के व्यवस्थापनों की जीवन क्षेत्र पर यह सहायता है कि झंगा के बदले बच्चे को एक बच्चा विश्व निर्माण के लिए, अनुभव बच्चे वाले, बच्चे पैमाने के बोरे जा रहे हैं। ये बच्चे ज्ञानी होने वाले विकासी बच्चों विकास की है। इसका दाम भी आम जनता के पंजी में है। भविष्य में यह तीन इलाकों के जन्म में भोजन सुरक्षा का एकभत्ता सामान बनेगा।

झंगा मस्तन और कृषि दोनों पर अधिक प्रभाव, खाद्य सुरक्षा पर अधिक प्रभाव होता है। सूयूं - आधिक दर्शन पर झंगा मस्तन या कृषि, इसमें शामिल होने के लिए आधिक समृद्ध होता है। इस आधिक सन्तुलित पर भोजन सुरक्षा अधिकरण है। यह स्नेहबल यह है कि ज्ञानता उपरोक्त दर्शन पर रहने महानगर को इससे कोई लाभ नहीं मिलता लेकिन मतभेदों को इससे जाना मुश्किल हुआ है। उनकी भोजन सुरक्षा अवरोधी है। झंगा व्यवसाय में सरल ज्ञान और झंगा बच्चे पैमाने के स्तरों पर बदलता है। ये भोजन सुरक्षा समस्या के क्षेत्र - क्षेत्र में नहीं पड़ते।

एक और परोक्ष मार्ग से, झंगा नियाम भोजन सुरक्षा में योगदान देता है। झंगा द्वारा प्रात विदेशी मुद्रा से राष्ट्रीय आर्थिक विषय का सुधार होता है। वृहत आधिक दर्शन दर्शन पर इन विदेशीय का एक हिस्सा उद्यम दाम या सहायता खाद्यज्ञान के रूप में भोजन से अनुभव होती और झंगा को कहने से पृथिवी लोगों के लिए नियामित किया जा सकता है।
यह सामान्य वाक्यों से संबंधित है। इसमें धनों चालु किए जा सकते हैं जिन्हें वह उपयोग कर सकते हैं। अन्यतः, यह धनों के लिए समय वित्त का उपयोग कर सकते हैं। इस्तेमाल किए जाने वाले धन अन्य क्षेत्रों में उपयोग किये जा सकते हैं। इसके लिए संस्थानों और समाज के लिए संस्थान के लिए संस्थान का उपयोग किया जा रहा है।
महासागरीय जैव संसाधनों का मानव हित में उपयोग

आसुतोष डी. देव एवं एम.सी. नवीका
कोलिन ऑफ़ फिशरीज, अमरसतला

महासागरीय संसाधनों ने हमेशा से ही मानव समुद्र वो विभिन्न कारणों से अपने ओर आकर्षित किया है। एक जैव परिवेश के रूप में महासागर पूरी तरह से जैव की एक वृद्धि के जैसे का 4/5 वो भाग, जो कि 30 फीसदी उर्मोन, 5,00,000 स्थानों से भी अधिक है, धारण करता है। (भारत सरकार, 1969)

महासागरीय प्राकृतिक उत्पाद निर्माता पर पूर्ण रूप से जैविक संदर्भ में चल रहा है अब तक 6,500 की संख्या का पार कर चुका है। समुद्री जीवन न किसी उद्योग-भेद जीवन तत्व से सुपरिभाषित है विभिन्न पर्यावरण के निर्माण में भी सक्षम है।

जैविक तत्वों के इसी प्रकार के आयुष्य जो मूलव्य में संयुक्त जीवों के भवन से प्राप्त होता है, विभिन्न कर रासायनिक पदार्थ कहा गया है।

कुछ समुद्री जीव खुद से जहां के निर्माण करते हैं असरण होते हैं। पर उन जहां जहां का संवरण उनके द्वारा धौलिया वह के पर्यावरण के द्वारा हो जाता है। यह है: समुद्री जीवों में जहां का निर्माण जीवाचारों के द्वारा या फिर डाईनो फ़ोस्फेट के द्वारा होता है। (भारती, 1997)

जैव जैविकता ने अपने विद्वान में ऐसे बहुत से जैव जीवों को पता लगाया है, जिसका उपयोग मानव के विभिन्न व्यापारों को टीका करने में किया जा सकता है। तब तक समुद्री जीवों से जो औषधि निकलती है उनके कुछ नाम हैं: केंसर प्रतिरोधी, प्रति जंक्टी, विकास दर बढ़ाने और घटनों को द्रव्य, द्रव्य विश्लेषण, रक्त अभिनवगत, बेदना आरोग्य, उच्चरक्त चाप एवं लिंग रक्त चाप के औषधि आदि।

व्रतीन्द्र आचार पर कुछ जीवों से प्राप्त औषधियों का बदलचार कुछ इस प्रकार है:-

(2) समुद्री जैविकता:

अब तक समुद्री जैविकता से, ब्रॉमोनेटेड फेनोल, आकृती उद्योग, डिस्टॉक्स, आकृती उद्योग, डिस्टॉक्स, स्टार्कल्क्स एवं ग्रॉल्प्स प्राप्त किये जा चुके हैं। हालांकि समुद्री जैविकता से प्राप्त ब्रॉमोनेटेड फेनोल ज्ञात हो तो ज्ञात है जहां उद्योग विखिलित है उनके उपयोग को संभाला दिया है, फिर भी रोग जारी है। नाशनाम उद्योग साइक्लस (डोमिनिक अम्स एवं कॉन्स्ट्रक्ट अम्स) परिवारों प्रतिभागी के रूप में काफी महत्वपूर्ण साथिया है। सुशासन लाल रॉबर्ट डाइनियों नियों विश्लेषण का उपयोग एनटी होल्डिंग्स ओर्डों के रूप में काफी प्रचलित है।

3. वैक्सिन अवलंबोद्ध प्रतिभागी का उपयोग बहुसंख्यक सेवा में है।

4. साइक्लिक अल्मिनेटर का उपयोग समुद्रसेवा में है।

5. एनटी फेनोल एवं विस्तार प्रतिभागी गुण सिद्ध हो चुके हैं।

6. सेवन नाम से भी बहुसंख्यक सेवा में है।

7. आप एवं आरोग्य का उपयोग वे मानव समुद्र में सब सतह है।

8. समुद्री जैविकता एवं अनुक्रम

समुद्री जैविकता एवं अनुक्रमों से एक्षियायोटिक, एनटी बाइस, एनटी फैमिल एवं एनटी केंसर तात्कालिक तात्कालिक प्राप्त किये जा चुके हैं। संस्थान नाम प्रति एनटी फैमिल का निवर्तन एक तरह के समुद्री जैविक नियम एवं नियम से किया गया है।
एक तरह का समूह एन्टीवायलिक जो कि ग्राम पोस्टेस बैंकिटिया पर पलटी प्रभावित है का निर्माण, समूह बैंकिटिया जुड़ोडीग्नेक्सिंग ब्रोडेयरप्लास्टिस से किया गया है।

(iii) समूह अक्केरिक (इन्वेंटरिट्रेट) संसाधन:

समूह अक्केरिक जैसे जेली पिसाई, तो ऐसीमोन, कोरल्ल, मोलरफ, एन्टीमोन प्यूविजियन आदि से विभिन्न तरह के स्टेक्स, कोर्नल्स, ब्रोनिंटेड प्याजिक, नाइट्रोजन एवं नाइट्रोजन सल्फर हेटरोसाइकल्स आदि ग्राबा हुए है।

होलोबूदर्या से प्राप्त रोटाइल पदार्थ केंसर प्रतिरोधी गुणों से भरपूर पाया गया है। ग्राडुमिन ने प्राप्त टाइममेंट एवं उपयोगिता जीवाणु प्रतिरोधी और अन्य चीजें प्रतिरोधी तरक के रूप में का जानकारी है। स्तर से प्राप्त ग्रोमेंटिलिन एवं ब्रानिंटेड प्याजिक का मानव हित में उपयोग सर्व विधि है।

समूह से प्राप्त शांतिकोटिया हर्षिया नामक स्तर का सार एक बहुत ही प्रभावी जीवाणु प्रतिरोधी औषधिक है जो ग्राम पोस्टेस इंडियन एवं ग्राम जैंटर दोनों जीवाणुओं का समान भूमिका नहीं करता बल्कि इसका केंसर संरक्षण के रूप में किया जाता है।

समूह जंतुओं से प्राप्त पेटाइड जैविक आवरण की संख्या होती है। इसका उपयोग एनटी ब्रोडेयरप्लास्टिस के रूप में किया जाता है।

केंसर संसाधन:

टेंट्रोडेसिशन जो, सशक्तिकरण फर्ञ नामक ग्रर्म के प्राप्त को मिला था, का उपयोग दी निवादक अंश औषधि के रूप में केंसर के लिए होता है। इस के अलावा इसका उपयोग टेंट्रोडेसिशन जैसे दो पुराता प्राप्त करने में भी होता है।

समूह विष जैसी स्टेक्स के स्लेना में तांबे फेल की अस्तित्व पाई गई है। ऐसी समूह टेंट्रोडेसिशन जो, निजी तथा ग्रामीण जाने, उनके क्रांति के अंतर की आवश्यकता में जैव प्रतिरोध करते हुए निजी का उपयोग रक्तचाप बढ़ाते, रक्तचाप ग्रामीण नामक आदि के औषधियों के रूप में किया जा सकता है।

मछलियों से प्राप्त विभिन्न किस्मों में भी जैव संक्रमण कारण है जिसका उपयोग विभिन्न व्याधियों से विकार का प्राप्त करने में किया जा सकता है।

निष्कर्ष:

वैज्ञानिकों के कार्य परिदृश्य के समूह जैविक संसाधनों का औषधि के रूप में उपयोग को महत्व का पूरी तरह से प्रतिष्ठित किया जा रहा है और उसमें से कुछ तो रोग-विविध कारण में भी प्रमुख हुए है। उपकरणों और अणु के सलाह विभिन्न ने इसे और आसान हो दिया है लेकिन इस भारी ज्ञात से इसका नहीं किया जा सकता कि वह एक विज्ञानीशाल प्रस्ताव है जो विभिन्न विवाहों के मूलान्त्रिकों का एक साथ वेबसाइट कार्य करने को अधिक तरीकै करती है।

भारतीय समूह जैविक संसाधनों के परिशोध्य में भी रेखने पर यह प्रस्ताव काफी महत्वपूर्ण प्रतिष्ठित होता है।
मत्स्य खाद्यों की सुरक्षा के लिए व्यवस्था

जोशीली जोस
केंद्रीय मसूदी मालिकों का अनुसंधान संस्थान, कोलकाता

खाद्य की सुरक्षा 1960 के दशक में विद्वानों ने गुरुवार्ड स्टेट आर्थिक और गुरुवार्ड स्टेट के राष्ट्रीय वैज्ञानिकों एवं अंतर्राष्ट्रीय प्रसारण (FAMA) के द्वारा संयुक्त संघ से विकसित किया गया बनावटारी कार्यालय है। खाद्य में सुरक्षित खाद्य के उत्पादन में प्रभावीतर उपचार के रूप में यह व्यवस्था रूप से खैरानत करेगा। समुद्री खाद्य का आयात करने वाले अधिकांश प्रमुख देशों के यह आयात विधान है कि व्यवस्था के खाद्य संसाधन एक बिंदु का संगठन विभागीय तथा प्रांतीय नियोजन मान (Hazard Analysis and Critical control point) का अनुपालन करने चाहिए।

पहले व्यवस्था की एक मात्र बिंदु सुरक्षित खाद्य की व्यवस्था के लिए नास होने पर गाँधी होगा का कारण अंतर्गत में वैज्ञानिकों द्वारा खाद्य खाद्य में वृँट (जीर्णोद्वृत्त) सुनिश्चित करना था। जब 1971 में विभाजन क्षेत्र ने एक खाद्य संस्थान में HACCP (Hazard Analysis and Critical control Point) को इस के व्यवस्था प्रस्तुत किया तो इस आयात व्यवस्था को व्यवस्था में ढूंढने तेज तरीकी था। लेकिन बाद में यह सही हो गया कि यह खाद्य सुरक्षा की समस्याओं और सरकार का सामना करने में सफल है। इस के उपरांत 1980 के प्रारंभिक वर्षों में प्रमुख खाद्य कंपनियों के HACCP व्यवस्था व्यवस्था की।

कई अंतरराष्ट्रीय कंपनियों और समस्तों ने खाद्य सुरक्षा की HACCP व्यवस्था के विस्तृत प्रयोग का रिपोर्ट दिया निम्न गुरार्ड स्टेट का खाद्य एवं खाद्य प्रसारण (FDA), गुरार्ड स्टेट का उपचार विभार अंतरजी, खाद्य एवं खाद्य संगठन (FAO), मार्केट एवं खाद्य (EU), इंडस्ट्रील विभार अंतरजी ओम माइक्रोबोलिक क्रिकेट-संगठन फोरु ज्यामिक (ICMSF) और दूध और पेयवर्गीय व्यवस्था के अंतरराष्ट्रीय संघ (IAMFES) सम्मानित है।

भारत में समुद्री खाद्य नियंत्रण सेक्टर में एच सी सी पी व्यवस्था के कार्यान्वयन का स्वागत

भारत में आयुक्त समुद्री खाद्य नियंत्रण विभाग 1950 के बाद नहीं हुआ। समय के साथ स्थानीय खाद्य सुरक्षा पर होने वाले मामलों को हर बार होने और उद्योग की गुणवत्ता बढ़ाने के उद्देश्य से नियंत्रण प्रकार की गुणवत्ता नियंत्रण व्यवस्थाएं (जैसे IPQC, MIPQC, विभाग मार्केट व्यवस्था आदि) लागू हुई। समुद्री खाद्य संस्थान (नियंत्रण के लिए) उद्धरण HACCP व्यवस्था का कार्यान्वयन 1990 के बाद में लागू कर दिया गया। यू.एस. एस. की एंड यू.एस. ब्रिटेन दुरूर्गम अनुवंश द्वारा खाद्य संस्थान खाद्य खाद्य खाद्य HACCP के कार्यान्वयन के लिए कड़ा अनुरोध किया जाने के यह नियंत्रणों को इस व्यवस्था का पालन करना उचित।

फिर भी अधिकांश नियंत्रणों ने आयात करने वाले देशों को कमजोर आयात संस्थानों की पूर्ति के लिए इस व्यवस्था का अनुपालन करना शुरू किया तथापि बाद में खाद्य की सुरक्षा सुनिश्चित करने में इस व्यवस्था की प्रभावकारिता पर वे भी सहमत हुए।

HACCP व्यवस्था होते ही भी नियंत्रण को अग्रवाल करें?

एह सी सी पी व्यवस्था लागू होने पर भी आयात करने वाले देशों के उद्योगों को अग्रवाल करें भारत के समुद्री खाद्य नियंत्रणों के लिए व्यवस्था का विवेक करना योग्य है। यह केवल भारत की समस्तता नहीं है एवं खाद्य की कई अन्य समुद्री खाद्य उद्योगों के सामने भी यही समस्या पैदा हुई है। इस अग्रवाल के कारण नीचे लिखे जाते हैं:

---

[Page number]: 3
1. विवरण कारण

बार-बार यह रिपोर्ट मिलता रहता है कि समूही खाद्य आयात करनेवाले देश उत्पादों की मांग कम होने पर अस्तिकृति के लिए उत्पाद की सुरक्षा गुणता आदि पर ध्यान देने करते है। आयातित देश वालार मध्य में कभी स्पष्ट, मूल्य तथा आदि करारों से जानबुझकर ऐसा करते हैं।

2. राजनीतिक कारण

उत्पादों की अस्तिकृति के लिए राजनीतिक कारणों का संबंध न होने पर भी कुछ आयातक देशों द्वारा समूही उत्पादों की अस्तिकृति को गाड़ी जिसका कारण राजनीतिक होता है।

3. आंशिक कारण

आयातक देशों द्वारा समूही खाद्य उत्पादों की अस्तिकृति के लिए आंशिक कारण स्वाभाविक सुझाव की कमी, उत्पादों का सुरक्षित प्रवेश की कमी आदि सुरक्षा संबंधी मामले होते। कुछ संसाधन एकज हि ए ए नी गो पी के नाम के आस्पद कार्यान्वयन (कृतिम दस्तावेज, रिपोर्ट तथा रिपोर्टों तथा तीव्रता तथा रख रखता) खाद्यरूपण एजुकेशन को संचालित करने के लिए या आयातक देशों के अनुबंधों को पूर्व के लिए किया जाता है।

4. एवं ए नी पी कार्यक्रम के कार्यान्वयन के लिए आंशिक कारण सुझावों की अपनावता एक और कारण है। इस मामले में संसाधन एकज हि ए ए नी पी पी खाद्य का उपलब्ध कार्यान्वयन किया होगा लेकिन क्षमता के नियंत्रण मान, अनुभव आदि कार्यक्रम वैकल्पिक/वैकल्पिक आदि की वजह से ए नी पी पी खाद्य भी अपनाया हो जाएगा जो उत्पादों के नियंत्रण की अस्थिरता के कारण भी लूट जाएगा।

5. निर्यात उद्देश्य के विषय में दो उपयुक्त समस्याओं की अवस्थितिकृतियाँ इसे ए नी पी पी व्यवस्था का बड़ा अनुप्रयोग करने के संकेत में अवश्य जगाने का दर्शाय व्यवस्थापन निकाय, विवरण संदर्भ तथा अनुसंधान संस्थाओं पर निर्भर है।

भारत में वर्तमान मालिकों में एवं नी पी पी व्यवस्था के कार्यान्वयन की स्थिति

कई संसाधन एकजों (स्थायी खाद्य के लिए छोटे एवं मालिकों उत्पादों का संसाधन करते हैं) के परिचालन में एवं नी पी पी व्यवस्था का कार्यान्वयन किया गया है जिसे भी वर्तमान में संसाधन संरचना निर्माण या मलिक का इस्तेमाल होता नहीं। एवं नी पी पी व्यवस्था में उसे दिखाया गया है कि उसके धारणाओं का पूर्ण: अनुप्रयोग नहीं किया जाता है। इसके कारण नीचे हरे जाते हैं: 1. खाद्य सुरक्षा मामलों का प्रत्यक्ष पर अवस्था के अभाव - खाद्य संरचना/खाद्य विषयवस्तु (उद्देश्य) का अनुसरण इस्तेमाल की वजह से) पर हई बुद्धिमत्ता के व्यवस्था चिन्ह में हई अपरिहार्य के कारण इसकी गणनीतिक के बारे में प्राकृतिक ग्रहण या आम भूमि अनुभव है।

2. एवं नी पी वर्तमान में बुद्धिमत्ता, व्यवस्थापन और व्यवस्थापन की आवश्यकता - खाद्य का निर्माण और निर्माण उपयोग होने पर भी वर्तमान सेक्टर में एवं नी पी पी व्यवस्था का अविश्वसनीय रूप में बतायी नहीं गई है।

3. वर्तमान खाद्य विषयक में कुछ विशेषता या व्यवस्था की आवश्यकता - खाद्य का निर्माण और निर्माण उपयोग होने पर भी वर्तमान सेक्टर में एवं नी पी पी व्यवस्था का अविश्वसनीय रूप में बताया नहीं गई है।

4. लागत आर्थिक - निर्माण संरचना की तुलना में वर्तमान मलिकों/समूही खाद्य उत्पादों की विक्रय का लाभ बढ़ता कम है। इस कारण इस स्तर के उत्पादकों के लिए एवं नी पी पी पी पी व्यवस्था के कार्यान्वयन की लागत एक अतिरिक्त वैलियां बोध हो जाएगा।

वर्तमान खाद्य उत्पादकों के सेक्टर में एवं नी पी पी व्यवस्था के कार्यान्वयन के लिए संरचित विविधता या खाद्य विश्वसन नियमों के द्वारा आवश्यक अवस्था या विवश्वन नियमों का दूर रखने के लिए ऐसा उत्पादकों के खाद्य संरचना/खाद्य विषयवस्तु की घटनाएं आएं भी नहीं जाएंगी।
लघु दुना मुधिनस एभिनिस (Euthynnus affinis) एक दुना जाति है। यह एक तटीय संतरा है जो कि भारत के तटीय क्षेत्रों में मुख्यतः पकड़ी जाती है। इस जाति की पैदावार भारत के दुना के पकड़ का 58% है। (पिल्ले एवं पिल्ले 2000) इस प्रजाति का मांस स्वाद लाल होने के कारण दुसरे दुना को अंग्रेज़ी इसकी कीमत कम होती है। फिर भी हाल के वर्षों में इसके मांस का पिल्लेद (Filet) बनाकर निर्यात होने लगा है।

क्लोम जाल द्वारा पश्चिम उत्तर के समुद्री भाग से पकड़ी गयी यह जाति मालिकी का एक मुख्य भाग होते हुए भी इसके आयु व बढ़त, भूपुष्पा और संभारण पर अभी तक कोई अनुसंधान निवरण प्राप्त नही है।

1995-2000 में इसकी बढ़त और आयु पश्चिम उत्तर के अनुसंधान के आधार पर इस दुना जाति का संभारण पर प्राप्त सुनिश्चित का लंबा मास्टर में देने का प्रवास किया गया है।

मालिकी

दुना मक्खी का उत्क्षेत्र लगभग 1,248 टन (1996) से 3,654 टन (1999) वा। इसकी आयु औसत पकड़ 2,400 टन वी (चित्र-1)। इसमें ए. एफिनिस (E. affinis) का भाग करीब 1,000 टन (1998) से 2,212 टन (2000) तथा औसत 1,563 टन वा। इस जाति का आयु प्राप्त 87% पकड़ कलाम जाल में हुआ था (चित्र-2)। दुसरी जातियों नुसस टांगगोल (Thunnus tonggol), आयक्सिस वाळार्ड (Auxis thazard) और ए. रोकर (A. rocher) वी जो सब एक जीवन 13% क्लोम जाल द्वारा पकड़े गयी थी।

चित्र 1. दुना का औसत उत्पादन (महाराष्ट्र)

चित्र 2. ए. एफिनिस का औसत उत्पादन

आयु व बढ़त, भूपुष्पा और संभारण आकार

आयु व बढ़त, भूपुष्पा और संभारण आकार आयु व बढ़त पर किये गए अध्ययनों द्वारा जाना हुआ कि ए. एफिनिस 81.7 से.मी. की अधिकतम समय कल से बढ़ जाती है।

इसकी बढ़त गुणांक 0.79 है। यह जाति प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय काल के अंत में क्रममें 45.6 से.मी. 65.4 से.मी. तथा 17.4 से.मी. तक बढ़ती है।
इसकी प्राकृतिक मृत्यु रेट (M) 0.928 आकलित की गयी है। इसकी औसत संपूर्ण मृत्यु रेट गुणांक (Z) 1998-2000 काल में 2.24 थी (चित्र-3)। क्वेंटियन विशेष रेट (F/Z) 0.586 पायी गयी है।

चित्र 3. संपूर्ण मृत्यु गुणांक (Z) 1998-2000

VFA द्वारा औसतन मास्टर गुणांक (F) F< 43 से.मी. 1.92 आका गया है। अभी का औसतन पैदावार लगभग 1,722 टन (1998-2000) जब वर्गमान भंडार 1,348 महाराष्ट्र समूह में आकलित किया गया है।

Yield per recruit studies (Yw/R) में जाल होता है कि अभी का इस जाति की मछली पकड़ अधिकतम शीत के नवग्रीष्मक है और महाराष्ट्र में अधिकतम वाहीनी पकड़ (MSY) 1,806 टन आकलित किया गया जब वर्गमान प्रायिक 1,722 टन है।

दुनिया हालांकि एक मछुआर मालिक ने हूं भी विभिन्न प्रकार के बाजार जगा 90-120 मी.मी. के अवराशन में इसका 20-30% या बोधधर्म है। ह. एफिनिस (E. affinis) एक मुख्य जाति है। इसके वर्ष में हो मस्त्र प्रजनन काल है मस्त्र अक्टूबर-नवम्बर और हूंगा अगस्त-मई। इसकी प्रजनन के समय लंबाई कार्यय 44 से.मी. होती है (मुल्लाह, 1986)।

इसकी बढ़ती दर के बारे में वैज्ञानिकों में एक भाग है। इसका बढ़ती गुणांक 0.36 (रेरास व अन्य 1986) और 2.23 (सुरोंगमनी और साक्षात्कार, 1987) आका गया है। हाल हो के वर्ष में फीलोपोनी समूह में इसकी तीन बढ़ती पायी गयी है (वास्की, 1994)। इसके प्रदूषित प्रकार अथा का आकलित किया हुआ बढ़ती गुणांक (K) 0.79 और अधिकतम लंबाई 81.7 से.मी. ठीक होती है।

इस प्रकार ऐसा लगता है कि इसकी बढ़ती बढ़ती लेकर है जलके वर्ष में हो 44.6 से.मी. तक हूंगा जाती है यह जलके इसकी कम से कम प्रजनन लंबाई के बाद हो भी है।

प्राकृतिक मृत्यु गुणांक तथा संपूर्ण मृत्यु गुणांक बढ़त मुख्य बढ़ती गुणांक के ऊपर निर्भर करता है इसी कारण इसके दृश्यों वैज्ञानिकों द्वारा आकलित से मिलता नहीं जा सकता है। फिर हालांकि, इस अध्ययन से यह प्रमाणित होता है कि इस जाति पूर्ण स्वस्थ तथा अमृतार्जी फाॅडी जा रही है और इसकी पैदावार मनस्तर पकड़ने वाले प्रभावित क्षेत्रों से बढ़ने की संभावना नहीं है।
मछलियों में पोषण सुरक्षा

प्रीता विश्वकर, आर. पालूर
केंद्रीय समूद्री मालिकाकी अनुसूचना संस्थान

मछलियों में मत्स्य कृषि के अनुसूचना बहुत सा जल्लाद है। मत्स्य कृषि की उदारता के लिए दो पीढ़ियों की जगहत है। इस्लाम कुपी के लिए इस धारा में सिर्फ नहीं है, आयुष्मान पायलाम और पोषाक सुरक्षा। प्रेकृत आहार कम ग्राम में मिलते हैं जहाँ आमतौर पर मत्स्य कृषि में शुद्ध लाभ होता है। आन्तरिक वातावरण में मिलते हैं वर्तन मत्स्य आहार की पोषाकन्त वेदांतिक श्रेणी में परिवर्तित करता है।

स्वयं मत्स्य कृषि में अधिकांश कुष्टियों आहार का उपयोग किया जाता है और मत्स्य उपलब्ध का 60% खाद्य आहार के लिए होता है। आहार आवश्यकता से स्पष्ट देने से परिकल्पित मिलने हो जाता है। इसलिए मत्स्य कृषि की वृद्धि के लिए उस तरह का पोषाक सुरक्षा चाहिए जो असंरक्षित चीजों से बचनी हो और नाना में मिलते हैं। आहार स्तर के प्रकार के अनुसार मत्स्य की तीन श्रेणियों में विभाजन कर सकते हैं। 

(1) जो सिर्फ सस्तान होते हैं।
(2) जो मोटाहार होते हों और (3) जो अपने जीवन में सत्य और नाना पारंपरिक संयुक्त करते हों।

कांग मछली, हारिया आदि सस्तान होते हैं, कांग, केकड़ा, केकडा, खिंच आदि मोटाहार होते हैं और रोटी, मोटा, बीना आदि दोनों पारंपरिक होते हैं।

प्रकार वर्ग द्वारा मत्स्य के प्रकार और उसके आहार, पत्ता और वृद्धि के अनुसार के आहार पर संकेत आहार का उपयोग करना चाहिए। निम्न गुण वाले आहार आगरया, हड़ताल सरकार के स्वयं पशुपालन उपयोग करते हैं जिससे पानी में प्रभाव बढ़ाना आता कम होता है। इस अवस्था से मत्स्यों में रोग आने की समाप्ति होती है। निम्न गुणवाले मत्स्य पालन के उपयोग से आहार प्राप्त, तत्समान हो और केन्द्र के उत्तरी भाग में को गयी मत्स्य कृषि में भारी नक्सल हुआ है।

मत्स्य कृषि में उपयोग किये जाने वाले आहार तीन रूप के होते हैं। आदि आकृति जैसे मोटे या बेलनाकार में बनाये गए आहार, आदि रूप और द्वार रूप में भी मत्स्यहार आया है। दूसर आकृति के आहार में 7 से 13% जलान हो जाता है। इसके उपयोग, संग्रहण, जितना सब असानी से किया जा सकता है। मत्स्य की वृद्धि के विविध तरंग में विविध नाम-नाम के दौरान आकृति के आहार बनाये जा सकते हैं।

इस तरह के आहार में आदि पौषाक जैसे जैसे आध्यात्मिक भी समावेश करके तैयार कर सकते हैं।

दूसर रूप के आहार में 45 से 70% जलान दर है। इस प्रकार के आहार कम ग्राम में मिलले दो दो दो मछलियों कसाईजाने का उत्कृष्ट पदार्थ भी देखा जाता है। इस तरह के आहार का संग्रहण बहुत मुश्किल है।

25 से 45% जलान के आदि रूप का आहार भी बाहर में उपलब्ध है। इस प्रकार के आहार मछलियों को प्राप्त है। लेकिन इनके संग्रहण के लिए शैलीकरण की आवश्यकता है जिससे खाद्य बढ़ते हैं। आदि और द्वार रूप के आहार से पानी जल्द ही मिलन हो जाता है।

मत्स्यपालन के उपयोग के लिए विविध पोषक वस्तु के उपयोग किया जाता है। मत्स्य व्यवसाय से मिलने वाले मछली, बीना, केकडा, सींपी के मोटे, केकडा और बीना के हिस्से का उत्पादक बुकनी बनाकर मत्स्ययात्रा के उपयोग में उपयोग करते हैं। 50 से 60% प्रोटीन के दौरान आकृति के आहार के उपयोग में ये पदार्थ लहर उपयोगी है।

ज्यादा पालन केंद्र से उपलब्ध चांच, पै, और आदि जैसे प्राप्त भाग में 45 से 60% प्रोटीन, बहुत ज्यादा फलियाम,
पूणाता

माहेश्वर अंगलो अपने बनाए पूणाता की भिंतियाँ का अतिम सान श्रृंभ चार रहे थे। कहीं कुछ खो गया है, कही खो गई है। कही फैलिया मात्र की भी उनके समझ में नहीं आ रहे थे। अशांत उन्होंने अपने शिशुओं को बुलाया औरपरोक्ष दर्शनों की कैसा है संग्रह मास्टर पीस?' पहला शिशु बोला, 'बाहे बहुत सुन्दर है।' इससे ने कहा, 'मदता है आपके बाहे बुझ रहे हैं' और तीसरे ने फटाफट बोला, 'अंदे क्यों पूरा मुख मनमोहक है।' सुंदरी ने माहेश्वर अंगलो ने उठ लिया अपना हयोद्धा, लोहा मुख एक ही मार में। दिन-रात पूणाता के तरफ में सेवा उसी विश्वासपूर्वक शिशु के नौ सो उस रात शांत।